

विकसित भारत समाचार

वर्ष : 09 | अंक : 309 | गुवाहाटी | गुरुवार, 8 जून, 2023 | मूल्य : 10 रुपए | पृष्ठ : 12 | VIKSIT BHARAT SAMACHAR | Regd. RNI No. ASSHIN/2014/

रंगिया व हाजो में तटबंध व भू-कटाव पर चल रहे कार्यों का मंत्री हजरिका ...

पेज 3

केंद्रीय मंत्री तोमर की सुपुत्री की शादी में शामिल हुए मुख्यमंत्री शिवराज

पेज 4

फील्ड विजिट करें अपर मुख्य सचिव, प्रमुख सचिव : मुख्यमंत्री

पेज 5

हजारों किसानों की जमीनें नीलाम, यह बदहाली कांग्रेस को ले डूबेगी : राठौड़

पेज 8

पूर्वाञ्चल केशरी
(असमीसी दैनिक)
PURVANCHAL KESARI
(ASSAMESE DAILY)
GOOD LUCK PUBLICATIONS
House No. 30, D. Neog Path,
ABC, Guwahati - 781005
Mob: 94360 14771, 97070 14771

S.S. Traders
Suppliers in : All kinds of Door
Fittings Modular Kitchen
& Accessories, etc.
D. Neog Path,
Near Dona Planet
ABC, G.S. Road,
Guwahati - 05
97079-99344

सुप्रभात
जैसे एक सूखा पेड़ आग लगने पे
पूरे जंगल को जला देता है, उसी
प्रकार एक दुष्ट पुत्र पूरे परिवार
को खत्म कर देता है।
- आचार्य चाणक्य

न्यूज गैलरी
मुआवजे के लिए
जीवित पति की
मौत का नाटक

कटक। कटक जिले की एक महिला ने ओडिशा ट्रेन त्रासदी के पीड़ितों के लिए घोषित मुआवजे पर दावा करने के लिए फर्जी दस्तावेज पेश कर अपने जीवित पति को मृत बताने की कोशिश की। मामला नव सामने आया जब महिला के पति विजय दत्त ने खुद इस संबंध में मणिबांधा थाने में लिखित शिकायत दर्ज कराई। महिला को पहचान कटक जिले के बडबा थाना क्षेत्र के मणिबांधा इलाके की रहने वाली गीतांजलि दत्ता के रूप में हुई है। उसने दावा किया था कि उसके पति विजय दत्ता की ट्रेन -शेष पृष्ठ दो पर

पीएम मोदी को
ममता का मीठा आम

कोलकाता। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी अपने तीनों तेवरों के लिए जानी जाती हैं और अक्सर केंद्र सरकार के खिलाफ किसी न किसी बात को लेकर वे निशाना साधने से नहीं चुकती। भले ही ममता बनर्जी के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ राजनीतिक संबंध ज्यादा अच्छे न हों, लेकिन इन सबके बावजूद वे हर साल पीएम मोदी को अच्छी किस्म के मीठे आम भेजना नहीं भूलतीं। 12 साल से चली आ रही पुरानी -शेष पृष्ठ दो पर

शिंगरा में मालगाड़ी के 11 डिब्बे पटरी से उतरे, कई ट्रेनें रद्द



कामरूप (हि.स.)। असम के कामरूप (ग्रामीण) जिलांतगत बोको के शिंगरा में बुधवार को एक मालगाड़ी दुर्घटनाग्रस्त हो गई। इसके 11 डिब्बे पटरी से उतरकर पलट गए, जिसके चलते इस रूट पर ट्रेनों का परिचालन बाधित हो गया। मालगाड़ी कोयला लेकर जा रही थी। बताया जा रहा है कि मालगाड़ी में 60 डिब्बे थे। इस बीच रेलवे अधिकारी मौके पर पहुंच गए हैं और मामले की जांच में जुट गए हैं। फिलहाल समाचार लिखे जाने तक हादसे में किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है। पूर्वोत्तर सीमा रेल (पूसीरे) के पीआरओ के अनुसार रेलवे के अभियंता ट्रेक को खाली कराकर यातायात बहाल करने में

जुटे हुए हैं। उन्होंने बताया कि गुरुवार तक इस ट्रेक पर ट्रेन सेवा बाधित रहेगी। उल्लेखनीय है कि जिस इलाके में यह हादसा हुआ है, वहां पर डबल ट्रेक है, लेकिन मालगाड़ी के डिब्बे दोनों ट्रेक पर पलट गए हैं। इसके कारण यातायात पूरी तरह से बाधित हो गया है। उधर कामाख्या- ग्वालपारा टाउन सेक्शन के शिंगरा स्टेशन पर लोडेड मालगाड़ी के बेपटरी होने के बाद कई ट्रेनों को पूर्णता या आंशिक रद्द किया गया है। साथ ही कई ट्रेनों के मार्ग में भी परिवर्तन किया गया है। पूसीरे के सीपीआरओ सव्यसाची डे ने बुधवार को बताया है कि हादसे के बाद जिन ट्रेनों को रद्द किया गया है, उनमें मुख्य रूप -शेष पृष्ठ दो पर

अमित शाह के आवास के बाहर कुकी समुदाय का प्रदर्शन

नई दिल्ली। मणिपुर में हिंसा की घटनाओं से नाराज कुकी समुदाय के लोगों ने दिल्ली में प्रदर्शन किया। कुकी समुदाय के लोग बुधवार सुबह केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के घर के बाहर जुटे और प्रदर्शन किया। पुलिस ने इसकी जानकारी दी है। एक प्रदर्शनकारी ने कहा कि गृह मंत्री अमित शाह ने आवासन दिया था कि राज्य में शांति बहाल होगी, लेकिन फिर भी हमारे समुदाय पर हमले जारी हैं। हमारे समुदाय के लोगों का जीवन दाय पर लगा है। गृह मंत्री अमित शाह और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ही हमारी मदद कर सकते हैं। पुलिस ने बताया कि प्रदर्शनकारियों के हाथों में तख्तियां भी थीं। इन पर लिखा था कि कुकी की जान बचाओ... इस दौरान प्रदर्शनकारी नारे भी लगा रहे थे। पुलिस ने कहा कि चार प्रदर्शनकारियों को बैठक के लिए गृह मंत्री के आवास में प्रवेश करने



की अनुमति दी गई। बाकी प्रदर्शनकारियों को जंतर-मंतर ले जाया गया। वहीं कुकी समुदाय की महिलाओं का कहना है कि शांति वार्ता के बावजूद वहां पर एक बच्चे और -शेष पृष्ठ दो पर

अगले 48 घंटों में आ सकता है मानसून

गुवाहाटी/नई दिल्ली। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने अगले 48 घंटों के दौरान मानसून के आने की भविष्यवाणी की है, क्योंकि असम सहित पूर्वोत्तर राज्यों में भीषण गर्मी के बीच राहत की सांस लेने की संभावना है। मौसम पूर्वानुमान की एक लंबी श्रृंखला जारी करते हुए, आईएमडी ने बुधवार को कहा कि म्यांमार तट से दूर पूर्वी मध्य बंगाल की खाड़ी के ऊपर औसत समुद्र तल से 5.8 किमी ऊपर एक चक्रवाती परिसंचरण बना हुआ है। दक्षिण छत्तीसगढ़ और उसके आस-पास के इलाकों में चक्रवाती हवाओं का क्षेत्र कम विस्तृत हो गया है। मध्य-शोमंडलीय पट्टी में द्रोणिका औसत समुद्र तल से -शेष पृष्ठ दो पर

एचएसएलसी अनुत्तीर्ण छात्रों के लिए पुनः प्रवेश अनिवार्य

गुवाहाटी। असम के शिक्षा मंत्री राजेश पेगू ने बुधवार को कहा कि एचएसएलसी परीक्षा में पास नहीं होने वाले छात्रों को नियमित कक्षाओं के लिए 10वीं कक्षा में फिर से प्रवेश लेना होगा। पेगू ने एक टवीट में लिखा कि जो छात्र एचएसएलसी परीक्षा, 2023 में पास नहीं हुए, उन्हें नियमित कक्षाओं के लिए दसवीं कक्षा में फिर से प्रवेश लेने की आवश्यकता है। इसके बाद ही उन्हें आगामी परीक्षा में शामिल होने की अनुमति दी जाएगी। कृपया सेवा द्वारा निम्नलिखित अधिसूचना को पढ़ें। मंत्री ने आगे कहा कि छात्रों को उन्हीं स्कूलों में प्रवेश लेने की अनुमति है -शेष पृष्ठ दो पर



हिमंत की भोपाल में शिवराज से मुलाकात



मुद्दों पर चर्चा हुई। असम के मुख्यमंत्री शर्मा बुधवार को सुबह मुख्यमंत्री के आवास पहुंचे, जहां मुख्यमंत्री चौहान ने उनका गुलदस्ता सौंपकर स्वागत किया। दोनों नेताओं में कई मुद्दों पर चर्चा हुई। इस मुलाकात को राज्य की सियासत के लिहाज से काफी महत्वपूर्ण माना जा रहा है। इस मुलाकात पर मुख्यमंत्री चौहान ने टवीट कर कहा है कि असम -शेष पृष्ठ दो पर

कांग्रेस की 11 पार्टियों की बैठक का भाजपा पर प्रभाव नहीं : पीयूष



कांग्रेस की 11 पार्टियों की बैठक का भाजपा पर प्रभाव नहीं : पीयूष

राममंदिर में प्राणप्रतिष्ठा दिसंबर-जनवरी में : चंपत राय

बलिया (हि.स.)। अयोध्या में बन रहा राममंदिर देश के सम्मान का प्रतीक है। राममंदिर का उद्घाटन कौन करेगा, यह अभी तय नहीं हुआ है। इस भव्य मंदिर में मूर्तियों की प्राणप्रतिष्ठा आगामी दिसंबर-जनवरी में शुरुआत के अनुसार होगी। ये बातें श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महासचिव एवं विश्व हिंदू परिषद (विहिप) के केंद्रीय उपाध्यक्ष चंपत राय ने बुधवार को कही। वे यहां विहिप के काशी एवं गोरक्ष प्रांत के 10 दिवसीय -शेष पृष्ठ दो पर

सवाल को राज्य के मंत्री पीयूष हजरिका ने कहा कि इसका भाजपा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। दरअसल, पीयूष हजरिका बुधवार को कामरूप जिले के रंगिया में एक कार्यक्रम में शामिल होने के बाद पत्रकारों से वार्ता कर रहे थे। मंत्री हजरिका ने एक सवाल के जवाब में कहा कि बैठक करने वाली 11 पार्टियों में से चार को छोड़कर अन्य पार्टियों का कभी नाम तक नहीं सुना है। कांग्रेस पार्टी अस्तित्व विहिप पार्टियों के साथ गठबंधन करती है तो उससे भाजपा को कोई नुकसान नहीं होगा। चुनाव में किसी प्रकार का कोई प्रभाव भाजपा पर नहीं पड़ेगा वाला है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के अकेले चुनाव लड़ने पर जो चुनौतियां सामने आएंगी, वही स्थिति अन्य दलों के साथ मिलकर चुनाव लड़ने पर भी रहेगी। पिछली बार महागठबंधन बनाकर भी कांग्रेस ने कोई असर नहीं डाल पाई थी।

तमिलनाडु में एक मंदिर को प्रशासन ने किया सील

चेन्नई। आजादी के 75 साल बाद भी जाति प्रथा गंभीर विषय बना हुआ है। आज भी ऊंची जाति के लोग निचली जातियों को मंदिरों में प्रवेश करने से रोकते हैं। ऐसा ही मामला तमिलनाडु से सामने आया है। तमिलनाडु के विलुपुरम जिला के मेलपाथी गांव में धर्मराज द्रौपदी अम्मन मंदिर में प्रवेश को लेकर ऊंची जाति और दलितों के बीच विवाद सामने आया है। इस विवाद को सामने के बाद विलुपुरम जिला राजस्व आयुक्त -शेष पृष्ठ दो पर

पुरुलिया में राजधानी एक्सप्रेस ड्राइवर की सूझ-बूझ से बची



कोलकाता। ओडिशा के बालेश्वर में हुए भीषण ट्रेन हादसे को अभी एक हफ्ता भी नहीं बीता है। बंगाल के पुरुलिया जिले में संतालडीह स्टेशन के पास दिल्ली-भुवनेश्वर राजधानी एक्सप्रेस हादसे का शिकार होने से बाल-बाल बच गई। ट्रेन एक मानव-रेलवे क्रॉसिंग पर पटरियों पर फंसे डीजल से लदे एक ट्रेक्टर को छूती हुई निकल गई। यह घटना मंगलवार देर शाम की है। अधिकारियों के अनुसार, राजधानी एक्सप्रेस

के ड्राइवर ने सूझ-बूझ का परिचय देते हुए ट्रेक्टर को दूर से ही देखकर तुरंत ट्रेन को स्पीड कम कर दी, जिसकी वजह से बड़ा हादसा टल गया। हालांकि, बावजूद इसके इंजन के पीछे दो डिब्बे ट्रेक्टर को छूते हुए निकल गए और ट्रेन बाल- बाल बच गई। इसके बाद ट्रेन करीब 45 मिनट लेट हो गई। दक्षिण पूर्व रेलवे के आद्रा मंडल के डीआरएम मनीष कुमार ने बताया कि इस घटना में नुकसान -शेष पृष्ठ दो पर

जाजपुर रेलवे स्टेशन पर छह मजदूरों की मालगाड़ी से कटकर मौत

भुवनेश्वर। ओडिशा से एक और रेलवे से जुड़े हादसे की खबर सामने आ रही है। यहां पर जाजपुर रेलवे स्टेशन के पास बुधवार को एक मालगाड़ी की चपेट में आने से 6 मजदूरों की मौत हो गई है। इस हादसे में 1 मजदूर घायल हो गया है। बताया जा रहा है कि यह मजदूर मालगाड़ी के नीचे आराम कर रहे थे इसी दौरान यह हादसा हुआ। ओडिशा के बालासोर में हुई ट्रिपल ट्रेन दुर्घटना के 5 दिन बाद यह हादसा हुआ है। स्थानीय मीडिया की रिपोर्ट्स के मुताबिक यह -शेष पृष्ठ दो पर

बीयर के डिब्बों से भरी वैन पलटी



बोतलें लूटने की होड़

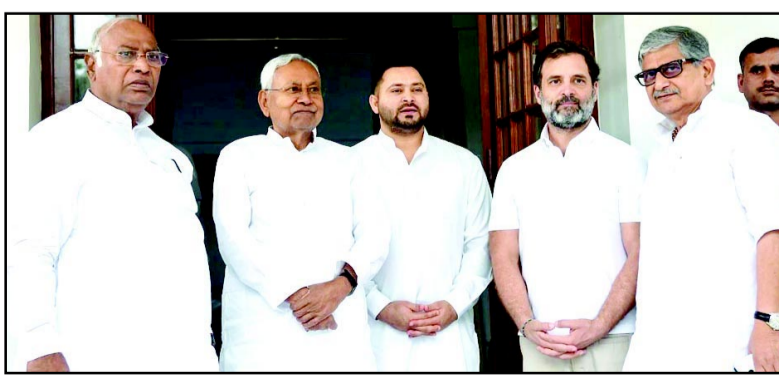
विशाखापत्तनम। आंध्र प्रदेश के अनाकापल्ली में एक सड़क पर मंगलवार को अराजकता देखी गई, जब 200 कार्टन बीयर ले जा रहा एक वाहन पलट गया और लोग बीयर की बोतलें लेने के लिए घटनास्थल पर पहुंच गए। ट्रिपल पर पोस्ट किए गए एक वीडियो में लोग बीयर की बोतलें उठाते नजर आ रहे हैं। चालक के वैन से नियंत्रण खो देने के बाद वाहन पलट गया। जैसे ही स्थानीय लोगों ने सड़क पर बीयर की बोतलें पड़ी देखीं तो वे उसे उठाने के लिए दौड़ पड़े।

नए संसद भवन में अखंड भारत के नक्शे पर बांग्लादेश को आपत्ति



नई दिल्ली। नेपाल और पाकिस्तान के बाद अब बांग्लादेश के राजनीतिक नेतृत्व ने भी नई संसद भवन में अखंड भारत के एक भित्ति चित्र पर आपत्ति जताई है। विदेश राज्य मंत्री शहरशर आलम ने बांग्लादेशी उच्चायोग से इस मामले पर स्पष्टीकरण मांगने के लिए कहा है। हालांकि, भारत ने पिछले सप्ताह स्पष्ट किया था कि यह कलाकृति अशोक साम्राज्य के प्रसार को दिखाती है। बांग्लादेशी मीडिया की खबरों के मुताबिक, सोमवार को ढाका में मीडिया के साथ बातचीत के दौरान आलम ने कहा कि भित्ति चित्र का राजनीति से कोई लेना-देना नहीं है और इसके बारे में भ्रमित होने की कोई वजह नहीं है। आलम ने कहा कि नई दिल्ली -शेष पृष्ठ दो पर

विपक्षी दलों की बैठक पटना में 23 को, राहुल-खड़गे भी होंगे शामिल



पटना। विपक्षी दलों की बैठक को लेकर अब सहमति बन गई है। जदयू की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक 23 जून को पटना में विपक्षी दलों की बैठक होगी। इस बैठक को लेकर लगभग सभी दलों ने अपनी सहमति दे दी है। इसके बाद ही जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष ललन सिंह की ओर से इसकी घोषणा की गई है। ललन सिंह ने बताया कि 23 जून को पटना में होने वाली बैठक में कांग्रेस से राहुल गांधी और राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे भी इस बैठक को लेकर अपना समर्थन दे दिया है और वह दोनों इसमें शामिल होंगे। -शेष पृष्ठ दो पर

अपने एटम बम बेचेगा पाकिस्तान



इस्लामाबाद। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री कटोरा लिए कई देशों में भीख मांगते हुए दिखे, लेकिन इन सब का उन्हें कोई खास फायदा हुआ नहीं। ऐसे में अब पाकिस्तान कंगाली को दूर करने के लिए एटमी प्लान पर अमल कर सकता है। दरअसल पाकिस्तान की आर्थिक हालत को सुधारने और कटोरा पॉलिसी से निजात पाने के लिए आईएसआई के करीबी और राजनीति विश्लेषक हामिज ने सरकार को एक फॉर्मूला दिया है। उन्होंने शहबाज शरीफ सरकार को सुझाव दिया है कि पाकिस्तान को तुर्की और सऊदी अरब को परमाणु बम बेच देने चाहिए। सऊदी अरब को पांच परमाणु बम बेचने पर एक घंटे में 25 अरब डॉलर मिल जाएंगे। तुर्की पांच परमाणु बम के बदले पाकिस्तान को 20 अरब डॉलर दे देगा। भारत को गजवा ए हिंद के नाम -शेष पृष्ठ दो पर

केन्द्रीय मंत्री तोमर की सुपुत्री की शादी में शामिल हुए मुख्यमंत्री शिवराज

- राजनाथ सिंह समेत कई केन्द्रीय मंत्री, अन्य राज्यों के मुख्यमंत्री भी हुए शादी में शामिल

ग्वालियर, (हि.स.)। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान मंगलवार शाम को को संक्षिप्त प्रवास पर ग्वालियर आए। वे यहाँ मेला ग्राउंड में केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर की सुपुत्री निवेदिता तोमर के विवाह समारोह में शामिल हुए। उन्होंने वर-वधु को आशीर्वाद देते हुए उनके सुखद दाम्पत्य जीवन को कामना की। विवाह समारोह में भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, केन्द्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी, केन्द्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया, केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मांडवीय, केन्द्रीय मंत्री पीयूष गोयल, केन्द्रीय वन मंत्री भूपेन्द्र सिंह भी शामिल हुए और उन्होंने वर-वधु को पुष्प-गुच्छ भेंट कर आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री पुष्कर धामी, हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर खट्टर ने भी वर-वधु को आशीर्वाद देते हुए उनके सुखद दाम्पत्य जीवन की कामना की। प्रदेश के भाजपा अध्यक्ष वीडी शर्मा, गृह मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्र, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री प्रभुपाम चौधरी, वित्त मंत्री जगदीश देवड़ा, जल संसाधन मंत्री तुलसीराम सिलावट, कृषि मंत्री कप्तन पटेल, ऊर्जा मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर, उद्योगिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) भारत सिंह कुशवाहा, राजस्व एवं परिवहन मंत्री गोविंद सिंह राजपुत्र, खनिज संसाधन, श्रम मंत्री बृजेन्द्र प्रताप सिंह,



लोक निर्माण राज्य मंत्री सुरेश धाकड़, राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया, मध्यप्रदेश के पूर्व मंत्री जयभान सिंह पवैया, पूर्व मंत्री भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव कैलाश विजयवर्गीय, पूर्व राज्य मंत्री सांसद प्रभात झा, क्षेत्रीय सांसद विवेक नारायण शेजवलकर सहित अन्य मंत्रिगण विवाह समारोह में शामिल हुए एवं वर-वधु को आशीर्वाद दिया। इसके साथ ही केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार के अन्य मंत्रिगण एवं देश के गणमान्य नागरिकों ने भी केन्द्रीय मंत्री नरेन्द्र

सिंह तोमर की सुपुत्री के विवाह समारोह में शामिल होकर उन्हें आशीर्वाद प्रदान किया। विमानतल पर किया आत्मीय स्वागत - केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर की सुपुत्री के विवाह समारोह में शामिल होने के लिए रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह मंगलवार देर शाम अल्प प्रवास पर ग्वालियर आए। वायुसेना के विमानतल पर मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने उनका आत्मीय स्वागत किया। विमानतल पर मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान

के साथ प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीडी शर्मा, गृह मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्र, जल संसाधन मंत्री तुलसीराम सिलावट, वित्त मंत्री जगदीश देवड़ा, स्वास्थ्य मंत्री प्रभुपाम चौधरी, भाजपा के ग्रामीण जिला अध्यक्ष कौशल शर्मा सहित जनप्रतिनिधियों ने पुष्प-गुच्छ भेंट कर आत्मीय स्वागत किया। इस अवसर पर ग्वालियर संभाग के आयुक्त दीपक सिंह, आईजी डी श्रीनिवास वर्मा, कलेक्टर अश्वयुक्त कुमार सिंह, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक राजेश सिंह चंदेल सहित वायुसेना के अधिकारी उपस्थित थे।

दो हजार रुपये के नोट मामले में सुप्रीम कोर्ट में फिर जल्द सुनवाई की मांग

अजय कुमार

- बिना किसी पहचान पत्र के नोट बदलने का गलत फायदा उठा रहे हैं माओवादी और आतंकवादी नई दिल्ली। दो हजार रुपये के नोट बिना किसी पहचान पत्र के बदलने के रिजर्व बैंक के आदेश के खिलाफ दायर याचिका पर आज सुप्रीम कोर्ट में फिर जल्द सुनवाई की मांग की गई। याचिकाकर्ता की ओर से कहा गया कि रिजर्व बैंक के नोटिफिकेशन में दी गई इस रियायत का माओवादी और आतंकवादी गलत फायदा उठा रहे हैं। 80 हजार करोड़ रुपये के नोट बदले जा चुके हैं। तब सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि हम रजिस्ट्री से रिपोर्ट तलब कर रहे हैं कि क्या ये याचिका जल्द सुनवाई के लिए लिस्ट होने लायक है। उसके आधार पर हम जल्द सुनवाई के बारे में फैसला लेंगे। आप 9 जून को फिर से कोर्ट के सामने मामला रख सकते हैं। दिल्ली हाई कोर्ट ने 29 मई को याचिका खारिज कर दी थी, जिसके बाद सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया गया है। हाई कोर्ट में सुनवाई के दौरान रिजर्व बैंक की ओर से पेश वकील पराम त्रिपाठी ने कहा था कि ये याचिका सुनवाई



योग्य नहीं है और इस याचिका को जमानत के साथ खारिज किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा था कि ये नोटबंदी नहीं है। उन्होंने सुप्रीम कोर्ट के फैसले का हवाला देते हुए कहा था कि कोर्ट को आर्थिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। यह याचिका भाजपा नेता और वकील अश्विनी उपाध्याय ने दायर करके मांग की है कि दो हजार रुपये के नोट बदलने वाले का नाम और पहचान पत्र लिखे बिना ये नोट जमा नहीं किए जाने चाहिए ताकि काला धन रखने वालों की पहचान हो सके। याचिका में कहा गया है कि रिजर्व बैंक का नोटिफिकेशन संविधान की धारा 14 का उल्लंघन है। याचिका में कहा गया था कि दो हजार रुपये के नोट को

बिना किसी मांग पत्रों और पहचान प्रमाण के जमा करने की अनुमति देना मनमाना, तर्कहीन और भारत के संविधान की धारा 14 का उल्लंघन है। याचिका में कहा गया है कि रिजर्व बैंक खाते की बजाय संबंधित बैंक खातों में ही जमा किए जाएं, ताकि काला धन और आय से अधिक संपत्ति रखने वाले लोगों की पहचान की जा सके। याचिका में भ्रष्टाचार, बेनामी लेनदेन को खत्म करने और नागरिकों के मौलिक अधिकारों की रक्षा के लिए केंद्र को काले धन और आय से अधिक संपत्ति धारकों के खिलाफ उचित कदम उठाने का निर्देश देने की भी मांग की गई है।

रेल हादसे से अभी पीड़ित उबरे नहीं, मुआवजे के चैक लेने के लिए बुलाना सीएम का अमानवीय दृष्टिकोण : शुभेंदु अधिकारी

शुभेंदु अधिकारी ने मुआवजा बांटने के समय पर उठाए सवाल

कोलकाता (ईएमएस)। पश्चिम बंगाल विधानसभा में विपक्ष के नेता शुभेंदु अधिकारी ने मंगलवार को मुख्यमंत्री ममता बनर्जी द्वारा राज्य के उन लोगों के परिवार के सदस्यों को मुआवजे के चैक के वितरण के समय पर सवाल उठाया, जो ओडिशा के बालासोर में शुक्रवार शाम को हुई भीषण ट्रेन दुर्घटना में मारे गए। मुख्यमंत्री बुधवार को कोलकाता के नेताजी इंडोर स्टेडियम में मुआवजे के चैक बांटने वाली हैं। मंगलवार को मीडिया से बात करते हुए अधिकारी ने कहा कि दुर्घटना के बमुश्किल 5 दिन बाद मुआवजे के चैक लेने के लिए पीड़ितों के परिवार के सदस्यों को बुलाना मुख्यमंत्री का अमानवीय दृष्टिकोण है। अधिकारी ने कहा कि परिवार के अधिकतर सदस्य अभी भी आघात से उबर नहीं पाए हैं, लेकिन मुख्यमंत्री सुखियों में आने के लिए



एक भव्य कार्यक्रम के माध्यम से मुआवजा वितरण की व्यवस्था कर रही हैं। यह शर्मनाक है कि पीड़ितों के परिजनों को मुआवजा का चैक स्वीकार करने के लिए कोलकाता आने के लिए कहा गया है, जहां मुख्यमंत्री भाषण देंगी। वहीं पश्चिम बंगाल भाजपा अध्यक्ष सुकांत मजूमदार ने अपने ट्विटर हैंडल पर एक कथित वीडियो साझा किया है, जिसमें पीड़ितों के परिवार के कुछ सदस्य 2 हजार रुपये के नोटों में मुआवजे की पेशकश करते दिख रहे हैं। उन्होंने ट्वीट किया कि मुख्यमंत्री के निर्देश के बाद पश्चिम बंगाल कैबिनेट के एक सदस्य ने 2 लाख रुपये का मुआवजा वितरित किया है। मैं इस कदम का दिल से स्वागत करता हूँ, लेकिन 2 हजार रुपये के नोटों के खोत पर सवाल बना हुआ है।

जिसमें पीड़ितों के परिवार के कुछ सदस्य 2 हजार रुपये के नोटों में मुआवजे की पेशकश करते दिख रहे हैं। उन्होंने ट्वीट किया कि मुख्यमंत्री के निर्देश के बाद पश्चिम बंगाल कैबिनेट के एक सदस्य ने 2 लाख रुपये का मुआवजा वितरित किया है। मैं इस कदम का दिल से स्वागत करता हूँ, लेकिन 2 हजार रुपये के नोटों के खोत पर सवाल बना हुआ है।

स्कूल उद्घाटन के दौरान सिसोदिया को याद करके भावुक हुए मुख्यमंत्री

अजय त्वाणी

नई दिल्ली। बाहरी उत्तरी जिले के बवाना विधानसभा के दरियापुर कला इलाके में बुधवार को डॉक्टर बी.आर. अंबेडकर स्कूल ऑफ स्पेशलाइज्ड एक्सीलेंस का मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने उद्घाटन किया। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री सहित शिक्षा मंत्री आतिशी एवं कई अन्य अधिकारी और नेता मौजूद रहे। इस बीच मुख्यमंत्री केजरीवाल पूर्व उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया को याद कर भावुक हो गए। उन्होंने कहा कि सिसोदिया का सपना था कि हर बच्चे को अच्छी से अच्छी शिक्षा मिले। लेकिन कुछ लोग कहते हैं कि दिल्ली की शिक्षा क्रांति खत्म हो जाए। हम ऐसा नहीं होने देंगे। केजरीवाल ने आगे कहा कि हमने यहां एक स्कूल बनाने का वादा किया था और अब बवाना विधानसभा को दो स्कूल मिल रहे हैं। स्कूल ऑफ एक्सीलेंस के साथ दूसरे स्कूल का भी काम चल



रहा है। जल्द पूरा हो जाएगा। केजरीवाल ने कहा कि बाहर कई आरोपित घूम रहे हैं जिन पर कोई रिपोर्ट नहीं कसा जाता। पूर्व मंत्री मनीष सिसोदिया पर झूठे आरोप लगाकर उन्हें जेल में डाला दिया गया है। दिल्ली की जनता सब जानती है। उन्होंने कहा कि जल्द बवाना के बच्चों को एक और स्कूल का उपहार मिलेगा। उल्लेखनीय है कि दिल्ली

आबकारी घोटाला मामले में मनीष सिसोदिया तिहाड़ जेल में बंद हैं। हाल ही में वे हाईकोर्ट की इजाजत के बाद अपनी पत्नी से मिलने मथुरा रोड स्थित अपने आवास पर भी गए थे। हालांकि उनकी पत्नी की हालत ज्यादा बिगड़ने पर उन्हें अस्पताल में भर्ती किया गया था, जिसके चलते मनीष सिसोदिया को बिना उनसे मिले ही तिहाड़ जेल लौटना पड़ा था।

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव से की मुलाकात

लखनऊ, (हि.स.)। आम आदमी पार्टी (आप) के संयोजक एवं दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल बुधवार को दोपहर समाजवादी पार्टी (सपा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव से मिलने लखनऊ पहुंचे। एयरपोर्ट पर उतरने के बाद अरविंद केजरीवाल का काफिला सपा मुख्यालय के लिए निकला। एयरपोर्ट पर सपा नेताओं के एक प्रतिनिधि मंडल के साथ ही आप पार्टी नेताओं ने दिल्ली के मुख्यमंत्री का स्वागत किया। उनके साथ पंजाब मुख्यमंत्री भगवंत मान, सांसद संजय सिंह भी मौजूद हैं। अरविंद केजरीवाल का काफिला एयरपोर्ट से कड़ी सुरक्षा के बीच सपा मुख्यालय पहुंचा। यहां पर सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने



उनका पुष्प गुच्छ देकर भेंट किया। उल्लेखनीय है कि अरविंद केजरीवाल और अखिलेश यादव की मुलाकात के सियासी मायने अहम माने जा रहे हैं। दोनों ही नेता आने वाले लोकसभा चुनाव को लेकर चुनावी चर्चा करेंगे और भारतीय जनता पार्टी के विजयी रथ को देश में रोकने की रणनीति पर आगे कैसे बढ़ें, इस पर फैसला करेंगे।

पंजाब में 35वां जच्चा-बच्चा देखमाल केंद्र लोगों को समर्पित



चंडीगढ़, (हि.स.)। लोगों को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सुविधाएं देने के उद्देश्य से पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने आज खरड़ में 35वां जच्चा-बच्चा देखभाल केंद्र लोगों को समर्पित किया। यहां 8.59 करोड़ रुपये की लागत वाला अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस 50 बिस्तरों की क्षमता वाला जच्चा-बच्चा देखभाल केंद्र लोगों को समर्पित करने के बाद अपने संबोधन में मुख्यमंत्री ने कहा कि यह केंद्र गर्भवती महिलाओं और नवजात बच्चों की बेहतर दवा के साथ देखभाल करने के लिए जरूरी सहूलियतें मुहैया करावगा। मुख्यमंत्री ने बताया कि एक साल के अंदर 45 स्वास्थ्य केंद्रों में से 35 स्वास्थ्य केंद्र समर्पित किये जा चुके हैं और अगले दिनों में ऐसे और अस्पताल स्थापित किये जाएंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि रोजगार के सला में आने के पहले दिन से स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार और बिजली के क्षेत्र को प्रमुख तौर पर प्राथमिकता दी है। भगवंत मान ने कहा कि स्वास्थ्य क्षेत्र में अब तक 584 आम आदमी क्लीनिक खोले जा चुके हैं, जहाँ से अब 31.19 लाख लोग इलाज कराव रहे हैं। उन्होंने जल्द ही 75 से 100 क्लीनिक और खोलने का एलान किया, जिससे लोगों को घर के नजदीक ही स्वास्थ्य सहूलियतें दी जा सकें। मुख्यमंत्री ने कहा कि लोगों को मुफ्त धरलू बिजली देने की भी गारंटी दी थी और हमारे विरोधी दोष लगाते थे कि यह गारंटी कभी पूरी नहीं हो सकती। उन्होंने कहा कि इस समय पर 88 प्रतिशत घरों का बिजली बिल जौरी आ रहा है। शिक्षा के क्षेत्र की बात करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकारी स्कूलों का स्तर उठाने के

नतीजे सामने आने लगे हैं और इस बार पांचवीं, आठवीं, दसवीं क्लास के नतीजों में से सरकारी स्कूलों के बच्चों ने बाजी मारी है और उन्होंने खुद इन बच्चों को 51-51 हजार रुपये का नकद इनाम देकर होसला बढ़ाया। उन्होंने कहा कि सरकारी स्कूलों में बच्चों की संख्या भी बढ़ रही है, क्योंकि लोगों को सरकारी संस्थाओं पर अब विश्वास होने लगा है। मुख्यमंत्री ने आगे बताया कि 15 अगस्त तक राज्य में 15 हस्तस्कूल ऑफ एग्जिनेंस स्थापित किये जाएंगे। उन्होंने कहा कि यह स्कूल उच्च दर्जे की सहूलियतों से लैस होंगे। भगवंत मान ने कहा कि इन स्कूलों में विद्यार्थियों को इंजीनियरिंग, लॉ, कामर्स, यू. पी. एस. सी. और एन. डी. ए. सहित पेशेवर और प्रतियोगी परीक्षाओं पर जोर दिया जायेगा। रोजगार का जिक्र करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि मार्च, 2022 से लेकर अब तक नौजवानों को 29237 सरकारी नौकरियों दी जा चुकी हैं और यह नौकरियाँ केवल मेरिट के आधार पर दी गई हैं। उन्होंने कहा कि समूची भर्ती प्रक्रिया के दौरान टोस कार्य-विधि अपनाई गई, जिस कारण 29000 से अधिक नौकरियों में से एक भी नौकरी को अदालत की चुनौती का सामना नहीं करना पड़ा। राज्य में अलग-अलग सरकारी संस्थाओं का बेड़ा गर्क करने के लिए पिछली सरकारों पर तीखा निशाना साधते हुए भगवंत मान ने आज कहा कि इन सरकारों ने अपने निजी हितों की खातिर स्वास्थ्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में सरकारी संस्थाओं को बुरी तरह अनदेखा करके लोगों को प्राइवेट संस्थाओं के रहमो-करम पर छोड़ दिया था।

दिल्ली शराब घोटाला: वाईएसआर कांग्रेस सांसद के बेटे को 15 दिन की अंतरिम जमानत

राकेश शर्मा

नई दिल्ली। दिल्ली हाई कोर्ट ने दिल्ली आबकारी घोटाला मामले के आरोपित और वाईएसआर कांग्रेस के सांसद मंगुटा एस रेड्डी के बेटे राघव मंगुटा रेड्डी को 15 दिनों की अंतरिम जमानत दी है। जस्टिस चंद्रधारी सिंह की अवकाशकालीन बेंच ने राघव मंगुटा को अपनी बीमार दादी को देखने के लिए अंतरिम जमानत देने का आदेश दिया। ईंडी ने राघव मंगुटा की अंतरिम जमानत अजी का विरोध करते हुए कहा था कि आजकल लोग बायस्कम में गिर जा रहे हैं और फिर उसके आधार पर अंतरिम जमानत की अर्जी लाया जा रही है। पिछले एक हफ्ते में तीन ऐसे मामले आए हैं। ईंडी ने कहा मंगुटा कि दादी अस्पताल के आईसीयू में भर्ती हैं, उनसे कोई मुलाकात नहीं कर सकता है। परिवार



के दूसरे सदस्य भी उनकी देखभाल के लिए मौजूद हैं। हालांकि ईंडी ने ये जल्द कहा कि पुलिस हिरासत में मंगुटा को दो तीन-दिन के लिए दादी से मिलने की इजाजत दी जा सकती है। दरअसल, राघव मंगुटा ने अपनी दादी की सेहत का हवाला देकर अंतरिम जमानत की मांग करते हुए कहा था कि उसकी दादी अस्पताल

में भर्ती हैं, जिनकी देखभाल के लिए अंतरिम जमानत की मांग की थी। ईंडी ने राघव मंगुटा को 11 फरवरी को गिरफ्तार किया था। ईंडी ने मंगुटा एग्री फार्म प्राइवेट लिमिटेड के बारे में जानकारी देते हुए बताया था कि राघव मंगुटा रेड्डी ही मंगुटा एग्री फार्म प्राइवेट लिमिटेड को चलाते थे और उससे जुड़े सभी फैसले भी लेते थे।

सूरजमुखी की न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीदी की मांग पर किसानों ने लगाया जाम

-पुलिस के लाठीचार्ज में कई किसान घायल

कुरुक्षेत्र (ईएमएस)। हरियाणा के कुरुक्षेत्र में किसानों ने मंगलवार को दिल्ली-चंडीगढ़-अमृतसर हाइवे जाम कर दिया था। किसान सूरजमुखी की न्यूनतम समर्थन मूल्य की मांग पर अड़े हुए हैं। काफी देर तक कुरुक्षेत्र में जमकर हंगामा होता रहा है, जब किसान हाइवे से नहीं हटते तो किसानों पर बल प्रयोग किया गया। हरियाणा पुलिस ने किसानों पर लाठीचार्ज और वाटर कैन का इस्तेमाल भी किया। लाठीचार्ज में कई किसान घायल हुए हैं। वहीं पुलिस ने किसानों के खिलाफ केस भी दर्ज किया है। कुरुक्षेत्र में लाठीचार्ज के बाद किसानों ने जगह-जगह जाम लगाए। हरियाणा के दूसरे जिलों में भी किसान सड़कों पर उतर आए और पुलिस की बर्बरतापूर्ण कार्रवाई का विरोध किया। वहीं पुलिस ने गुप्तान चट्टनी को हिरासत में ले लिया गया है। कुरुक्षेत्र में किसानों पर हुए लाठीचार्ज का झञ्जर में भी असर देखने को मिला। लाठीचार्ज के विरोध में झञ्जर जिले के बेरी कस्बे में किसानों ने जाम लगा दिया। किसान देर शाम बेरी-झञ्जर रोड पर आकर बैठ गए और सरकारी



और पुलिस के विरोध में खूब नारेबाजी की। जाम लगाने की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और किसानों को समझाने-बुझाने में जुट गई, मगर किसानों ने पुलिस की एक नहीं सुनी। किसानों का साफ तौर पर कहना है कि अपनी हकों की आवाज उठाने के लिए किसान कुरुक्षेत्र में धरना-प्रदर्शन करने के लिए आए थे, लेकिन पुलिस ने उन पर लाठी चार्ज कर दिये, जिससे प्रदेशभर के किसानों में रोष है। हालांकि बेरी कस्बे में किसान करीब 2 घंटे तक सड़क पर बैठे रहे और पुलिस की काफी मशकत के बाद किसानों ने सड़क पर लगाया जाम खोल दिया। हालांकि, किसानों ने पुलिस और प्रशासन को एक बार फिर से डीघल गांव में रोहतक-झञ्जर रोड़ पर जाम लगाने की चेतावनी दी है। उल्लेखनीय है कि

चंडीगढ़ में किसानों की सूरजमुखी को एमएसपी पर खरीदने को लेकर और भावतार योजना में न बचने को लेकर किसानों के समझाने-बुझाने में जुट गई, मगर किसानों ने पुलिस की एक नहीं सुनी। किसानों का साफ तौर पर कहना है कि अपनी हकों की आवाज उठाने के लिए किसान कुरुक्षेत्र में धरना-प्रदर्शन करने के लिए आए थे, लेकिन पुलिस ने उन पर लाठी चार्ज कर दिये, जिससे प्रदेशभर के किसानों में रोष है। हालांकि बेरी कस्बे में किसान करीब 2 घंटे तक सड़क पर बैठे रहे और पुलिस की काफी मशकत के बाद किसानों ने सड़क पर लगाया जाम खोल दिया। हालांकि, किसानों ने पुलिस और प्रशासन को एक बार फिर से डीघल गांव में रोहतक-झञ्जर रोड़ पर जाम लगाने की चेतावनी दी है। उल्लेखनीय है कि

खरीफ फसलों की एमएसपी बढ़ाने को मंजूरी

नई दिल्ली, (हि.स.)। केन्द्र सरकार ने उत्पादकों को उनकी उपज के लिए लाभकारी मूल्य सुनिश्चित करने और फसल विविधीकरण को प्रोत्साहित करने के लिए विपणन सीजन 2023-24 के लिए खरीफ फसलों के एमएसपी में वृद्धि की है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति (सीसीईच) ने विपणन सीजन 2023-24 के लिए सभी अनिवार्य खरीफ फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) में वृद्धि को मंजूरी दे दी। सामान्य धान की कीमत 240 से बढ़ाकर 2183 रुपये, उच्च गुणवत्ता वाले धान की कीमत 2060 से 2203 रुपये, ज्वार हाइब्रिड 2970 से 3180, ज्वार-मालदंडी 2990 से 3225, बाजरा 2350 से 2500, रागी 3578 से 3846, मक्का 1962 से बढ़ाकर



2090, तूर या अरहर 6600 से 7000, मूंग 7755 से 8558, उड़द 6000 से 6950, मूंगफली 5850 से 6377, सूरजमुखी के बीज 6400 से बढ़ाकर 6760, सोयाबीन 4300 से बढ़ाकर 4600, तिल 7830 से 8635, नाइजरसीड 7287 से 7734, कपास (मध्यम स्टेपल) 6080 से 6620, कपास (लंबा स्टेपल) 6380 से 7020 की गई है। मंत्रिमंडल के फैसलों की जानकारी देते हुए केन्द्रीय मंत्री पीयूष

गोयल ने कहा कि हाल के वर्षों में सरकार फसलों के लिए उच्च एमएसपी की पेशकश करके दालों, तिलहनों और पोषक व श्रीअन्न जैसे अनाजों के अलावा अन्य फसलों की खेती को बढ़ावा दे रही है। इसके अतिरिक्त, सरकार ने किसानों को अपनी फसलों में विविधता लाने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए राष्ट्रीय कृषि विकास योजना (आर-केवीआई), राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन (एनएफएसएम) जैसी विभिन्न योजनाएं और पहल भी शुरू की हैं। उन्होंने बताया कि 2022-23 के तीसरे अग्रिम अनुमान के अनुसार, देश में कुल खाद्यान्न उत्पादन रिकॉर्ड 330.5 मिलियन टन होने का अनुमान है जो पिछले वर्ष 2021-22 की तुलना में 14.9 मिलियन टन अधिक है। यह पिछले 5 साल में सबसे ज्यादा बढ़ोतरी है।

दिल्ली की शिक्षा मंत्री आतिशी को ब्रिटेन यात्रा की मंजूरी, केंद्र ने हाई कोर्ट को बताया

आशीष वर्मा

नई दिल्ली। दिल्ली की शिक्षा मंत्री आतिशी मालेना को ब्रिटेन यात्रा के लिए केंद्र सरकार ने मंजूरी दे दी है। केंद्र सरकार के वकील ने आज दिल्ली हाई कोर्ट को इसकी जानकारी दी। उन्होंने कहा कि वह चाहें तो डिप्लोमेटिक चीजा के लिए तत्काल आवेदन कर सकती हैं। इसमें कोई बाधा या रुकावट नहीं है। आतिशी ने याचिका दायर कर अपनी ब्रिटेन यात्रा की अनुमति देने में देरी करने का आरोप लगाया था। आतिशी को कैब्रिज यूनिवर्सिटी में एक सम्मेलन को संबोधित करने के लिए 15 जून को आमंत्रित किया गया है। आतिशी ने याचिका में कहा था कि 15 जून को कैब्रिज यूनिवर्सिटी में इंडिया एट 1000-युवर्स बिकमिंश ए ग्लोबल लीडर विषय पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करने के लिए दिल्ली के शिक्षा मंत्री के रूप में बुलाया गया है।



याचिका में कहा गया था कि आतिशी ने ब्रिटेन जाने के लिए केंद्र से अनुमति मांगी थी, लेकिन केंद्र उन्हें अनुमति देने में देरी कर रहा है। याचिका में कहा गया था कि आतिशी को कैब्रिज यूनिवर्सिटी ने उनकी आधिकारिक हैरियत से आमंत्रित किया है। उस कार्यक्रम के बाद आतिशी ने ब्रिटेन के कई प्राथमिक स्कूलों का भ्रमण

करने की योजना बनाई है। इस दौरान वे टीचर ट्रेनिंग के कई पार्टर्स से मुलाकात करेंगी ताकि दिल्ली की शिक्षा व्यवस्था को और बेहतर किया जा सके। उल्लेखनीय है कि किसी भी रूप के मंत्री को आधिकारिक रूप से विदेश यात्रा पर जाना या नहीं जाना, केंद्र सरकार की अनुमति पर निर्भर करता है।

सिद्धार्थ विहार में चला जीडीए का पीला पंजा, कई अवैध निर्माण ध्वस्त

गाजियाबाद, (हि.स.)। गाजियाबाद विकास प्राधिकरण जीडीए का बुलडोजर बुधवार को सिद्धार्थ विहार में चला और वहां पर अवैध रूप से किए गए निर्माण को ध्वस्त किया गया। इस दौरान कई दुकानें व फ्लैट तोड़ते हुए उन्हें अनुपयोगी किया गया। जीडीए जोन 4 प्रवर्तन दल प्रभारी गुंजा सिंह के नेतृत्व में जीडीए की टीम पहले सिद्धार्थ विहार पहुंची और वहां पर सुनील यादव द्वारा बनाए गए पांच मंजिला भवन और चार टुकान तोड़ दी गईं। इसके बाद यह टीम सिद्धार्थ विहार में ही बंधा के पास पहुंची और वहां पर अरुण भाटी द्वारा किए गए अवैध निर्माण को ध्वस्त किया गया। अरुण भाटी ने यहां पर अवैध रूप से फ्लैट बना रखा था। इसके अलावा जी ब्लॉक सेक्टर 11 में बनाए जा रहे व्यवसाय के निर्माण को तोड़ दिया गया। इस दौरान गुंजन



सिंह लोगों से अपील की है कि अवैध निर्माण ना करें। हर हालत में उसे जीडीए द्वारा तोड़ दिया जाएगा। साथ ही उन्होंने लोगों को सलाह दी कि वे गाजियाबाद में संपत्ति खरीदने से पहले उसकी अच्छी तरह से जांच पड़ताल

पर्यटन विकास की योजनाओं को समय से पूरा कराया जाय : जयवीर सिंह

लखनऊ, (हि.स.)। उत्तर प्रदेश में पर्यटन गतिविधियों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से विभिन्न जनपदों में मुख्यमंत्री पर्यटन संवर्द्धन योजना के तहत 750.32 लाख रुपए की लागत से 35 पर्यटन विकास से सम्बंधित योजनाएं संचालित की जा रही हैं। पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने इन परियोजनाओं से सम्बंधित कार्यदायी संस्थाओं को निर्माण कार्य में समयबद्धता एवं पारदर्शिता सुनिश्चित करने के निर्देश दिये गये हैं। जयवीर सिंह ने बताया कि मुख्यमंत्री पर्यटन संवर्द्धन योजना के तहत गोरखपुर के विधान सभा क्षेत्र सहजनवा के ग्राम सहजपुर, पिपरीती स्थित रामजानकी स्थल का पर्यटन विकास 48.16 लाख रुपए की लागत से कराया जा रहा है। इसी प्रकार विल्लुपार में समय माता (भीटी) स्थान का पर्यटन विकास 47.98 लाख रुपए की लागत से कराया जा रहा है। पर्यटन मंत्री ने बताया कि जनपद गोरखपुर के विधान सभा क्षेत्र गोरखपुर ग्रामीण



के जंगला सिकटी में स्थित बान पोखर दुर्गा स्थल का पर्यटन विकास 48.02 लाख रुपए की लागत से कराया जा रहा है। इसी प्रकार कुशीनगर के विधान सभा क्षेत्र बहुराई के पथलहवा शिव स्थल का पर्यटन विकास 47.16 लाख रुपए विधान सभा क्षेत्र रामकोला के कुलकुला धाम स्थल का पर्यटन विकास 48.56 लाख रुपए की लागत से कराया जा रहा है। इसी प्रकार विल्लुपार में समय माता (भीटी) स्थान का पर्यटन विकास 47.98 लाख रुपए की लागत से कराया जा रहा है। पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने बताया कि कुशीनगर के विधान सभा क्षेत्र फाजिलनगर के तुर्कपट्टी में सूर्य स्थल का पर्यटन विकास 48.52 लाख रुपए विधान सभा क्षेत्र रुद्रपुर

स्थित परम सुन्दरी दुर्गा मंदिर का पर्यटन विकास 49.37 लाख रुपए की लागत से तथा विधान सभा क्षेत्र रामपुर कारखाना के लाहिलपर मंदिर स्थल का पर्यटन विकास 49.47 लाख रुपए तथा भाटपुर रानी ग्राम सरयाम में स्थित सपाती माता मंदिर का पर्यटन विकास 47 लाख रुपए के व्यय से कराया जा रहा है। जयवीर सिंह ने बताया कि जनपद देवरिया के विधान सभा क्षेत्र पथरदेवा के बघौच घाट स्थल का पर्यटन विकास 47.54 लाख, बलिया के विधान सभा क्षेत्र बेलातरा रोड स्थित खैराकुटी आश्रम स्थल का पर्यटन विकास 40.08 लाख रुपए की लागत से कराया जा रहा है। इसी प्रकार बलिया जनपद की तीन, चंदौली की दो, इटावा औरैया की दो कन्नौज की तीन, आगरा, झंसी, जालौन की तीन, गण्डा की तीन, बदायूं, बिजनौर की दो, मैरपुरी तथा अलीगढ़ की विभिन्न पर्यटन विकास योजनाओं का पर्यटन विकास का कार्य कराया जा रहा है।

नौ वर्ष तक के बच्चों को शैक्षणिक स्तर पर मजबूत करेगी नई शिक्षा नीति : डीसी

- फाऊंडेशनल लिटरेसी एंड न्यूमैरीसी थीम के तहत कार्यशाला आयोजित



विभिन्न प्रयास किए जा रहे हैं। इसी में एक है निपुण भारत मिशन (नेशनल इनीशिएटिव फॉर प्रोफिशन्स इन रीडिंग विद अंडरस्टैंडिंग एंड न्यूमैरीसी) जिसके तहत कक्षा 3 अथवा 9 वर्ष की आयु तक के बच्चों के लिए एक ऐसे वातावरण का निर्माण किया जाना है जिसमें बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान को पर्याप्त रूप से सशक्त किया जा सके। मौके पर उपायुक्त ने निपुण भारत मिशन के तहत जिला स्तरीय कार्यशाला के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए शिक्षा विभाग के अधिकारियों एवं शिक्षकों को कार्यशाला के दौरान बताई जाने वाली बातों को ध्यान पूर्वक सुनने एवं किसी भी प्रकार की दुविधा को

कार्यशाला में ही दूर करते हुए जमीनी स्तर पर बच्चों के विकास की दिशा में कार्य करने की अपील की। कार्यशाला में लगाए गए विभिन्न स्टालों का निरीक्षण करने के क्रम में उपायुक्त ने निपुण भारत मिशन को रामगढ़ जिले में सफल बनाने के मद्देनजर किए जा रहे कार्यों का जायजा लिया। शिक्षकों एवं बच्चों द्वारा स्टाल पर लगाए गए प्रदर्शनों की सराहना भी की। निपुण भारत मिशन के तहत आगे कार्य कर रामगढ़ जिले में कक्षा 3 तक के बच्चों अथवा 9 वर्ष तक के बच्चों की बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान को पर्याप्त रूप से सशक्त करने में अपना योगदान देने के लिए शुभकामनाएं दी।

बाढ़-सुखाड़ सहित अन्य समस्या को लेकर सभी प्रखंडों में हुई बैठक

बेगूसराय, (हि.स.)। जिले के सभी प्रखंडों में बुधवार को प्रखंड के वरीय प्रभारी की अध्यक्षता में बाढ़, सुखाड़ और अग्नि से संबंधित समस्याओं के निष्पादन के लिए पदाधिकारियों और जनप्रतिनिधियों की बैठक आयोजित की गई। इसी कड़ी में बरौनी प्रखंड मुख्यालय के सभाघर में डीएम रोशन कुशवाहा की अध्यक्षता में बैठक हुई। जिसमें जनप्रतिनिधियों द्वारा राशन कार्ड, आवास, स्वरोजगार, मिनी आंगनवाड़ी की व्यवस्था, प्राथमिक विद्यालय, हवाई अड्डा निर्माण, पेंशन में सुधार, गांधी गोल्डन निर्माण, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में डॉक्टर की अनुपस्थिति, हाई स्कूल निर्माण, बिजली, स्वच्छ, बथोली में पुल, नल-जल, मरनेगा, पिपरा देवस पंचायत में 11 हजार एवं 33 हजार के तार से जानमाल क्षति, पंचायत सरकार भवन निर्माण आदि समस्याओं को उठाया गया। जनप्रतिनिधियों ने कहा कि जनता के लंबे इंतजार के बाद भी राशनकार्ड



नहीं बन रहा है, ना ही राशनकार्ड में नाम काटा गया। पूर्व उपायुक्त ने प्रश्न उठाया कि उलाव में हवाई अड्डा का निर्माण किया जाय, जिससे बेगूसराय की जनता को इसका लाभ मिल सके। प्राथमिक विद्यालय के निर्माण के लिए पदाधिकारियों को दिया गया कि अमरपुर एवं हवासपुर में प्राथमिक विद्यालय का निर्माण किया जाय, जिसमें वहां के बच्चों को समुचित शिक्षा का लाभ मिल सके। बैठक में डीएम ने सभी समस्याओं के निराकरण के लिए सभी

जनप्रतिनिधियों से विचार-विमर्श किया गया। डीएम ने जनप्रतिनिधि द्वारा उठाए गए मुद्दे को प्राथमिकता के आधार पर निष्पादित करने का निर्देश संबंधित पदाधिकारियों को दिया। बैठक में वरीय प्रभारी, जिला परिवहन पदाधिकारी, अनुमंडल पदाधिकारी, प्रभारी पदाधिकारी (गोपनीय शाखा), प्रखंड विकास पदाधिकारी, अंचल अधिकारी एवं प्रखंड प्रमुख सहित सभी अधिकारी और जनप्रतिनिधि उपस्थित थे।

फील्ड विजिट करें अपर मुख्य सचिव, प्रमुख सचिव : मुख्यमंत्री

- फील्ड विजिट कर योजनाओं के प्रगति की समीक्षा करें और रिपोर्ट तैयार कर सीएम कार्यालय को दें - मिशन मोड में हो जनसुनवाई, जनसमस्याओं का निस्तारण शीर्ष प्राथमिकता : मुख्यमंत्री

लखनऊ, (हि.स.)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बुधवार को शासन स्तर के सभी अपर मुख्य सचिवों, प्रमुख सचिवों के साथ जनशिकायतों के निस्तारण को लेकर विभागीय कार्यप्रणाली की समीक्षा की और निर्देश दिए कि जन शिकायतों के निस्तारण में किसी भी प्रकार की शिथिलता, लापरवाही व देरी स्वीकार नहीं की जाएगी। मुख्यमंत्री ने शासन के अधिकारियों को दो माह में जिलों के दौरे पर जाने के निर्देश दिए हैं। दौरे पर जाने वाले अधिकारी रिपोर्ट तैयार कर मुख्यमंत्री कार्यालय को सौंपेंगे। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि राश सरकार के सभी लोक कल्याणकारी प्रयासों के मूल में आम आदमी की संतुष्टि और प्रशंसा की उन्नति है। शासन-प्रशासन से जुड़े सभी अधिकारियों, कर्मचारियों को इसे समझना चाहिए। आम जन की शिकायतों, उनकी समस्याओं के सहज समाधान के लिए जनसुनवाई सभाघान प्रणाली अत्यंत उपयोगी माध्यम है। शासन में तैनात वरिष्ठ अधिकारी हों या फील्ड के अधिकारी, हर किसी की यह जिम्मेदारी है कि आईजीआरएस पर आने वाली शिकायतों का

प्राथमिकता के साथ निस्तारण किया जाए। इसमें किसी प्रकार की शिथिलता, लापरवाही व देरी स्वीकार नहीं की जाएगी। उन्होंने कहा कि सभी अपर मुख्य सचिव, प्रमुख सचिव फील्ड में जाएं। अगले दो माह के भीतर सभी मंडलों का भ्रमण करें। फील्ड विजिट के दौरान अपने विभाग की लोककल्याणकारी योजनाओं की समीक्षा करें। लंबित शिकायतों का तत्काल मेरिट के आधार पर निस्तारण कराएं। जहां गड़बड़ी हो, वहां जवाबदेही तय करें। विजिट के बाद अपनी रिपोर्ट मुख्यमंत्री कार्यालय को उपलब्ध कराएं। मुख्यमंत्री ने कहा कि आईजीआरएस के अलावा थाना, तहसील व विकास खंड में पहुंचने वाले शिकायतकर्ता की की सुनवाई की जाए। पीड़ित व्यक्ति की मनोस्थिति को समझें, उसकी भावना का सम्मान करें और पूरी संवेदशीलता के साथ समाधान किया जाए। शिकायतकर्ता की संतुष्टि और उसका फीडबैक ही अधिकारियों के प्रदर्शन का मानक होगा। शासन से लेकर विकास खंड तक के अधिकारी मिशन मोड में जनसुनवाई को शीर्ष प्राथमिकता देकर आमजन की समस्याओं का समाधान



करें। शासन से उन पर नजर रखी जा रही है। थाना दिवस और तहसील दिवस को और प्रभावी बनाया जाना चाहिए। यह सुनिश्चित करें कि शिकायतों का निस्तारण अगले थाना, तहसील दिवस से पूर्व जरूर हो जाए। जनसुनवाई की इन तिथियों और उसमें उपस्थित रहने वाले अधिकारी के नाम का व्यापक प्रचार-प्रसार करें। यहां आने वाले मामले काई लंबित न रहें। आईजीआरएस, सीएम हेल्प लाइन को लेकर कुछ संवेदनशील विभागों ने अच्छे कार्य किया है। ऐसे विभागों, जिलाधिकारियों, पुलिस कप्तानों, थानों और तहसीलों से औरों को प्रेरणा लेनी चाहिए। संतोषजनक प्रदर्शन करने वाले जिलों, थानों और तहसीलों अपनी कार्यप्रणाली में सुधार करें। जनता से सीधा जुड़ाव रखने वाले विभाग के फील्ड में तैनात अधिकारी हर दिन न्यूनतम एक घंटा जनसुनवाई

करें। विभिन्न कार्यों में तैनात आउटसोर्सिंग कार्मिकों ने उत्कृष्ट कार्य किया है। यह सुनिश्चित किया जाए कि सभी कार्मिकों का मानदेय समय पर मिले, पूरा मिले। किसी भी दशा में एक भी कर्मचारी का आर्थिक अथवा मानसिक शोषण नहीं होना चाहिए। बजट का हो समुचित और समयबद्ध उपयोग : मुख्यमंत्री - मुख्यमंत्री ने कहा कि अधिकारी वित्तीय बजट में विभागों को आवंटित धनराशि का सही और समयबद्ध उपयोग सुनिश्चित करें। हर अपर मुख्य सचिव, प्रमुख सचिव अपने विभागीय योजनाओं की समीक्षा करते हुए समय से धनराशि आवंटन कराएं। विभाग के लिए प्राविधानित बजट का अधिकाधिक उपयोग किया जाना चाहिए। भारत सरकार से मिलने वाले अनुदान, अंशदान के संबंध में अपर मुख्य सचिव, प्रमुख सचिव स्वयं भी भारत सरकार के मंत्रालयों से संपर्क करें। वर्तमान वित्तीय बजट की समाप्ति से पूर्व सभी विभागों द्वारा वर्तमान बजट में प्राविधानित धनराशि का यथोचित खर्च किया जाना सुनिश्चित किया जाए। विभाग स्तर भी पर खर्च की समीक्षा भी जाए।

सचिवालय में फाइलों के लिए ई-ऑफिस की व्यवस्था है। इसे समस्त विभागाध्यक्ष/निदेशक कार्यालयों में भी लागू किया जाए। फिजिकल फाइलों का उपयोग अपरिहार्य स्थिति में ही किया जाना चाहिए। ई-ऑफिस को प्रभावी बनाने की आवश्यकता है। नीतिक के अनुरूप हो स्थानांतरण - उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने अपनी नवीन स्थानांतरण नीति घोषित कर दी है। इस नीति का कड़ाई से अनुपालन किया जाए। सभी अपर मुख्य सचिव, प्रमुख सचिव अपने विभागीय मंत्री से संवाद करते हुए नीतिक के अनुरूप स्थानांतरण करें। यह ध्यान रखें कि आकांक्षालक जनपदों में मैनापौर कम न हो। सीमावर्ती क्षेत्रों का हो विकास - मुख्यमंत्री ने कहा कि अंतरराज्यीय अंतरराष्ट्रीय सीमावर्ती क्षेत्र हमारे ब्रांड एम्बेस्डर हैं। यहां अच्छे स्कूल-कॉलेज, स्तरीय चिकित्सा संस्थान विकसित किये जा चाहिए। सीमावर्ती क्षेत्रों में औद्योगीकरण को लेकर भी हमें और बेहतर प्रयास करने होंगे। प्रदेश के दूर-दराज के गांवों तक टेलीकन्सल्टेशन सेवा का विस्तार किया जाए।

जिला योजना समिति सदस्य के लिए नामांकन 17 को

- पंचायत व नगरीय निकाय से 10 से खरीद सकेंगे फार्म

मीरजापुर, (हि.स.)। जिला योजना समिति के सदस्यों के निर्वाचन के लिए नामांकन 17 जून को जिला मिजिस्ट्रेट के न्यायालय कक्ष में होगा। जिला मिजिस्ट्रेट दिव्या मिश्रा की ओर से जारी अधिसूचना के अनुसार नामांकन पत्रों की जांच 17 जून को ही होगी। उम्मीदवार 21 जून को तीन बजे तक नाम वापस ले सकते हैं। मतदान 25 जून को सुबह आठ बजे से दोपहर तीन बजे तक होगा। इसके बाद मतगणना 25 जून को ही दोपहर तीन बजे से कार्य समाप्ति तक होगा। सहायक निर्वाचन अधिकारी शिव प्रताप शुक्ला ने बताया कि नामांकन फार्म 10 जून से 17 जून तक सुबह 11 बजे से दोपहर चार बजे तक जिला निर्वाचन कार्यालय पंचायत व नगरीय निकाय से निर्धारित शुल्क देकर अद्युक्त प्राप्त कर सकते हैं। जनपद में अनारक्षित महिला एक, अनुसूचित जाति एक और अन्य पिछड़ा वर्ग एक पद के लिए चुनाव होगा है। जिला योजना समिति



नियमावली के अनुसार मतदान गुप्त मत से होगा। सदस्यों के मतपत्र अनारक्षित वर्ग के उम्मीदवारों के लिए निर्धारित प्रपत्र 9, अनारक्षित वर्ग महिला उम्मीदवारों के लिए प्रपत्र 9 (1), अनुसूचित जाति के उम्मीदवारों के लिए प्रपत्र 9क, अनुसूचित जाति महिला उम्मीदवारों के लिए प्रपत्र 9क (1), अन्य पिछड़ा वर्ग के उम्मीदवारों के लिए 9 ख, तथा अन्य पिछड़ा वर्ग महिला के उम्मीदवारों के लिए 9ख (1) के अनुसार रिक्त होंगे। मतगणना के बाद रटिनिंग आफिसर परिणाम की घोषणा करेंगे। जिला योजना समिति के तीन सदस्यों के लिए चारों निकायों के 100 सदस्य (सभासद) मतदान करेंगे।

हमारी सरकार में एक भी नहीं हुआ दंगा, आज दंगाई देश से बाहर या तो जेल में : ब्रजेश पाठक

फतेहपुर, (हि.स.)। सपा शासनकाल में 2017 के पूर्व तक उत्तर प्रदेश दंगा प्रदेश के रूप में जाना जाता था। 2017 से अब तक हमारी सरकार में प्रदेश में एक भी दंगा नहीं हुआ है। जो दंगाई थे वे आज देश छोड़कर बाहर चले गये हैं या फिर जेल के अंदर भेज दिये गये हैं। उक्त बातें जिले में बुधवार को पटेल प्रेक्षागृह में आयोजित मोर्चा सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में भाग लेने आये प्रदेश सरकार के उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कही। उन्होंने सपा पर प्रहार करते हुए कहा कि सपा के समय बिजली की जो हालत थी वह किसी से छिपी नहीं है। 2017 के पूर्व सपा के शासनकाल में लोगों को एक हफ्ते दिन व एक हफ्ते रात में बिजली मिलती थी। लोग जनेटटर से अपना काम चलाते थे और बच्चे मिट्टी के तेल से पढ़ने के लिए मजबूर थे।



आज प्रदेश के सभी 75 जिलों में बराबर बिजली उपलब्ध हो रही है। उन्होंने प्रधानमंत्री के स्वच्छता मिशन की प्रशंसा करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री ने हर घर में शौचालय बनाकर स्वच्छता का संदेश देने का जो कार्य किया। वह बहू, बेटियों व महिलाओं की इज्जत, सम्मान व

मर्यादा बढ़ाने का काम किया है। सपा के समय बूढ़ेलखंड में पानी की किल्लत यह थी कि पीने के लिए पानी की प्रशंसा जाता था। आज जल दीनस मिशन के तहत हर गांव व हर घर तक नल व टॉटी लग चुकी है और उससे पानी पहुंचाने का काम प्रधानमंत्री ने किया है।

राज्यपाल से मिले आजसू के केंद्रीय महासचिव लंबोदर, सौंपा ज्ञान

रांची, (हि.स.)। आजसू पार्टी के केंद्रीय महासचिव सह गोमिया विधायक डॉ. लंबोदर महतो ने बुधवार को राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन से मिलकर अपने विधानसभा क्षेत्र के ज्वलंत विषयों और सपा हित से जुड़े गंभीर मुद्दों पर चर्चा की। साथ ही उनसे इन सभी समस्याओं के समाधान की दिशा में शीघ्र पहल करने का आग्रह किया। राज्यपाल को मांगों का प्रस्ताव एक ज्ञान भी सौंपा। उन्होंने राजभवन जाकर राज्यपाल से गोमिया में बनकर तैयार डिग्री महाविद्यालय का उद्घाटन करने और शैक्षणिक सत्र चालू सत्र से प्रारंभ करने का आग्रह किया। इसके साथ उन्होंने राज्य के सभी अंगीभूत महाविद्यालयों, जिन्हें इंटर कला, विज्ञान व वाणिज्य संकाय में नामांकन लेने पर रोक लगाई के आदेश को निरस्त करने का आग्रह किया। उन्होंने गोमिया प्रखंड के अति नक्सल प्रभावित क्षेत्र चतरो चट्टी थाना अंतर्गत गड़डी से हुरलुंग वाया चारो चट्टी पथ का निर्माण एवं रजपपा से कनेक्ट कराने का आग्रह किया। उन्होंने राज्यपाल को इस बात से अवगत कराया कि गोमिया प्रखंड के गोमिया एवं गुरुडीह पत्तीहारी पंचायत के सभी गांव को कोनार नदी



से नए सिरे से डैम वेल्ड, डब्ल्यूटीपी एवं पाइपलाइन बिछाते हुए नई ग्रामीण जलापूर्ति योजना स्वीकृति का प्रस्ताव एक अप्रैल 22 को डीएमएफटी बोकारो जिला के शासी निकाय द्वारा अनुमोदित किया गया है। इस योजना की प्रशासनिक स्वीकृति अतिशीघ्र डीएमएफटी मद या जल जीवन मिशन योजना के तहत कराने का आग्रह किया। उन्होंने गोमिया प्रखंड के अति नक्सल प्रभावित क्षेत्र चतरो चट्टी थाना अंतर्गत गड़डी से हुरलुंग वाया चारो चट्टी पथ का निर्माण एवं रजपपा से कनेक्ट कराने का आग्रह किया। उन्होंने राज्यपाल को इस बात से अवगत कराया कि गोमिया प्रखंड के गोमिया एवं गुरुडीह पत्तीहारी पंचायत के सभी गांव को कोनार नदी

हुरलुंग उल्कमित मध्य विद्यालय में तब्दील करने हेतु आग्रह किया। उन्होंने राज्यपाल को राज्य के खूटी, सिडेगा, गुमला, लोहरतगा, पश्चिम सिंहभूम, दुमका एवं लोहाहर जिला में जिला स्तरीय नौकरी में पिछड़ा वर्ग एवं अल्पत पिछड़ा वर्ग और आरक्षण को शून्य कर दिया गया है, की जानकारी देते हुए उनसे राज्य सरकार के इस आदेश को निरस्त करते हुए उन जिलों में पिछड़ा वर्ग और अल्पत पिछड़ा वर्ग के आरक्षण को सुनिश्चित करने और 23 नवंबर, 2004 को अनुमोदित किया गया है। इस योजना की प्रशासनिक स्वीकृति अतिशीघ्र डीएमएफटी मद या जल जीवन मिशन योजना के तहत कराने का आग्रह किया। उन्होंने गोमिया प्रखंड के अति नक्सल प्रभावित क्षेत्र चतरो चट्टी थाना अंतर्गत गड़डी से हुरलुंग वाया चारो चट्टी पथ का निर्माण एवं रजपपा से कनेक्ट कराने का आग्रह किया। उन्होंने राज्यपाल को इस बात से अवगत कराया कि गोमिया प्रखंड के गोमिया एवं गुरुडीह पत्तीहारी पंचायत के सभी गांव को कोनार नदी

'विपक्षी एकता की बैठक टलने की असली वजह कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व का न आना'

पटना, (हि.स.)। बिहार में विपक्षी एकता को लेकर 12 जून की बैठक को फिलहाल टाल दिया गया है। अब प्रस्तावित बैठक 23 जून को होगी। प्रदेश में नीतीश की अगुवाई वाली महागठबंधन सरकार इसे लेकर काफी उत्साहित थी लेकिन ऐन मौके पर इस बैठक में कांग्रेस के सबसे बड़े नेता के न आने की वजह से इसे टाल दिया गया है। इस बैठक को लेकर वरिष्ठ पत्रकार और राजनीतिक विश्लेषक अरुण पांडे ने हि.स. से बातचीत में कहा कि बैठक टलने की असली वजह विपक्ष की एकजुटता बगैर कांग्रेस के हो नहीं सकता है, जिसके सर्वेसर्वा राहुल गांधी है। इस बैठक में राहुल गांधी के नहीं शामिल होने से इस बैठक का कोई औचित्य नहीं है। कांग्रेस के अलावा बकफुट से सपोर्ट करने के लिए दबाव बना रही है। इसलिए वे इस बैठक से अपनी



दूरी बना रही है। अरुण पांडे ने कहा कि कांग्रेस पर क्षेत्रीय दल जिस तरह 200 से 250 सीटों पर लड़ने का दबाव बना रहे हैं। वह कांग्रेस को पसंद नहीं है। कांग्रेस को भी लगा होगा कि विपक्षी दलों की बैठक में जाकर कुछ हासिल होने वाला नहीं है, बल्कि वही राग क्षेत्रीय दल बैठक में भी अलापेंगे, जो बातें संकेतों में अभी कह रहे हैं। विपक्ष की शर्तें कांग्रेस एकता के नाम पर मान ले तो उसे अधिकतम 250 सीटों पर चुनाव लड़ना होगा। कांग्रेस ने 2009 के लोकसभा चुनाव को आधार बनाते का सैद्धांतिक निर्णय लिया है। तब कांग्रेस 440 सीटों पर लड़ कर 206

सीटें जीती थी। वरिष्ठ पत्रकार प्रवीण बागी ने बातचीत में कहा कि कांग्रेस पार्टी कभी भी सत्ता से खुद को दूर करके सत्ता की चाबी अपने सहयोगी को नहीं थमाना चाहती है। यही कारण है कि वह इस बैठक में अपने शीर्ष नेता राहुल गांधी को नहीं आने देना चाहती है। क्योंकि, राहुल के आने के बाद इस बैठक में जितने भी क्षेत्रीय दल हैं वे उनपर 250 सीट छोटे दलों को देने के लिए दबाव बनायेंगे। इनमें बिहार में महागठबंधन, उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी, पश्चिम बंगाल में तुलसी कंग्रेस, झारखंड में झामुमो, दिल्ली-पंजाब में आप, महाराष्ट्र में महाअधारी और तमिलनाडु में डीएमके शामिल है। उन्होंने कहा कि इसके साथ कांग्रेस नेतृत्व को नीतीश की शर्तें पकाने मुकेश कुमार ने कहा कि कांग्रेस ने इस देश पर करीब 50 वर्ष से ऊपर तक शासन किया है।

हजारों किसानों की जमीनें नीलाम, यह ने चलाई एक मुश्त ऋण योजना : राठौड़

ईडी जांच की आंच से बौखलाई कांग्रेस

जयपुर (हिस)। विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़ ने कहा कि गहलोत सरकार ने किसानों के वोट बटोरकर उनके साथ धोखा किया है। राष्ट्रीयकृत और अनुसूचित बैंकों से करीब 6 लाख किसानों ने लोन लिया था, उनका एक पैसा भी माफ नहीं हुआ। गहलोत सरकार ने किसानों के साथ वन टाईम सेटलमेंट का वादा किया था, लेकिन विधानसभा में सरकार ने जवाब दिया कि प्रदेश में 19 हजार संयुक्त किसानों की जमीनें नीलाम हुई हैं। इसके अलावा एक लाख तेरह हजार किसानों के खाते एनपीए हो चुके हैं, जिनकी जल्द ही जमीनें नीलाम होने वाली हैं। कर्ज से तंग आकर प्रदेश में किसान आत्महत्या करने को मजबूर हैं, अनन्दाताओं की यह बदहाली कांग्रेस सरकार को ले डूबेगी। नेता प्रतिपक्ष राठौड़ बुधवार को भाजपा मुख्यालय पर पत्रकारों से चर्चा कर रहे थे। पेपर लीक सहित भ्रष्टाचार के मामलों में



ईडी की कार्रवाई के विरोध में कांग्रेस द्वारा प्रदर्शन करने के बयान पर तीखी प्रतिक्रिया देते हुए नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़ ने कहा कि ईडी ने प्रारंभिक

जांच में तथ्यात्मक रूप से यह पाया है कि प्रदेश में ब्लैक मनी का प्रसार हुआ है, ब्लैकमेलिंग के इस खेल में पेपर माफिया सक्रिय हैं। आरपीएससी मेंबर बाबुलाल कटारा से पूछताछ में खुलासा हुआ है कि डेढ़ करोड़ रुपए देकर आरपीएससी में सदस्य बनाया गया है। सरकार की सरपरस्ती के चलते आरोपियों के हाँसे बुलंद हैं और इन सभी मामलों के तार सरकार से जुड़े हैं। रीट पेपर लीक मामले में गहलोत सरकार पर सीधे आरोप लगाते हुए नेता प्रतिपक्ष राठौड़ ने कहा कि राजीव गांधी स्टडी सर्किल सेंटर को रीट पेपर कराने का जिम्मा देना साफ दर्शाता है कि खुद सरकार ने पेपर लीक कांड में मुख्य आरोपी है। इस दौरान उन्होंने यह भी कहा कि माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के चेयरमैन धर्मपाल जारोली पूर्व में बयान दे चुके कि मुझे बली का बकरा बनाया जा रहा है, मुख्य आरोपियों को बचाया जा रहा है। सरकार द्वारा मनोनीत आरपीएससी सदस्य बाबुलाल कटारा खुद स्टूडेंट रूम से पेपर आउट कराते हैं। इस काम में उनके साथ उनके

रिस्तेदार तक शामिल पाए जाते हैं। पेपर लीक मामले में फरार आरोपित भूपेन्द्र सारण का हवाला देते हुए राठौड़ ने कहा कि प्रदेश की सरकार में मंत्रियों के सोशल मीडिया अकाउंट माफिया लोग चला रहे हैं। बिना सरकार की सरपरस्ती के किसी प्रतियोगी परीक्षा का पेपर इस तरह कार्यालय से कैसे निकाला जा सकता है, सरकार की भूमिका संदिग्ध होने की वजह से ये लोग ईडी की जांच से बौखलाए हुए हैं। जैसे जांच आगे बढ़ेगी ऐसे सभी लोग जिन्होंने नौकरी की गारंटी देने के नाम से कोचिंग सेंटर खोलकर बैच बनाए हुए थे, इन सभी पर जांच की आग जरूर आएगी। राजेंद्र राठौड़ ने मुख्यमंत्री अशोक गहलोत द्वारा ईडी की विश्वसनीयता पर उठाए गए सवाल के जवाब में यह भी कहा कि कांग्रेस सरकार खुद के राज में जिन संस्थाओं को सर्वोच्च मानती थी आज उन्हें ईडी जैसी संवैधानिक संस्था पर शक होता है। कांग्रेस को यह ध्यान रखना चाहिए कि संविधान और कानून से कोई भी ऊपर नहीं है।

किसानों को ऋण मुक्त करने के लिए सरकार ने चलाई एक मुश्त ऋण योजना : उपायुक्त



नारनौल (हिस)। हरियाणा राज्य सहकारी कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक के अतिदेय ऋणी किसानों को ऋण मुक्त करने के लिए एक मुश्त ऋण योजना-2022 चलाई जा रही है। योजना की अन्तिम तिथि 30 जून है। उपायुक्त मोनिका गुप्ता ने बुधवार को बताया कि इस योजना के तहत अतिदेय ऋणी किसानों द्वारा अपना पूरा मूलधन भरने पर 31 मार्च, 2022 तक के अतिदेय ब्याज की आधी माफ़ी व पूरे जर्माना ब्याज की माफ़ी दी गई है। इसके अतिरिक्त जिन अतिदेय ऋणी किसानों की 31 मार्च, 2022 तक मृत्यु हो चुकी है उन अतिदेय ऋणी किसानों का पूरा मूलधन भरने पर 31 मार्च, 2022 तक के अतिदेय ब्याज की पूरी माफ़ी व पूरे जर्माना ब्याज की माफ़ी दी गई है। उन्होंने बताया कि जिला महेन्द्रगढ़ कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक के तहत 12266 अतिदेय ऋणियों की तरफ 338 करोड़ 83 लाख रुपए राशि देय है, जिसमें आधी माफ़ी

को 7772 अतिदेय ऋणी की तरफ 232 करोड़ 86 लाख रुपए देय है। उन्होंने बताया कि इनमें से 455 अतिदेय ऋणी ने 4 करोड़ 49 लाख रुपए का ब्याज माफ़ी का लाभ ले चुके हैं व 4494 मृतक अतिदेय ऋणियों की तरफ 105 करोड़ रुपए देय है, जिनमें से 1219 अतिदेय ऋणियों के उत्तराधिकारी 15 करोड़ 17 लाख का लाभ उठा चुके हैं। कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक महेन्द्रगढ़ के मुख्य कार्यकारी अधिकारी संजय सिंह यादव ने बताया कि शाखा अटेली प्रबंधक भूमि मूल्यांकन अधिकारी के

मोबाइल नंबर 9416321131, शाखा कनीना प्रबंधक भूमि मूल्यांकन अधिकारी के मोबाइल नंबर 9991918002 व 9416000909, शाखा महेन्द्रगढ़ प्रबंधक भूमि मूल्यांकन अधिकारी के मोबाइल नंबर 9466666927, शाखा नांगल चौधरी प्रबंधक भूमि मूल्यांकन अधिकारी के मोबाइल नंबर 9416214209 व शाखा नारनौल प्रबंधक भूमि मूल्यांकन अधिकारी के मोबाइल नंबर 9416074303 पर फोन कर योजना के बारे में किसान जानकारी ले सकते हैं।

इंटरैक्टिव डिजिटल ई-बुक का विमोचन दलित किसान की 24 बीघा कृषि भूमि पर सरपंच पति की नजर

चंडीगढ़ (हिस)। हरियाणा के शिक्षा मंत्री कंवरपाल ने इंटरैक्टिव डिजिटल ई-बुक *भूलभुलैया खेल पिटारा* का विमोचन किया। यह बुक आरोही आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय ग्योंग, जिला कैथल में कार्यरत हिंदी प्राध्यापक डॉ. विजय चावला ने तैयार की है। इस डिजिटल ई-बुक को इंटरैक्टिव तरीके से तैयार किया गया है। विमोचन के मौके पर शिक्षा मंत्री ने कहा कि इस ई-बुक का प्रयोग विद्यालयों में स्मार्ट कक्षा-कक्ष, डिजिटल लैब, टैब तथा मोबाइल के माध्यम से किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि इसमें हिंदी भाषायी दक्षताओं को विकसित करने के लिए सरल एवं रुचिकर पठन सामग्री भी उपलब्ध की गई है। शिक्षा मंत्री ने बताया कि डिजिटल पठन सामग्री का अध्ययन करने के लिए लिंक तथा व्बू आर कोड की सुविधा प्रदान की

गई है। विद्यार्थियों को डिजिटल पठन सामग्री पढ़ने के लिए दिए गए लिंक को क्लिक करना होगा तथा उसमें निहित व्बू आर कोड को स्कैन करना होगा। ऐसा करते ही विद्यार्थी हिंदी दक्षताओं का विस्तृत अध्ययन कर पाएंगे। शिक्षा मंत्री ने बताया कि जब तक विद्यार्थी हिंदी भाषायी दक्षताओं में निपुण नहीं बन जाते तब तक वे हिंदी विषय में अच्छे अंक नहीं ला सकते। हिंदी दक्षताओं में निपुण होने पर ही विद्यार्थी विभिन्न प्रकार के प्रश्नों के उत्तर स्वयं दे पाने में समर्थ हो पाते हैं। कंवरपाल ने उम्मीद जताई कि डॉ. विजय कुमार चावला की हिंदी भाषायी दक्षताओं को विकसित करने के लिए तैयार इंटरैक्टिव डिजिटल ई-बुक *भूलभुलैया खेल पिटारा* का यह संस्करण बच्चों व अध्यापकों की अपेक्षाओं पर पूर्ण रूप से खरा उतरेगा।

जोधपुर (हिस)। अनुसूचित जाति व जनजाति के विकलांग व्यक्ति को बोरानाडा क्षेत्र में खसरा नंबर 310-314 के अंतर्गत आई 49 बीघा में से 24 बीघा कृषि भूमि धोखाधड़ी से हड़पने का मामला सामने आया है। आरोप है कि तत्कालीन सरपंच ने अपने कार्यकाल के समय बोरानाडा के पास की जमीन को कूटचित्त दस्तावेजों से 12.50 व 11.10 बिस्वा जमीन एक व्यापारी व महिला के नाम करवा दी। यह जमीन 14 अप्रैल 1994 में परिवारी रमेश के बड़े पिता भैरामराम व पिता बुद्धराम द्वारा ली गई थी। वर्तमान में जमीन पर कब्जा जताने वाले रमेश ने बताया कि तत्कालीन सरपंच व पटवारी की मिलीभगत से वर्ष 2014 में 12.50 बीघा जमीन सरपंच पति

ने कूटचित्त दस्तावेज से अपने नाम कर ली। जबकि खसरा नंबर 310 की 11 बीघा 10 बिस्वा जमीन विधवा महिला पानी देवी के नाम कराई। धोखाधड़ी से हड़पने की साजिश करने वाले इन भूमाफियाओं ने इस कृषि भूमि पर रमेश व परिवार के अन्य सदस्यों के बुवाई (खेती) करने पर रोक लगा दी है। परिवारी रमेश ने आरोप लगाया कि जब भी खेती करने के लिए बुवाई करते हैं तो सरपंच पति अपने पैसों के दम पर कुछ असासजिक धर्मों को मौके पर भेजकर हमारे मार्जारिक तत्वों को आमोद आदि दिलाता है। पहले भी परिवार के लोगों पर हमले करवाया जा चुका है जिसकी भी पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की। रमेश के अनुसार

जमीन पर खेती तो नहीं कर सकते हैं, मगर इस भूमि पर कई सालों से हम ही काबिज हैं। रिवादी रमेश ने कहा है कि पुलिस पूर्व भी जमीन के मामले को लेकर संबंधित पुलिस थाने में धोखाधड़ी का प्रकरण दर्ज कराया गया। मगर भूमाफिया की सांठगांठ होने की वजह से मामले में एफआर लगा दी गई, और ना ही जमीन के दस्तावेजों की सही तरीके से जांच हुई। फिलहाल इस प्रकरण के जांच अधिकारी एसपी बोरानाडा मानाराम गर्ग हैं। आरोप है कि पूर्व सरपंच ने खसरा नं 314

में से 10 बीघा जमीन की वसीयत अधिकारियों से मिलीभगत कर झूठी वसीयत खुद गिरधारीलाल नाम के शख्स ने अपने नाम बनवा दी। उक्त जमीन 2.50 बीघा जमीन का शेष भाग गैर मुम्किन बताकर छोड़ दी। खसरा नं 310 की पूरी जमीन 11 बीघा 10 बिस्वा हड़प कर एक विधवा की नाम करवा दी गई थी। सरपंच पद का दुरुपयोग कर सिर्फ 420 उजागर आधार पर म्यूश्नन तक जारी करवा लिया। पानी देवी के नाम करवा दी। जब इस बात का पता लगाने के बाद विरोध किया तो बदनामी के डर से पानी देवी से वापस 23 मार्च 2007 में परिवारी रमेश पुत्र स्वर्गीय बुद्धराम भील के नाम से कर दी। न्याय की आस लेकर पीड़ित परिवार दर-दर की ठोकरें खाने को मजबूर है।

पंजाब सरकार ने भ्रष्टाचार केसों की जांच के बदले नियम

चंडीगढ़ (हिस)। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने भ्रष्टाचार रिश्तखोरी केस में जांच के नियमों में बदलाव किया है। अब पुलिस अधिकारी अपने विभाग के कर्मचारी की रिश्तखोरी केस में जांच नहीं कर सकेंगे। पहले पंजाब पुलिस में डीएसपी स्तर के अधिकारी जांच कर सकते थे, लेकिन अब रिश्तखोरी केस में स्टेट विजिलेंस मामले की पड़ताल करेगी। इसी तरह बाकी के भी अन्य विभागों के लिए यह नियम लागू होता है। मान सरकार रिश्तखोरी की जांच पुलिस के हाथों लेकर स्टेट विजिलेंस को सौंपने का पत्र पुलिस विभाग के सीनियर अधिकारियों को पहले ही जारी कर चुकी है। इस फैसले के बाद पुलिस विभाग के साथ-साथ बाकी के विभागों में भी हड़ 7प मचा है। वहां पर फुटबाल खेल को दोबारा से जिंदा करने का काम हुआ है। विज ने खेल नीति पर बोलते हुए कहा कि मैं जब पिछले कार्यकाल में

उदयपुर में हाईकोर्ट बेंच की मांग को लेकर एक बार फिर आंदोलन ने पकड़ी रफ्तार

उदयपुर (हिस)। उदयपुर में हाईकोर्ट बेंच की मांग को लेकर वकीलों का आंदोलन एक बार फिर रफ्तार पकड़ता दिखाई दे रहा है। बरसों से चल रहे इस आंदोलन में कई उतार-चढ़ाव आए, कभी आंदोलन उठा हुआ तो कभी कुछ दिन एकदम शांत नजर आया। अब फिर से उदयपुर के अधिवक्ताओं ने हाईकोर्ट बेंच के लिए हुंकार भर दी है। आंदोलन के तहत बुधवार को वकीलों ने मौन जुलूस निकाला। जुलूस के बाद वकील सीधे जिला कलेक्टर से मिले और उनको ज्ञापन दिया। हाईकोर्ट बेंच की मांग को लेकर संघर्षत वकील सुबह कोर्ट परिसर में जुटे। बाद में कोर्ट परिसर से काली पट्टी लगाकर



जुलूस के रूप में निकले। मौन रहते हुए हाथों में तख्तियों पर अपना विरोध दर्शाते हुए वकीलों ने अपनी मांग को दोहराया। वे कोर्ट चौराहा से देहलीगेट गए और वापस वहां से कोर्ट

चौराहा आए। इस दौरान बार एसोसिएशन के अध्यक्ष राकेश मोगरा, महासचिव चेतनपुरी गोस्वामी, जिला संघर्ष समिति के अध्यक्ष सत्येंद्र पाल सिंह छाबड़ा, उपाध्यक्ष योगेंद्र

दशोरा, महासचिव शिव कुमार उपाध्याय, सचिव चेतन पालीवाल, वित्त सचिव हरीश सेन, पुस्तकालय सचिव राकेश आचार्य, मेवाड़ वागड़ हाई कोर्ट बेंच संघर्ष समिति के संयोजक रमेश नंदवाना सहित बड़ी संख्या में वकील शामिल हुए। संयोजक रमेश नंदवाना ने कहा था कि आजादी के बाद से न्याय का विकेंद्रीकरण कर हाईकोर्ट बेंच की उदयपुर में स्थापना करनी थी, लेकिन ऐसा नहीं किया गया। वकीलों ने कहा कि मेवाड़-वागड़ की जनता के कई मामले सालों से जोधपुर हाईकोर्ट में पड़े हैं। अधिवक्ताओं ने इतना तक कह दिया था कि जो हाईकोर्ट बेंच की बात करेगा, वे उसी के साथ होंगे।

ट्रेलर और कार की भिड़ंत में चार दोस्तों की मौत

सीकर (हिस)। जिले के फतेहपुर शेखावाटी के पास बुधवार तड़के करीब पांच बजे ट्रेलर व कार की आमने सामने हुई टक्कर में चार दोस्तों की मौत हो गई। फतेहपुर-सालासर हाइवे पर मरुबाट सड़ स्टैंड के पास हुए हादसे में आठ ट्रेलर में कार भी टकरा गई। हादसे में तेजराज सिहाग (27) पुत्र अर्जुन राम सिहाग निवासी बुडकिचा जोधपुर, शाहरुख खान (24) पुत्र अशुल सलीम खान निवासी कालिया डक्का हरिजन बस्ती खांडा फलसा जोधपुर, राजू रियाज खान (34) पुत्र गुलजार खान निवासी मिया चौक माइला बास खांडा जोधपुर तथा रेवंत राम चौधरी (28) पुत्र नरसिंह राम बुडकिचा तहसील भोपालगढ़ जिला जोधपुर की मौके पर ही मौत हो गई। मौके पर पहुंची पुलिस ने कार में फंसे शवों को क्रम की मदद से निकाला। फतेहपुर सदर थानाधिकारी कृष्ण कुमार धनकड़ ने बताया कि कार जोधपुर से फतेहपुर आ रही थी और ट्रेलर फतेहपुर से जोधपुर की तरफ जा रहा था। ट्रेलर किसी वाहन को ओवरटेक करने के दौरान सामने से आ रही कार को कुचल कर घसीटते हुए सड़क से करीब 50 फीट दूर ले गया। हादसे में कार सवार चारों शव आपस में चिपक गए। दो शवों को दो घण्टे की मशक्कत के बाद निकाला जा सका। चारों मृतकों के शवों को फतेहपुर के राजकीय उप जिला अस्पताल के शव गृह में रखवाया गया है। चारों मृतक आपस में दोस्त बताए जा रहे हैं।

सारे देश में मेडलों की भूख हरियाणा मिटा सकता है : अनिल विज

गुरुग्राम (हिस)। गृह एवं स्वास्थ्य मंत्री अनिल विज ने कहा कि हरियाणा खेलों की धरती है। सारे देश में मेडलों की भूख हरियाणा मिटा सकता है। हरियाणा पूरे देश का केवल 1.3 प्रतिशत है, जबकि हमारे मेडल 50 प्रतिशत से अधिक हैं। हमने खेलों को बढ़ावा देने के लिए खेल अवसरचना पर विशेष बल दिया है। क्योंकि जब तक खिलाड़ियों को खेल अवसरचना पहुंची नहीं होगी, तब तक खिलाड़ी अपना बेहतर नहीं कर पाएंगे। वे बुधवार को यहां विशेष ओलंपिक भारत के माध्यम से जर्मनी के बर्लिन में विशेष ओलंपिक वर्ल्ड समर गेम्स-2023 में भाग लेने जा रहे विशेष खिलाड़ियों एवं उपस्थितजनों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि राज्य के शहर-शहर में नए स्टेडियम बनाए जा रहे हैं। अगर अंबाला की बात की जाए तो विश्व स्तर का फुटबाल स्टेडियम अंबाला में बनाया गया है। वहां पर फुटबाल खेल को दोबारा से जिंदा करने का काम हुआ है। विज ने खेल नीति पर बोलते हुए कहा कि मैं जब पिछले कार्यकाल में



खेल मंत्री था तो मैंने खिलाड़ियों को बिठाकर हरियाणा की खेल नीति को बनाने का काम किया। क्योंकि नीतियां बनाने में कई बार गैप रह जाता है और इस गैप को पाटने के लिए मैंने हितधारकों अर्थात खिलाड़ियों को भी शामिल किया। विशेष ओलंपिक भारत की चेयरपर्सन

मल्लिका नड्डा ने जर्मनी के बर्लिन में विशेष ओलंपिक वर्ल्ड समर गेम्स-2023 में भाग लेने जा रहे खिलाड़ियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि यहां 16 खिलाड़ी और कोच उपस्थित हैं। हमें प्रत्येक दिव्यांग तक पहुंचना है। विशेष ओलंपिक भारत ने इस मूवमेंट में

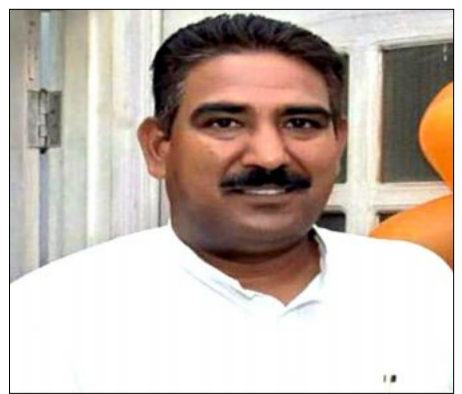
पूरा सहयोग दिया है। उन्होंने कहा कि 190 देश विशेष ओलंपिक में हैं जिसमें 15 लाख पंजीकृत एथलीट हैं। बर्लिन में आयोजित होने वाले खेलों में 198 खिलाड़ी 16 प्रकार के खेलों में भाग लेंगे। इन खेलों में भाग लेने के बाद यह खिलाड़ी 27 जून को वापसी करेंगे। उन्होंने उम्मीद जताते हुए कहा कि लगभग 200 खिलाड़ियों में से 150 खिलाड़ी मेडल लेकर अवश्य आएंगे। भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष ओम प्रकाश धनकुड़ ने कहा कि ये विशेष खिलाड़ी देश की पहचान बनें और प्रगति में सहभागी बनें। इसके लिए विशेष ओलंपिक भारत का एक महती प्रयास है। उन्होंने मल्लिका नड्डा की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे विशेष बच्चों में सर्वश्रेष्ठ निकालना असाधारण है क्योंकि ये चुनौती से सर्वश्रेष्ठ देने का प्रयास करते हैं। उन्होंने इन खिलाड़ियों को अपनी ओर से बधाई व शुभकामनाएं देते हुए कामना की कि बर्लिन से विजयी होकर आए और आइकोनिक होकर आए।

सांसद डॉ. किरोड़ी लाल मीणा पहुंचे ईडी दफ्तर डीओआईटी में कथित भ्रष्टाचार को लेकर दी शिकायत

जयपुर (हिस)। राजस्थान में पेपर लीक मामले को लेकर ईडी (प्रवर्तन निदेशालय) की छापेमारी लगभग पूरी हो चुकी है। इस बीच बुधवार को सांसद डॉ. किरोड़ीलाल मीणा ईडी कार्यालय पहुंचे। उन्होंने ईडी को सूचना एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीओआईटी) में कथित भ्रष्टाचार की शिकायत दी। मीडिया से बातचीत करते हुए डॉ. किरोड़ी लाल ने कहा कि पहले भी वह रोट को लेकर आए थे। ईडी ने उसे सही माना। अब छापे मार रही है। वैसे ही दो मामले एसीबी ने सरकार के पास भेजे थे। इसमें जांच की स्वीकृति मांगी थी, लेकिन सरकार की ओर से जांच की स्वीकृति नहीं दी गई। उन्होंने कहा कि डीओआईटी में पांच हजार करोड़ का घोटाला है। उन्होंने विस्तृत जानकारी ईडी को दी गई है। सभी दस्तावेज ईडी को सौंपे गए हैं, मुझे पूरा भरोसा है ईडी इस मामले में भी सख्त से सख्त कार्रवाई करेगी। इस बीच विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़ ने भी ईडी की कार्रवाई को लेकर गहलोत सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि ईडी ने प्रारंभिक जांच में तथ्यात्मक रूप से यह पाया है कि प्रदेश में ब्लैक मनी का प्रसार हुआ है। ब्लैकमेलिंग के इस खेल में पेपर माफिया सक्रिय हैं। रीट पेपर लीक मामले में गहलोत सरकार पर सीधे आरोप लगाते हुए राठौड़ ने कहा कि राजीव गांधी स्टडी सर्किल सेंटर को रीट पेपर कराने का जिम्मा देना साफ दर्शाता है।

किसानों पर लाठीचार्ज से खफा शुगरफेड चेयरमैन ने किया इस्तीफे का एलान

चंडीगढ़ (हिस)। सूरजमुखी की एमएसपी पर खरीद को लेकर कुरुक्षेत्र में हुए लाठीचार्ज के मुद्दे पर सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी व जननायक जनता पार्टी बुधवार को दो फाड़ हो गई। हरियाणा के सहकारिता मंत्री बनवारी लाल ने हरियाणा में चीनी मिलों की स्थिति पर सरकार का पक्ष रखने के लिए पत्रकार वार्ता बुलाई थी। इसमें शुगरफेड के चेयरमैन रामकरण वार्ता मौजूद थे। बनवारी लाल भाजपा कोटे से कैबिनेट मंत्री हैं और काला जजपा कोटे से शुगरफेड के चेयरमैन हैं। संयुक्त पत्रकार वार्ता में रामकरण काला ने लाठीचार्ज के मुद्दे पर अपनी ही सरकार को कटघरे में खड़ा करते हुए इस्तीफा देने का एलान कर दिया। उन्होंने कहा कि किसान एमएसपी पर सूरजमुखी की खरीद की मांग कर रहे हैं, जो कि उनका हक है। ऐसे में उन पर लाठीचार्ज नहीं किया जाना चाहिए था। यह सरकार की गलती है। यदि किसानों को अगले 24 घंटे के भीतर सूरजमुखी की फसल एमएसपी पर खरीदने का भरोसा नहीं दिलाया जाता तो वह शुगरफेड के चेयरमैन पद से इस्तीफा दे देंगे। रामकरण काला पिछली भाजपा सरकार में मंत्री कृष्ण बेदी को हराकर विधायक बने थे। काला कांग्रेस के टिकट के दावेदार थे लेकिन हुड्डा



उन्हें टिकट नहीं दिला पाए, जिस कारण जेजेपी से उन्होंने चुनाव लड़ा। काला ने कहा कि हिरासत में लिए किसानों को तुरंत रिहा किया जाए तथा उन पर दर्ज मुकदमे वापस हों। उन्होंने कहा कि चुनाव नजदीक हैं। किसानों पर लाठीचार्ज गलत हुआ है। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि सरकार ने जानबूझकर उनके विधानसभा क्षेत्र में लाठीचार्ज करवाया है।

आतंकी फंडिंग मामले में मौलाना मीर कासमी को समन

श्रीनगर (हिस)। राष्ट्रीय जांच एजेंसी ने आतंकी फंडिंग मामले में प्रसिद्ध इस्लामी विद्वान और रेक्टर डार उल उलूम रहीम्या बांदीपोरा मौलाना रहमतुल्ला मीर कासमी को बुधवार को समन भेजा है। आज ही तलब किए गए कासमी श्रीनगर स्थित एनआईए कार्यालय पहुंचे हैं। बुधवार को एक अधिकारी ने बताया कि एनआईए आईपीसी की धारा 120बी और 153ए के तहत यूए (पी) अधिनियम 1967 के कई धाराओं के तहत धन जुटाने, इस धन का इस्तेमाल गैरकानूनी गतिविधियों में करने और जम्मू-कश्मीर के युवाओं को कट्टरपंथी बनाने के मामले में जांच कर रही है। एनआईए के समन में कहा गया कि ऐसा प्रतीत होता है कि आप इस मामले के तथ्यों से परिचित हैं। इस मामले से संबंधित कुछ सवालों के जवाब देने के उद्देश्य से आपको एनआईए के कार्यालय चर्च लेन सोनवार श्रीनगर में आज ही रिपोर्ट करने का निर्देश दिया जाता है।

बाग लगाने के लिए सरकार दे रही है 70 फीसदी तक सब्सिडी

चंडीगढ़ (हिस)। हरियाणा सरकार किसानों को बागवानी के प्रति जागरूक करने के लिए भरसक प्रयास कर रही है और बाग लगाने पर किसानों को 70 प्रतिशत तक सब्सिडी भी दे रही है। बागवानी को अपनाकर किसान अपनी अतिरिक्त आमदनी सुनिश्चित कर सकते हैं। बागवानी खेती का ऐसा तरीका है, जिसमें फसलों के साथ-साथ फलों के उत्पादन से भी आमदनी की जा सकती है। सरकारी प्रवक्ता ने बुधवार को बताया कि सरकारी की ओर से किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिए बागवानी विभाग के माध्यम से कई प्रकार की योजनाएं चलाई जा रही हैं। इन योजनाओं के तहत बागवानी को अपनाकर किसान अतिरिक्त आमदनी सुनिश्चित कर सकते हैं। किसानों को बागवानी विभाग की योजनाओं के अनुसार बाग लगाने पर 70 प्रतिशत तक सब्सिडी भी दी जा रही है। उन्होंने बताया कि किसानों को बागवानी विभाग की योजनाओं से अवगत करवाने के लिए प्रदेश के सभी जिलों में 30 जून तक जागरूकता अभियान चलाए जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि सरकार की योजना के अनुसार जिलों में किसानों को बाग लगाने पर 43 हजार रुपए प्रति एकड़ व सब्जी लगाने पर 15 हजार रुपए से 25,500 रुपए प्रति एकड़ तक का अनुदान



दिया जा रहा है। विभाग की योजनाओं के तहत अमरूद, किन् व बेर के बाग, हाइब्रिड सब्जियों, सब्जी बीज उत्पादन, मधुमक्खी पालन व संरक्षित खेती पर अनुदान देने का प्रावधान है। इसके लिए मेरी फसल मेरा व्योरा पोर्टल पर फसल का

रजिस्ट्रेशन आवश्यक है। इसके अतिरिक्त, बागवानी बीमा योजना के तहत प्राकृतिक आपदा से सब्जियों व बाग पर भी प्रति एकड़ के हिसाब से मुआवजा दिया जा रहा है। इसके लिए विभाग के बीमा योजना पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन आवश्यक है।



के-फोन का सबसे सस्ता प्लान 299 में, केरल ने बनाया खुद का इंटरनेट

तिरुवनंतपुरम। केरल ने अपना खुद का इंटरनेट बना लिया है। इस तरह से अपनी खुद की ब्रांडबैंड सेवा के-फोन या 'केरल फाइबर ऑप्टिक नेटवर्क' रखने वाला देश का पहला और इकलौता राज्य बन गया है। के-फोन मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन के नेतृत्व वाली सरकार द्वारा लोगों के लिए इंटरनेट की पहुंच में सुधार के लिए शुरू की गई एक पहल है। इंटरनेट सेवा को शुरुआत करते हुए, मुख्यमंत्री ने सार्वभौमिक इंटरनेट पहुंच को वकालत की और केरल को एक ज्ञान

अर्थव्यवस्था में बदलने और एक नवाचार-संचालित समाज को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में इस पहल की सराहना की। मुख्यमंत्री विजयन ने कहा कि जंगल के अंदरूनी हिस्सों में इमालाकुडी सहित के-फोन के माध्यम से सभी जगह पर कनेक्टिविटी सुनिश्चित करने से, 'कोई भी पीछे नहीं रहेगा और हर कोई केरल की वास्तविक कहानी का हिस्सा होगा।' के-फोन या केरल फाइबर ऑप्टिक नेटवर्क की बात कर तो के-फोन केरल सरकार को खुद को ब्रांडबैंड सेवा या इंटरनेट सेवा है।

मुख्यमंत्री विजयन ने के-फोन को कॉर्पोरेट संचालित टेलीकॉम सेक्टर के वैकल्पिक मॉडल के रूप में पेश किया है। दरअसल यह कदम 'निजी क्षेत्र के केबल नेटवर्क और मोबाइल सेवा प्रदाताओं के शोषण से लोगों को मुक्त करके' डिजिटल डिवाइड को पाटने का एक प्रयास है। के-फोन अन्य इंटरनेट सर्विस प्रोवाइडर्स के समान ही हाई स्पीड और क्वालिटी प्रदान करती है, वह भी किफायती दरों पर। के-फोन के सबसे सस्ते प्लान की कीमत 20 एमबीपीएस की गति के साथ 299 (जीएसटी

को छोड़कर) प्रति माह होगी। यह हर महीने 3,000 जीबी की मुफ्त डाउनलोड सीमा के साथ आता है। के-फोन के सबसे महंगे प्लान की कीमत 250 एमबीपीएस की स्पीड के साथ 1,249 (जीएसटी को छोड़कर) है। यह प्लान प्रति माह 5,000 जीबी की मुफ्त डाउनलोड सीमा के साथ आता है। इस सर्विस के लिए राज्य भर में 1,500 करोड़ रुपये की लागत से 35,000 किमी ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क स्थापित किया जाएगा। इसे केरल इंफ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट फंड बोर्ड द्वारा फंड किया गया है।

न्यूज़ ब्रीफ

खरीफ फसलों पर एमएसपी में बढ़ोतरी, गुरुग्राम मेट्रो नेटवर्क को लेकर बड़ा एलान



नई दिल्ली। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने विपणन सत्र 2023-24 के लिए खरीफ फसलों के लिए एमएसपी में वृद्धि को मंजूरी दे दी है। यह कदम उत्पादकों को उनकी उच्च कीमतों के लिए प्रोत्साहित करने और फसल विविधीकरण को प्रोत्साहित करने के लिए है। केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल ने ये जानकारी दी। सरकार के इस फैसले से सूरजमुखी, धान और कपास, मूंगफली और सोयाबीन आने वाले किसानों को भी फायदा पहुंचेगा। केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल के अनुसार मूंग दाल के न्यूनतम समर्थन मूल्य पर सबसे अधिक 10.4 प्रतिशत, मूंगफली पर 9 प्रतिशत, सोयाबीन पर 10.3 प्रतिशत, धान पर 7 प्रतिशत, जवार, बाजरा, रागी, मेज, अरहर दाल, उड़द दाल, सोयाबीन, सूरजमुखी बीज पर वित्त वर्ष 2023-2024 के लिए लगभग 6-7 प्रतिशत की वृद्धि की गई है। कैबिनेट ने धान का एमएसपी 143 रुपये बढ़ाकर वर्ष 2023-24 के लिए 2183 रुपये प्रति क्विंटल कर दिया है।

डॉलर के मुकाबले तेजी के साथ बंद हुआ रुपया, 5 पैसे की हुई बढ़त



नई दिल्ली। बाजार में रुपया डॉलर के मजबूत रहा। विदेशी बाजार में रुपया ने मजबूती के साथ ट्रेंड किया। डॉलर के मुकाबले रुपया 5 पैसे बढ़कर 82.55 पर बंद हुआ। इंटरबैंक फॉरन एक्सचेंज में, डॉलर के मुकाबले रुपया 82.56 पर खुला था, लेकिन बंद होने के बाद रुपया 5 पैसे की बढ़त के साथ 82.55 पर बंद हुआ। दिन के दौरान में रुपया ने डॉलर के मुकाबले 82.46 के उच्च और 82.57 के निचले स्तर को छुआ। डॉलर सूचकांक 0.10 प्रतिशत गिरकर 104.02 पर आ गया। कल डॉलर के मुकाबले रुपया में कारोबार सपाट रहा था। कल रुपया में 1 पैसे की मामूली बढ़त देखी को मिली थी। जिसके साथ रुपया 82.62 पर बंद हुआ। वैश्विक तेल बेंचमार्क ब्रेट वरुड 0.51 प्रतिशत बढ़कर 76.68 डॉलर प्रति बैरल हो गया। शेंयर बाजार में 30 शेंयर्स वाला बीएसई सेंसेक्स 350.08 अंक या 0.56 प्रतिशत बढ़कर 63,142.96 अंक पर बंद हुआ और व्यापक एनएसई निपटी 127.40 अंक या 0.68 प्रतिशत बढ़कर 18,726.40 अंक पर पहुंच गया। एक्सचेंज के आंकड़ों के मुताबिक विदेशी संस्थागत निवेशक (एफआईआई) 385.71 करोड़ रुपये के शेंयर खरीदे। आईबीआई की मीडिक नीति समेती की बैठक शुरू हो गई है। बैठक में लिये गए फैसलों का एलान कल होगा। इस बार फिर से उम्मीद की जा रही है कि रेपो रेट में किसी भी तरह का कोई बदलाव नहीं होगा।

केंद्रीय मंत्री ब्रिटेन में किया दावा, बोले- सरकार के नए कदमों से निवेशकों को मिलेगा प्रोत्साहन



नई दिल्ली। केंद्रीय कानून व न्याय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने लंदन में कहा है कि सरकार ने न्यायपालिका और वैकल्पिक विवाद समाधान तंत्र को मजबूत करने के लिए कई कदम उठाए हैं जो विदेशी निवेशकों को प्रोत्साहन के रूप में काम करेंगे। उन्होंने कहा कि सरकार की ओर से उठाए गए ये सुधारवादी कदम भारत-ब्रिटेन संबंधों को नई ऊंचाइयों पर ले जाने में मदद करेंगे। पिछले महीने विभाग का कार्यभार सभालने के बाद पहली बार ब्रिटेन की यात्रा पर आए मेघवाल ने यहां भारतीय मध्यस्थता परिषद (आईसीए) के सम्मेलन में हिस्सा लिया। उन्होंने कानून और न्याय के क्षेत्र में द्विपक्षीय सहयोग पर चर्चा करने के लिए अपने ब्रिटिश समकक्ष एलेक्स गेक से भी मुलाकात की। फेडरेशन ऑफ इंडियन बैंक्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (फिकबी) के साथ साझेदारी में आयोजित आईसीए के आर्बिट्रेंटिंग इंजी-यूके वाणिज्यिक विवाद सम्मेलन के दूसरे संस्करण में एक विशेष संबोधन में मंत्री ने सरकार की ओर से किए गए दूरगामी कानूनी सुधारों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि सुधारों से न केवल विदेशी निवेशकों के आराम के स्तर को पूरा किया जा सकेगा, बल्कि अदालतों पर बोझ भी कम किया जा सकेगा। मेघवाल ने कहा, मुझे यकीन है कि विवाद समाधान के क्षेत्र सहित भारत सरकार की ओर से किए गए विभिन्न सुधार निवेशकों के लिए विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने के लिए एक प्रोत्साहन के रूप में कार्य करेंगे।

हिंडनबर्ग की रिपोर्ट के बाद टिंगो के शेयर 50 प्रतिशत टूटे

यूएस फर्म ने टिंगो ग्रुप को स्कैम बताया स्टेटमेंट में कई तरह की गलतियां मिलीं

वाशिंगटन। अमेरिकी फर्म हिंडनबर्ग की रिपोर्ट के बाद एग्री फिनटेक कंपनी टिंगो ग्रुप के शेयरों में करीब 50 प्रतिशत की गिरावट देखने को मिली है। यूएस बेस्ड शॉर्ट सेलर ने कंपनी और इसके फंडाइट डेबेंचरों को गंभीर आरोप लगाए हैं। हिंडनबर्ग ने टिंगो ग्रुप के फाइनेंशियल पर सवाल उठाते हुए इसे स्कैम बताया है। टिंगो ग्रुप अफ्रीका, साउथ-ईस्ट एशिया और मिडल ईस्ट में ऑपरेट करता है। ये मुख्य रूप से नाइजीरिया में फार्मिंग और फूड प्रोसेसिंग बिजनेस पर केंद्रित मोबाइल टेक्नोलॉजी और पेमेंट बिजनेस ऑपरेट करती है। मोंबोसी विलेनियर हैं और रेगुलरी न्यूज चैनल पर दिखते हैं। उन्होंने इस साल की शुरुआत में तब सुविधा बंद कर दी थी जब उन्होंने सिकर टीम शेफोल्ड यूनाइटेड को खरीदने की कोशिश की थी।

हिंडनबर्ग रिपोर्ट में क्या कहा गया है

हिंडनबर्ग को कंपनी के अकाउंट में रेड फ्लैग कहलाने वाली कई चीजें दिखाईं। इसके फाइनेंशियल स्टेटमेंट में कई एरर और टाइपो हैं। हिंडनबर्ग ने कहा, मोंबोसी ने नाइजीरिया का पहला मोबाइल पेमेंट ऐप विकसित करने का दावा किया है। हमने ऐप के एक्यूअल क्रिएटर से संपर्क किया, जिन्होंने मोंबोसी के ऐप क्रिएट करने दावों को बिल्कुल झूठ कहा। रिपोर्ट के अनुसार, कंपनी दावा करती है कि उसके मोबाइल हैंडसेट लीचिंग, कॉल और डेटा कारोबार ने पिछले साल 128 मिलियन डॉलर का रेवेन्यू अर्जित किया। ये सर्विसेज नाइजीरिया में एयरटेल के साथ एक एग्रीमेंट के जरिए दी जाती हैं। हिंडनबर्ग ने कहा कि कंपनी ने जो दावा किया है उस तरह का लाइसेंस टाइप जून 2023 तक मौजूद ही नहीं था। हिंडनबर्ग की रिपोर्ट में टिंगो के फाइनेंशियल और बिजनेस ऑपरेशन पर सवाल उठाए गए हैं। कंपनी की फूड यूनिट टिंगो फूड्स ने खुद को कोई फूड प्रोसेसिंग फैसिलिटी न होने के बावजूद बड़े पैमाने पर रेवेन्यू जनरेट करने का दावा किया। रिपोर्ट में कहा गया है कि प्रोजेक्ट फूड प्रोसेसिंग यूनिट की साइट पर बिलबोर्ड



को छोड़कर प्रोसेस के कोई संकेत नहीं थे।

टिंगो ग्रुप के शेयरों में करीब 50 प्रतिशत की गिरावट

हिंडनबर्ग की रिपोर्ट पब्लिश होने के बाद टिंगो के शेयर 2.55 डॉलर से गिरकर 1.32 डॉलर पर आ गए। यानी एक ही दिन में इसके शेयरों में 48.24 प्रतिशत की गिरावट आई है। रिपोर्ट आने के बाद टिंगो ग्रुप का मार्केट कैप 400 मिलियन डॉलर, यानी करीब 3,300 करोड़ रुपये पर आ गया।

टिंगो ग्रुप ने रिपोर्ट को झामक बताया

टिंगो ग्रुप ने हिंडनबर्ग के दावों को गलत बताया है, कहा कि रिपोर्ट में कई सारे फैक्ट गलत और झामक हैं। ये दुनिया भर के विभिन्न बाजारों में टिंगो ग्रुप की ओर से किए जा रहे पॉजिटिव वर्क को कमजोर करने का जानबूझकर किया गया प्रयास लगता है।

हिंडनबर्ग रिसर्च की रिपोर्ट उनकी अपनी राय को रिजैक्ट करती है। इसे शॉर्ट सेलिंग से फायदा कमाने के लिए तैयार किया गया है। कंपनी इस बात की पुष्टि कर सकती है कि हिंडनबर्ग रिसर्च ने अपने आरोपों को सत्यापित करने के लिए कंपनी तक पहुंचने का प्रयास नहीं किया।

टिंगो इस साल हिंडनबर्ग का चौथा टारगेट

इस साल टिंगो स-बेस्ड शॉर्ट-सेलर हिंडनबर्ग का

कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट, पेट्रोल-डीजल के दामों में बदलाव नहीं

नई दिल्ली। पेट्रोल-डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। फिलहाल दिल्ली में पेट्रोल 96.72 रुपये लीटर है तो डीजल 89.62 रुपये लीटर के हिसाब से बिक रहा है। वहीं मुंबई में पेट्रोल 106.31 रुपये और डीजल 94.27 रुपये प्रति लीटर मिल रहा है। देश के 16 राज्यों में पेट्रोल 100 रुपये लीटर के ऊपर बना हुआ है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट देखने को मिल रही है। कच्चा तेल (ब्रेट वरुड) 76 डॉलर प्रति बैरल पर कारोबार कर रहा है। आखिरी बार 21 मई 2022 में पेट्रोल-डीजल की कीमतों में बदलाव किया गया था। तब पेट्रोल पर 8 रुपये और डीजल पर 6 रुपये प्रति लीटर उत्पाद शुल्क घटाया गया था। इससे पेट्रोल और डीजल के दाम 9.5 रुपये और 7 रुपये कम हो गए थे। जुलाई 2022 में, महाराष्ट्र सरकार ने पेट्रोल और डीजल पर 5 रुपये और 3 रुपये प्रति लीटर की कटौती की थी। देश के 16 राज्यों में पेट्रोल 100 रुपये प्रति लीटर के ऊपर है। मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र, कर्नाटक, मणिपुर, तेलंगाना, पंजाब, झारखंड, सिक्किम, ओडिशा, केरल, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल, छत्तीसगढ़ और राजस्थान के सभी राज्यों में पेट्रोल 100 रुपये के ऊपर बिक रहा है। वहीं डीजल भी ओडिशा, राजस्थान और मध्य प्रदेश में 100 रुपये से ऊपर है।

चौथा टारगेट है। इस पहले अडॉप्टी ग्रुप, बैंक डॉर्सों के ब्लॉक और काल इकन की प्रमुख फर्म इकन एंटरप्राइजेज को हिंडनबर्ग टारगेट कर चुकी है। नाथन एंडरसन हिंडनबर्ग को ऑपरेट करते हैं।

रूस में फंसे यात्रियों को सही-सलामत सैन फ्रांसिस्को पहुंचाएगी एयर इंडिया, विमान में कई अमेरिकी सवार

नई दिल्ली। दिल्ली से सैन फ्रांसिस्को जा रहे एयर इंडिया के एक विमान को तकनीकी खराबी के चलते रूस डायवर्ट कर दिया गया था। विमान में 216 यात्री और चालक दल के 16 सदस्य मौजूद थे। अब एयर इंडिया के अधिकारियों ने जानकारी दी है कि मुंबई से रूस के लिए एक विमान भेजा जाएगा। इस विमान से के सभी यात्री और चालक दल सैन फ्रांसिस्को के लिए रवाना होंगे।

खराब हुआ था विमान

गौरतलब है, एयर इंडिया के अधिकारियों ने बताया था कि दिल्ली-सैन फ्रांसिस्को एयर इंडिया के एक विमान के इंजन में तकनीकी खराबी आ गई थी। पायलट ने तुरंत नजदीकी रूस के मगदान हवाई अड्डे से संपर्क किया और उड़ान को डायवर्ट करने की इजाजत मांगी। इसके बाद विमान को सुरक्षित रूप से उतारा गया था। बताया गया था कि यात्रियों को किसी भी तरह की कोई परेशानी नहीं होने दी जा रही है। साथ ही जल्द से जल्द उनके गंतव्य तक पहुंचने के



लिए जरूरी व्यवस्था करने की बात कही गई थी। बताया जा रहा है कि इस विमान में कई अमेरिकी के लोग सवार हैं।

यात्रियों को राहत

अब एयर विमान ने बयान जारी कर रूस के मगदान हवाई अड्डे पर फंसे लोगों को परेशानी कम कर दी है। बयान में कहा गया है कि एक विमान मुंबई हवाई अड्डे से रूस के मगदान के लिए उड़ान भरेगा। बाद में, वहां से ये विमान 216 यात्री और चालक दल के 16 सदस्यों को लेकर सैन फ्रांसिस्को के लिए रवाना होगा। बयान में कहा गया है कि ये परेशानी नहीं होने दी जा रही है। साथ ही जल्द से जल्द उनके गंतव्य तक पहुंचने के

एचडीएफसी के बॉस ने कर्मचारी से कर दी ऐसी हरकत कि बैंक को करना पड़ा सरस्पेंड

नई दिल्ली। सोशल मीडिया पर इन दिनों एक वीडियो खूब वायरल हो रहा है। इस वीडियो ने देश में निजी क्षेत्र के सबसे बड़े बैंक एचडीएफसी बैंक के वर्क कल्चर पर बड़े सवाल खड़े कर दिए हैं। लिंकडइन पर सीमा चक्रवर्ती नामक एक यूजर की ओर से साझा किए गए वीडियो ने एचडीएफसी बैंक में कर्मचारियों के साथ किए जाने वाले व्यवहार पर प्रकाश डाला है। कई अन्य यूजर्स की ओर से साझा किए जाने के बाद तेजी से यह वीडियो वायरल हुआ है। इस वीडियो में बैंक के वरिष्ठ उपाध्यक्ष पुष्पल राय के नेतृत्व में कर्मचारियों के अनुभवों का प्रत्यक्ष विवरण दिखाया गया है।

बंगाली भाषा में बने इस वीडियो में राय को अपने अधीनस्थों को उनके काम की स्थिति और लक्ष्यों के बारे में चर्चा के दौरान उनसे



बदतमीजी करते देखा जा सकता है। उनका कठोर लहजा और कर्मचारियों को शटअप कहना विशेष रूप से अपमानजनक है। वीडियो में राय को जॉन नाम के एक कर्मचारी से कहते हुए दिखाया गया है, आपके लिए, मेरा सीपीआई स्कोर 77 है। आज, मैं आपको और डिथिर को एक एचआर मेमो जारी

करूंगा। हालांकि सोशल मीडिया पर वीडियो के वायरल होने के बाद, एचडीएफसी बैंक ने तत्काल कार्रवाई की और कोलकाता में उक्त बदतमीज अधिकारी को निलंबित कर दिया है। बैंक ने एक बयान जारी कर कहा कि बैंक के आचरण दिशानिर्देशों के अनुसार इस मामले की विस्तृत जांच की जाएगी। एचडीएफसी बैंक ने कार्यस्थल पर किसी भी प्रकार के कटाघात के लिए शून्य सहनशीलता की नीति के लिए अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि की है। हमने सभी कर्मचारियों के साथ गरिमा और सम्मान के साथ व्यवहार करने में अपने विश्वास पर जोर दिया है। इस घटना पर प्रतिक्रिया देते हुए सोशल मीडिया पर कई यूजर्स ने कहा है कि देश में सख्त श्रम कानूनों की जरूरत है। कई लोगों ने अपनी निराशा व्यक्त की कि इस तरह के विशाक्त व्यवहार आजकल विभिन्न संगठनों में प्रचलित हो गए हैं। एक लिंकडइन यूजर ने लिखा, यह सभी विदेशी संस्थाओं की तस्वीर है। कई लोगों ने मांग की है कि ऐसे नकारात्मक व्यवहार में लिंग व्यक्तियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए, सभी कर्मचारियों आत्मसम्मान पर जोर दिया जाए।

डियाजियो के सीईओ का 64 साल की उम्र में निधन

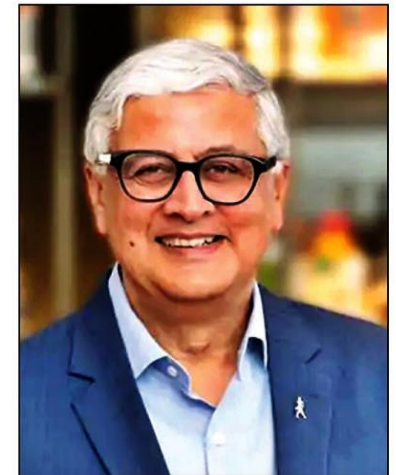
पुणे में जन्मे इवान के पेट में अल्सर था, 2013 में अल्कोहलिक बेवरेज कंपनी के सीईओ बने थे

नई दिल्ली। डियाजियो के सीईओ सर इवान मानेजेस का 64 साल की उम्र में निधन हो गया। वे भारतीय मूल के थे और इस महीने के अंत में रिटायर होने वाले थे। रॉयटर्स के एक्ससेस किए गए डियाजियो के बयान के अनुसार, उनके पेट के अल्सर का इलाज चल रहा था। हाल ही में उनकी अल्सर की इमरजेंसी सर्जरी हुई थी। इवान मानेजेस 1997 में कंपनी में शामिल हुए थे।

2013 में डियाजियो के सीईओ बने थे

इवान को जुलाई 2013 में डियाजियो के सीईओ के रूप में नियुक्त किया गया था। इवान मानेजेस स्कॉच विस्की एसोसिएशन कार्डिनल के चेयरमैन भी थे। इसके अलावा वे टेपेस्ट्री में 'नॉन-एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर, केलिंग स्कूल ऑफ मैनेजमेंट में ग्लोबल एडवाइजरी बोर्ड के सदस्य, मूवमेंट टु वर्क में ट्रस्टी और रिस्पॉन्सबल ड्रिंकिंग के लिए इंटरनेशनल अलायंस के मेंबर भी थे।

इवान के पिता रेलवे बोर्ड के चेयरमैन थे



पुणे में जन्मे इवान मानेजेस के पिता मैनुअल मानेजेस इंडियन रेलवे बोर्ड के चेयरमैन थे। इवान दिल्ली के सेंट स्टीफंस कॉलेज और इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट अहमदाबाद में पढ़े

थे। उनके भाई विक्टर मैनेजेस सिटी बैंक के पूर्व चेयरमैन और सीईओ हैं।

28 मार्च को हुई थी मानेजेस को रिप्लेस करने की घोषणा

जॉनी वॉकर विस्की, तनकरे जिन और डॉन जूलियो टकोला के मेकर डियाजियो ने 28 मार्च को मानेजेस को रिप्लेस करने के लिए कर्तू की नियुक्ति की घोषणा की थी। कंपनी ने इस दौरान कहा था, इवान के कार्यकाल के दौरान, डियाजियो ने काफी प्रगति की है। कंपनी की वेबसाइट के अनुसार वो प्रीमियम ड्रिंक्स में ग्लोबल लीडर हैं।

200 से ज्यादा ब्रांड्स की बिक्री करता है डियाजियो

डियाजियो अब 180 से अधिक बाजारों में 200 से ज्यादा ब्रांड्स की बिक्री कर रही है। डियाजियो आज, स्कॉच विस्की, वोल्का, जिन, रम, केनेडियन विस्की, लिंकर और टकोला में भी नेट सेल्स वैल्यू में नंबर वन कंपनी है। केवल 8 सालों में कंपनी ने ये मुकाम हासिल किया है।

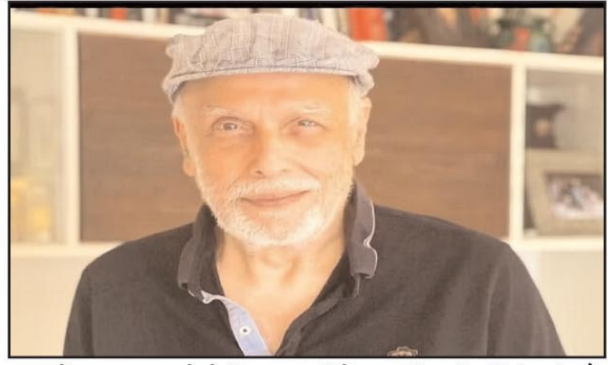
2000 रुपये के नोटों से जुड़ी याचिका पर कोर्ट ने रजिस्ट्री से मांगी रिपोर्ट

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने 2,000 रुपये के नोटों को बदलने के रिजर्व बैंक के फैसले को चुनौती देने वाली याचिका पर तत्काल सुनवाई के मुद्दे पर रजिस्ट्री से रिपोर्ट मांगी। न्यायमूर्ति अनिरुद्ध बोस और न्यायमूर्ति राजेश बिंदल की अवकाशकालीन पीठ ने याचिकाकर्ता वकील अश्विनी उपाध्याय की ओर से उच्चतम न्यायालय ने 2,000 रुपये के नोटों को बदलने के रिजर्व बैंक के फैसले को चुनौती देने वाली याचिका पर तत्काल सुनवाई के मुद्दे पर रजिस्ट्री से रिपोर्ट मांगी। न्यायमूर्ति अनिरुद्ध बोस और न्यायमूर्ति राजेश बिंदल की अवकाशकालीन पीठ ने याचिकाकर्ता वकील अश्विनी उपाध्याय की ओर से मामले में तत्काल सुनवाई करने का अनुरोध करने पर यह आदेश पारित किया। शीर्ष अदालत ने एक जून को अधिसूचनाओं को चुनौती देने वाली उपाध्याय की याचिका पर तत्काल सुनवाई के लिए सूचीबद्ध करने से इनकार कर दिया था और कहा था कि वह गर्मी की छुट्टियों के दौरान ऐसी याचिकाओं पर सुनवाई नहीं करेगी। उपाध्याय ने कहा कि यह मुद्दा बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि माओवादी, आतंकवादी और अलगाववादी धन का आदान-प्रदान कर रहे हैं और मीडिया में ऐसी खबरें हैं कि 80 हजार करोड़ रुपये के नोट बदले गए हैं। पीठ ने कहा, हम मीडिया में आई खबरों पर गौर नहीं कर सकते। आप मामले का उल्लेख करें, इस बीच, हमें रजिस्ट्री रिपोर्ट देखने दीजिए। मामले में तत्काल सुनवाई करने का अनुरोध करने पर यह आदेश पारित किया। शीर्ष अदालत ने एक जून को अधिसूचनाओं को चुनौती देने वाली उपाध्याय की याचिका पर तत्काल सुनवाई के लिए सूचीबद्ध करने से इनकार कर दिया था और कहा था कि वह गर्मी की छुट्टियों के दौरान ऐसी याचिकाओं पर सुनवाई नहीं करेगी।

यंग थे तो खूब शराब पीते थे महेश भट्ट

- अनुपम खेर छोड़ने आते थे घर

मुंबई (ईएमएस)। फिल्ममेकर महेश भट्ट जब यंग थे तो खूब शराब पीते थे। उन्होंने कहा कि वह गुस्सेल, असंतुष्ट और असफल व्यक्ति थे। उन्हें लगता था कि शराब पीकर वह अपनी हताशा और असफलताओं को दूर कर रहे हैं। वह शराबी थे ये खुलासा किया था स्वयं महेश भट्ट ने। महेश ने एक बार अनुपम खेर के शो द अनुपम खेर शो में खुलासा किया था। उन्होंने बताया कि शराब छोड़ने का फैसला उन्होंने क्यों और कैसे लिया? उन्होंने बताया कि जब वह शराब पीकर नशे में धुत हो जाते थे, तब अनुपम उन्हें घर छोड़ने जाते थे। फिल्ममेकर महेश भट्ट ने कहा, जब एक आदमी खुद से असंतुष्ट होता है, वह दुनिया से असंतुष्ट होता है। मैं अपने आप से असंतुष्ट था। मुझे पता था कि मैंने अपनी क्षमता के मुताबिक कुछ भी हासिल नहीं किया है। मैं बेसब्र था। लेकिन फिल्ममेकर यह नहीं छिपा सकते कि वे कौन हैं; उनका सच हमेशा पर्दे पर दिखता है।



राज खोसला कहा करते थे कि एक फिल्मकार अपनी काल्पनिक कहानियों से नंगा हो जाता है। जब महेश भट्ट से पूछा गया कि उन्होंने किस दिन शराब छोड़ने का फैसला किया, तो उन्होंने कहा, मेरी बेटी शाहीन का जन्म हुआ था, और उसके जन्म के कुछ दिनों बाद तक मैंने शराब पीना जारी रखा। जब वह घर आईं, तो मैंने उसे अपनी बाहों में उठा लिया, और मुझे लगा कि उसने मुझसे अपना मुँह फेर लिया है। मुझे

रिजेक्शन की गहरी फीलिंग हुई, और मैंने खुद से वादा किया कि मैं दोबारा नहीं पीऊंगा। महेश भट्ट ने आगे कहा, मैंने 26 साल पहले शराब पीना छोड़ दिया था और तब से मैंने एक बूंद भी नहीं पी है। महेश भट्ट ने बताया कि उनकी फिल्म डैडी उनकी लाइफ के जीवन के उतार-चढ़ाव से इंस्पायर है। उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि वह एक अकेले व्यक्ति हैं, लेकिन कहा कि उनका अकेलापन उनकी रचनात्मकता को बढ़ावा देता है।

पाक एक्टर जावेद शेख ने ली थी मात्र 1 रुपये फीस

- ओम शांति ओम में किया था शाहरुख के पिता का रोल

मुंबई (ईएमएस)। पाकिस्तानी एक्टर जावेद शेख ने शाहरुख खान की फिल्म ओम शांति ओम में काम करने के लिए मात्र एक रुपया लिया। जावेद शेख ने ओम शांति ओम में शाहरुख के पिता का रोल प्ले किया था। इस फिल्म को फराह खान ने डायरेक्ट किया था। जावेद शेख ने बताया है कि आखिर उन्होंने ओम शांति ओम के लिए सिर्फ एक रुपये की फीस क्यों ली थी? एक इंटरव्यू में जावेद शेख से पूछा गया था कि ओम शांति ओम में काम करने का उनका एक्सपीरियंस कैसा रहा। जावेद शेख ने बताया कि फराह खान ने खुद उन्हें अपनी इस फिल्म के लिए चुना था और बाद में पैमेंट को लेकर बात हुई जावेद शेख ने बताया, उनके मैनेजर मेरे पास आए और कहा कि उन्हें कॉन्ट्रैक्ट पर साइन की आवश्यकता है। मैंने हां कह दिया। तुम्हारी फीस क्या होगी? मैंने कहा कि मैं कोई पैसा नहीं लूंगा। बात यह है कि सबसे पहले तो यह मेरे लिए सम्मान की बात है कि मैं शाहरुख की अब तक की सबसे बड़ी फिल्म में उनके पिता का किरदार निभा रहा हूँ। इंडिया में बहुत सारे एक्टर हैं। आप किसी को भी चुनेंगे तो वह शाहरुख के पिता के रोल के लिए खुशी-खुशी तैयार हो जाएँगे। लेकिन



शाहरुख और फराह खान ने मुझे चुना, और यह मेरे लिए सम्मान की बात है। इसलिए फराह और शाहरुख की वजह से मैं कोई पैसा नहीं लूंगा लेकिन फराह खान के मैनेजर ने मानने से इनकार कर दिया और कहा कि यह रूल के

खिलाफ है। काफी देर तक इसी पर बात चलती रही। और फिर जावेद शेख ने उनसे कहा कि आप जाओ और शाहरुख के कह दो कि मैं सिर्फ एक रुपया लूंगा। और मैं मजाक नहीं कर रहा हूँ। इसके बाद ओम शांति ओम की टीम ने



खुद ही तय किया कि मुझे कितनी फीस मिलेगी। जावेद शेख के मुताबिक, बाद में जब उन्हें उनका पहला चेक मिला तो पैसे देखकर हैरान रह गए थे। ओम शांति ओम 2001 में रिलीज हुई थी और यह हिट रही थी।

जरा हटके जरा बचके ने उम्मीदों से परे की ओपनिंग की

- एक पर एक फ्री ऑफर ने मचाई खलबली

मुंबई (ईएमएस)। बालीवुड एक्टर विकी कोशल और सारा अली खान अभिनीत जरा हटके जरा बचके ने उम्मीदों से परे ओपनिंग की। ऑनलाइन बुक माइ शो पर टिकट बुक कराने पर एक पर एक फ्री का ऑफर था। इसने पहले दिन 5.75 करोड़ की कमाई की, जो महामारी के बाद में रिलीज हुई कुछ बड़ी फिल्मों से काफी बेहतर है। जब से ऑफर पेश किया गया था, तब से फिल्म के टिकटों की बिक्री में अमानक उछाल देखा गया था। शरूआत में यह ऑफर केवल शुक्रवार के दिन के लिए वैध था। लेकिन शरूआत शाम को इस ऑफर को रविवार, 4 जून तक के लिए बढ़ा दिया गया। दिलचस्प बात यह है कि यह ऑफर एकमात्र कारण नहीं है जो दर्शकों को कॉमेडी-ड्रामा देखने के लिए आकर्षित कर रहा है। मुंबई में एक मल्टीप्लेक्स के एक अधिकारी ने बताया, एक टिकट खरीदें-एक-पाए-मुफ्त टिकट का लाभ तभी उठाया जा सकता है जब कोई व्यक्ति ऑनलाइन टिकट बुक करता है।



लेकिन हमने कई दर्शकों को उस काउंटर से टिकट खरीदते देखा जहाँ ऑफर मान्य नहीं है। इससे पता चलता है कि दर्शक न केवल ऑफर के कारण फिल्म देखने आ रहे हैं, बल्कि इसलिए भी क्योंकि वे वास्तव में फिल्म में रुचि रखते हैं। एक अन्य मुंबई मल्टीप्लेक्स के मैनेजर ने टिप्पणी की, निर्माता सामान्य मूल्य निर्धारण के लिए गए हैं न कि बल्लोक्बस्टर मूल्य निर्धारण के लिए। उसके ऊपर, दर्शकों को ऑफर के माध्यम से एक टिकट मुफ्त मिला। और प्रस्ताव के बिना भी, उचित कोमर्श ने एक बड़ी भूमिका निभाई, खासकर जब सप्ताह की दूसरी

फिल्म, स्पाइडर-मैन: अक्रॉस द स्पाइडर-वर्स, ने टिकट दरों को थोड़ा बढ़ा दिया। साथ ही, जरा हटके जरा बचके एक साफ-सुथरी एंटरटेनर है, जिसे परिवारों पर लक्षित किया गया है। गाना फिर और क्या चाहिए ने काफी सपोर्ट दिया है। आईपीएल का सीजन खत्म हो गया है और लोग पुरसत और मनोरंजन के लिए बाहर आना चाहते हैं। एक अन्य कारक यह है कि मई में केरल स्टोरी को छोड़कर कोई बड़ी हिंदी रिलीज नहीं हुई थी। बहुत से लोगों ने लंबे समय से बड़े पर्दे पर कोई हिंदी फिल्म नहीं देखी है और जरा हटके जरा बचके सही समय पर आई है।

पिता के निधन के बाद मां का पूरा ख्याल रख रहे आयुष्मान



एक्टर आयुष्मान खुराना इन दिनों अपनी मां की देखभाल में काफी समय दे रहे हैं। हालांकि उनका परिवार काफी दूर से गुजर रहा है। पिछले महीने एक्टर के पिता पी. खुराना का निधन हो गया था, जिससे उनके परिवार को बड़ा सदमा लगा। पिता के जाने के बाद आयुष्मान अपनी मां का पूरा ख्याल रख रहे हैं। हाल ही में मां की केयर करते का एक्टर का वीडियो सोशल मीडिया पर

सामने आया है, जो फैंस का खूब दिल जीत रहा है। दरअसल, सोमवार रात आयुष्मान खुराना को उनके परिवार के साथ एयरपोर्ट पर छोड़ा गया, वह अपनी मां और भाई अपारशक्ति के साथ नजर आए। इस दौरान दोनों भाई अपनी मां पूरम को संभालते हुए दिखे। यह वीडियो फैंस का खूब दिल जीत रहा है और वे कमेंट कर एक्टर के इस अंदाज की तारीफ भी कर रहे हैं।

कभी खाना खाते हुए नवाज को निकाल दिया था बाहर

- वजह थी मेन लीड एक्टर के लिए रखा खाना

मुंबई (ईएमएस)। बालीवुड एक्टर नवाजुद्दीन सिद्दीकी ने एक इंटरव्यू में अपने स्टूडियो के दौर को याद किया, जब वह फिल्मों में कुछ भी नहीं थे। एक बार नवाजुद्दीन को सिर्फ इस बात पर कॉलर से पकड़कर बाहर निकाल दिया गया था, क्योंकि वह उस जगह खाना खा रहे थे, जहाँ मेन लीड (हैरि-हैरि-हैरि) खाते हैं। नवाजुद्दीन सिद्दीकी ने 1999 में आमीर खान स्टार सरफरोश में एक छोटे से रोल से एक्टिंग डेब्यू किया था। इसके बाद उन्होंने कई फिल्मों में छोटे-मोटे किरदार निभाए। हालांकि इस दौरान उनके साथ गलत बर्ताव किया जाता था। नवाजुद्दीन सिद्दीकी ने अपने करियर के स्टूडियो भरे दौर को याद किया। सेट पर खाने की व्यवस्था और खुद के साथ हुए बर्ताव पर नवाजुद्दीन ने कहा, यहाँ खाने का अरेंजमेंट भी अलग-अलग होता है। जूनियर आर्टिस्ट के लिए अलग होता है। जो बड़े आर्टिस्ट होते हैं, उनके लिए अलग और जो मेन आर्टिस्ट होते हैं, उनका भी अलग होता है। लेकिन कुछ प्रोडक्शन्स में सारे आर्टिस्ट एक साथ



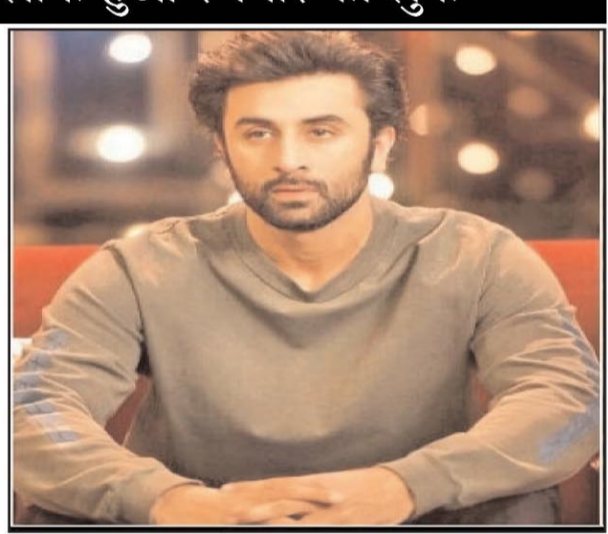
खाते हैं। जब खाना लगता है तो सब एक साथ खाते हैं। बहुत सारे ऐसे प्रोडक्शन्स हैं, जहाँ अलग-अलग व्यवस्था होती है। कई बार मैंने कॉन्शश की कि मेन एरिया में जाकर खाऊँ, जहाँ लीड लोग खाते हैं। लेकिन वहाँ से कॉलर पकड़ा और भगा दिया गया। फिल्मों में छोटे-मोटे किरदारों के अलावा नवाजुद्दीन सिद्दीकी ने टीवी सीरियलों में भी काम किया। एक समय तो ऐसा भी आया, जब नवाजुद्दीन के पास एक रुपया भी नहीं था और खाना खाए हुए भी कई दिन हो गए थे। तब उन्होंने एक सीनियर एक्टर से 50 रुपये उधार

माँगे। नवाजुद्दीन ने उस बारे में बताया कि उस सीनियर एक्टर की हालत भी ठीक नहीं थी। एक्टर की तरह उनका भी काम नहीं चल रहा था। सीनियर एक्टर के पास सिर्फ 100 रुपये थे, जिसमें से 50 रुपये नवाजुद्दीन को दे दिए। तब नवाजुद्दीन सिद्दीकी और वह सीनियर एक्टर अपनी हालत देख बुरी तरह रो पड़े थे। नवाजुद्दीन सिद्दीकी को पीपली लाइव और कहानी जैसी फिल्मों से पहचान मिलनी शुरू हुई, और फिर गैंग ऑफ वासेपुर ने उनकी किस्मत ही पलट दी। नवाजुद्दीन सिद्दीकी ने फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा।

एनिमल को लेकर सुर्खियों में रणबीर कपूर

- सेट से लीक हुआ रणबीर का लुक

मुंबई (ईएमएस)। आजकल बालीवुड एक्टर रणबीर कपूर एनिमल को लेकर सुर्खियों में हैं। इस मूवी को लेकर लोगों के बीच दीवानगी देखने को मिल रही है। इस बीच फिल्म से जुड़ा एक क्लिप सामने आया है। दरअसल, फिल्म से रणबीर का नया लुक काफी वायरल हो रहा है, जिसे देखने के बाद फैंस उनके लुक की तारीफ करते नहीं थक रहे। वायरल हुए वीडियो में रणबीर एक क्लासरूम में खड़े देखे जा सकते हैं। वह स्टूडेंट यूनिफॉर्म में हैं, और अपने टीचर से बात कर रहे हैं। वीडियो को रणबीर कपूर यूनिवर्स ने शेयर किया है। यह कुछ सेकेंड की क्लिप है, जिसमें क्लोन शेव में रणबीर का स्टूडेंट लुक लोगों को काफी अट्रैक्ट कर रहा है। फैंस का मानना है कि 40 की उम्र में भी रणबीर बहुत क्यूट हैं। सोशल मीडिया पर वायरल हुए एनिमल के सेट से लीक हुए वीडियो को लेकर कई लोगों ने टाबा किया है कि यह पिछले साल के शूट शूटलु से है। हालांकि, इसे देखकर लोगों के बीच



फिल्म देखने का उत्साह और ज्यादा बढ़ गया है। रणबीर कपूर की फिल्म एनिमल एक गैंगस्टर फैमिली की कहानी है। इस मूवी में एनिमल कपूर भी हैं, जो रणबीर के पिता के रोल में दिखेंगे। इसके अलावा बाँबी देओल, रश्मिका मंदाना और शक्ति कपूर भी अहम किरदार निभाते नजर आएँगे।

एनिमल फिल्म इसी साल 11 अगस्त को रिलीज होगी। बता दें कि रणबीर की फिल्म तू झूठी मैं मक्कार ने बॉक्स ऑफिस पर रिकॉर्ड तोड़ कमाई की है। पठान के बाद और द केरल स्टोरी से पहले यह 2013 की दूसरी मूवी थी, जिसने ताबड़तोड़ कलेक्शन किया।

रवीना बेटी राशा ने मुँह मिठा कराकर वादा किया पूरा

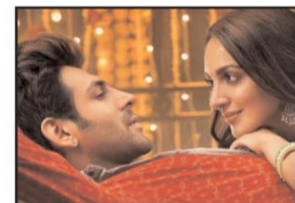


बालीवुड एक्ट्रेस रवीना की लाडली राशा थडानी हाल ही स्कूल ग्रेजुएट हुईं। जब उन्हें पपाराजी ने मुंबई एयरपोर्ट पर स्पॉट किया था, तो मिठाई मांग ली थी। तब राशा ने वादा किया था कि अगली बार जब मिलेंगी तो पक्का ही मिठाई लेकर आएँगी। राशा थडानी ने अपना वादा निभाया। इस बार जब राशा थडानी मुंबई एयरपोर्ट पर नजर आईं तो साथ में मिठाई लेकर पहुँचीं। रवीना टंडन की बेटी राशा ने खुद अपने हाथों से पपाराजी को मिठाई बाँटी। राशा थडानी सभी के लिए काजू कतली

लेकर आई थीं। उन्होंने डिब्बा खोलकर सभी पपाराजी और फोटोग्राफर्स को मिठाई बाँटनी शुरू कर दी। काजू कतली बाँटते हुए राशा कह रही हैं कि लाइट टाइम कहा था ना? राशा का यह वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है, और फैंस खूब तारीफ कर रहे हैं। मिठाई बाँटते वक्त खुद राशा ने भी एक पीस खाया। राशा थडानी के इस वीडियो को इंस्टाग्राम पर शेयर किया गया है। इस पर यूजर्स के खूब कमेंट आ रहे हैं। एक यूजर ने लिखा है, लड़की दिलदार है भाई।

फिल्म सत्यप्रेम की कथा का ट्रेलर हुआ रिलीज

कार्तिक आर्यन और कियारा आडवाणी की अपकॉमिंग फिल्म सत्यप्रेम की कथा का ट्रेलर रिलीज कर दिया गया। ट्रेलर में कार्तिक सत्यप्रेम के रोल में हैं। सत्यप्रेम एक गुजराती व्यक्ति है और शादी करने के लिए बेताब है। वह कथा नाम की लड़की से मिलता है, जिसका किरदार कियारा ने निभाया है। धीरे-धीरे दोनों को एक-दूसरे से प्यार हो जाता है।



फिल्म को इसका शीर्षक इसके प्रमुख पात्रों और उनकी प्रेम कहानी से मिला है। ट्रेलर लगभग तीन मिनट का है।

योद्धा में दिखेंगे एक्टर प्रशांत गोस्वामी

एक्टर प्रशांत गोस्वामी जल्द ही सिद्धार्थ मल्होत्रा, राशि खन्ना और दिशा पटानी के साथ आगामी फिल्म योद्धा में नजर आएँगे। बता दें कि एक्टर प्रशांत गोस्वामी को हाल ही में रिलीज हुई स्ट्रीमिंग सीरीज स्कूप में उनके काम के लिए उन्हें सकारात्मक प्रतिक्रियाएं मिल रही हैं। एक्टर ने फिल्म इंडस्ट्री में अपनी यात्रा के बारे में बात करते हुए कहा, मैंने 2013 में इस उद्योग में अपने कदम जमाए और इस परिमाण के प्रोजेक्ट को ओटीटी प्लेटफॉर्म पर रिलीज होने में पूरे 10 साल लग गए। मेरे जाने-पहचाने



लोगों से जो प्रतिक्रियाएं मुझे मिल रही हैं वह मेरे दिल को बहुत भाती हैं। यह दर्शाता है कि सफलता जरूर मिलती है। यह साबित करता है कि सपने पूरी तरह हकीकत में बदल रहे हैं। उन्होंने आगे कहा, यहाँ तक कि शो देखते हुए भी, मैं कहीं न कहीं याद कर रहा था कि यह सब कैसे हुआ और मुझे इस भूमिका को निभाने के लिए चुना गया।

सूडोकु नवताल - 6455 * * * * *

4	9	6	1	8
6	8			
	1	7	3	8
3	4	6	7	
5	1	8		2
2		5	1	8
	3	7	5	8
				9
7	6	2	8	1

सूडोकु नवताल - 6454 का हल

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरने वाले आवश्यक हैं।
 ■ प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3x3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें।
 ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।
 ■ पहली का केवल एक ही हल है।

2	9	8	3	5	6	1	7	4
4	5	3	2	1	7	9	8	6
7	1	6	4	8	9	2	5	3
8	2	5	6	9	1	3	4	7
3	6	4	7	2	5	8	1	9
1	7	9	8	3	4	5	6	2
5	4	1	9	7	2	6	3	8
6	3	2	1	4	8	7	9	5
9	8	7	5	6	3	4	2	1

शब्दजाल - 7202

आ हु मे रि द इ शी श म ट र्जी
 का म क ची इ जी ने शि दे इ अ
 ब पी जा ह र ग बा द व प शो
 ला ग ए ई जा भ ब ल दा लि क
 सा ग वा न जी ह ला कि र प म
 पी इ वि मो ग ब र ग द गी स
 न प ल र व मा जो न व प त
 क रि ल र य र प नी म वि रे
 र या बा बे ह न ज जी शा जू छी
 र ग ल नो ला व गु ल मो ह र
 बां स सा ए न स मे व क ल

शब्दजाल में दस 'वृक्षों' के नाम ढूंढिए, दिए गए नाम उपर से नीचे व तिरछे हो सकते हैं।

बरगद, पीपल, नीम, अशोक, गुलमोहर, आम, शीशम, देवदार, चीड़, सागवान

शब्दजाल - 7201 का हल

जो य जें द्र कु मा य वा ज पे यी
 द गा ल प्रे व जी म द ह कां र
 स स प का को ह र खे ल मे प
 मि त स व वे वा ज घ रो श डु
 श आ ल ग म शे ना तू वी इ प
 न ल ला लु दि म गो ती ना घ य
 क व वि ना ब प दा ज ती व मु
 श एं वा ई द ब व डू ए श ना
 मी ड ल फू ल औ शे आ ग शी आ
 र गॉ ल प लि जी शी व्या स री द
 वि ज अ ब्र म्ह पु त्र त ब प म

अष्टयोग - 6155

7	5	2		
	38	32	1	27
4	3		6	2
	29	2	45	33
1	3		5	4
	24	1	36	4
6	4	7	5	3

अष्टयोग 6154 का हल

7	4	5	2	3	6	1
5	38	3	32	1	27	7
4	3	7	5	6	1	2
3	29	2	45	7	33	6
1	3	6	7	5	2	4
2	24	1	36	4	30	5
6	1	4	7	2	5	3

प्रस्तुत खेल सूडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है, खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं, गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों ओर के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी, सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है।



मैच फिक्सिंग के आरोप में दो चीनी स्नूकर खिलाड़ियों पर आजीवन प्रतिबंध

लंदन। **वर्ल्ड प्रोफेशनल बिलियार्ड्स एसोसिएशन (डब्ल्यूपीबीएसए) द्वारा मैच फिक्सिंग के लिए दंडित किए गए 10 खिलाड़ियों के समूह में चीनी स्नूकर खिलाड़ियों लियान्ग वेनबो और ली हैंग एर आजीवन प्रतिबंध लगा दिया गया है।**

डब्ल्यूपीबीएसए ने एक बयान जारी कर पुष्टि की कि दस खिलाड़ियों पर मैच फिक्सिंग के आरोप लगे हैं। रिपोर्ट के अनुसार, इसने लियान्ग और ली पर

आजीवन प्रतिबंध लगाया और इसमें शामिल अन्य खिलाड़ियों पर भी काफी निलंबन लगाया। 36 वर्षीय लियान्ग, जो पिछले अक्टूबर से स्नूकर स्पर्धाओं से निलंबित हैं, को पांच स्नूकर मैचों में हेरफेर करने का दोषी पाया गया, अन्य खिलाड़ियों को नौ मैच फिक्स करने के लिए राजी करने या सक्षम करने का प्रयास किया गया। उन्होंने स्नूकर मैचों पर भी सट्टा लगाया और डब्ल्यूपीबीएसए जांच में सहयोग करने में विफल रहे। 32 वर्षीय ली पर मैच फिक्सिंग और अन्य खिलाड़ियों को मैच के परिणामों में हेरफेर करने के लिए उकसाने या सुविधा देने का भी आरोप लगाया गया था। इसके अतिरिक्त, 2021 मास्टर

चैंपियन यान बिंगताओ पर 11 दिसंबर 2027 तक पांच साल का प्रतिबंध लगा दिया गया है। झाओ शिंगिंग, जिनके नाम दो रैंकिंग खिताब हैं, को एक साल और आठ महीने का निलंबन मिला है, जो 1 सितंबर 2024 को समाप्त होने वाला है। डब्ल्यूपीबीएसए के अध्यक्ष जेसन फर्ग्युसन ने कहा, यह एक बहुत ही जटिल मामला रहा है। दो वरिष्ठ खिलाड़ियों द्वारा लगाए गए दबाव के कारण कुछ युवा प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को डब्ल्यूपीबीएसए आचरण विनियमों का उल्लंघन करते देखा दिल देहला देने वाला रहा है। मान्यता प्राप्त स्नूकर में किसी भी तरह से भाग लेने पर दो आजीवन प्रतिबंध लगाकर इस व्यवहार को पूरी तरह से

अस्वीकार्य माना गया है। 26 वर्षीय झाओ ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर माफी मांगी। मैं कुछ महीने पहले निर्लंबित किए जाने के बाद से अपनी अज्ञानता और मूर्खता पर पूरी तरह से पछता रहा हूँ। मुझे शर्म आती है क्योंकि मैंने गलती करके सभी को निराश किया। मैं बस सभी से सारी कहना चाहता हूँ। झाओ ने जोर देकर कहा कि उन्होंने कभी कोई मैच फिक्स नहीं किया था या मैच फिक्सिंग के बारे में सोचा भी नहीं था, लेकिन वह सट्टेबाजी में सहायता करने के लिए एक मित्र के अनुरोध को अस्वीकार करने में विफल रहे। मैंने इससे कोई लाभ नहीं कमाया, लेकिन मैंने अपनी मूर्खता को भारी कीमत चुकाई।

न्यूज़ ब्रीफ

जूनियर एशिया कप : भारत ने कोरिया को 2-2 से बराबरी पर रोका, दो गोल से पिछड़ने के बावजूद की वापसी



काकाभिगाहारा। भारतीय महिला हॉकी टीम ने यहां जूनियर एशिया कप 2023 के अपने तीसरे मैच में कोरिया के खिलाफ 2-2 से रोमांचक ड्रा खेला। युजिन ली (15) और जियोन चोई (30) ने कोरिया के लिए गोल किए, जबकि दीपिका सोरेंग (43) और दीपिका (54) ने गोल कर भारत को बराबरी दिलाई। भारत ड्रा मैच में अंक बांटने में सफल रहा और पूल ए में शीर्ष पर कायम है। कोरियाई टीम मैच की शुरुआत में ही लय में आ गई और पहले क्वार्टर में भारत पर हावी रही। कोरिया ने कुछ पेनल्टी कॉर्नर हासिल किए लेकिन भुनाने में नाकाम रहा। हालांकि, युजिन ली ने सफल के अंदर से लगाए गए शॉट से मैदानी गोल कर कोरिया को शुरुआती बढ़त दिलाई। कोरिया ने 1-0 की बढ़त के साथ दूसरे क्वार्टर में आक्रामक रुख के साथ प्रवेश किया और भारत पर दबाव बनाने का प्रयास किया। हालांकि, आधे समय के ब्रेक से कुछ मिनेट पहले, भारत ने पलटवार शुरू कर दिया। इस बीच, कोरिया ने गियर बदल दिया और अधिक आक्रामक रूप से खेलना शुरू कर दिया जिससे उन्हें अपनी बढ़त को दोगुना करने में मदद मिली क्योंकि जियोन चोई (30) ने एक पेनल्टी कॉर्नर को पूरी सटीकता के साथ गोल में बदल दिया। मध्यरात के समय कोरिया के पास 2-0 की बढ़त थी। तीसरे क्वार्टर के शुरू कोरिया ने पेनाल्टी कॉर्नर पर प्रयास किया लेकिन भारतीय गोलकीपर अदिति माहेश्वरी ने अच्छा बचाव कर लिया। फिर, भारत ने अपने खेल में सुधार किया और दीपिका सोरेंग (43) ने टीम के लिए मैदान गोल कर दिया। चौथे क्वार्टर में दीपिका (54) ने पेनल्टी स्ट्रोक को आखिरकार बराबरी दिला दी। भारत अब चौथे और भाजिकी पूल ए मैच में आठ जून को चीनी ताइपे से खेलेगा।

एशेन से पहले स्टुअर्ट ब्रॉड की आईसीसी टेस्ट रैंकिंग में टॉप-10 में वापसी

दुबई। इंग्लैंड के तेज गेंदबाज स्टुअर्ट ब्रॉड ने आयरलैंड के खिलाफ एकमात्र टेस्ट में अपने छह विकेट के प्रदर्शन के बाद रैंकिंग में सुधार किया है और अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद द्वारा जारी नवीनतम टेस्ट गेंदबाजी रैंकिंग में बुधवार को शीर्ष 10 में वापस आ गए हैं। आयरलैंड के खिलाफ टेस्ट में दो पारियों में 5/51 और 1/62 के आंकड़े के साथ, ब्रॉड दो स्थान की छलांग लगाकर 744 रैंकिंग अंकों के साथ एशेन से पहले 10वें स्थान पर पहुंच गए। टीम के साथी जेम्स एंडरसन, जो 850 रैंकिंग अंकों के साथ दूसरे स्थान पर हैं और ओली रॉबिन्सन (सातवें, 777 अंक) के साथ शीर्ष 10 में शामिल हो गए। इस बीच, इंग्लैंड के बल्लेबाज हेरी ब्रूक एक पायदान चढ़कर 18वें स्थान पर पहुंच गए, ओली पोप 10 पायदान ऊपर चढ़कर 23वें स्थान पर आ गए और बेन डेकेट आठ स्थान की छलांग के साथ 34वें स्थान पर पहुंच गए, जिन्होंने लॉर्ड्स में आयरलैंड के खिलाफ एकमात्र टेस्ट के बाद पर्याप्त बढ़त हासिल की है।

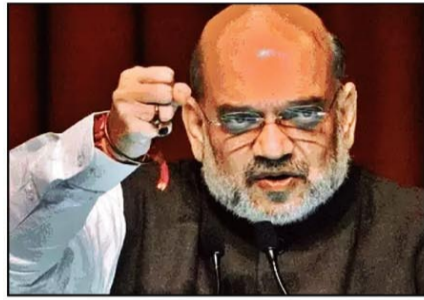
इंग्लैंड के दिग्गज ऑफ स्पिनर मोइन अली ने संन्यास पर लिया यू-टर्न, एशेन में कंगारुओं की बैट बजाने को तैयार

नई दिल्ली। मोइन अली ने टेस्ट क्रिकेट से अपना संन्यास वापस ले लिया है। इंग्लैंड टीम प्रबंधन से एक कॉल का जवाब देने के बाद मोइन को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ होने वाली एशेन सीरीज के लिए टीम में शामिल किया गया है। मोइन ने बताया कि जैक लीच की चोट के बाद उन्हें टीम प्रबंधन से आए कॉल पर विचार करने को कहा गया था। लीच लॉर्ड्स में आयरलैंड पर इंग्लैंड की 10 विकेट की जीत के बाद स्कैन के लिए गए थे, जिसमें उनके पीट के निचले हिस्से में फ्रैक्चर का पता चला था। मोइन ने बेन स्टोक्स, बेंडन मैकुलम और इंग्लैंड के कप्तान, कोच व प्रबंध निदेशक से चर्चा की। इंग्लैंड क्रिकेट बोर्ड ने सुबह घोषणा की कि मोइन टेस्ट क्रिकेट में लौटने के लिए सहमत हो गए हैं। एजबेस्टन और लॉर्ड्स में पहले दो एशेन टेस्ट के लिए उन्हें इंग्लैंड की टीम में शामिल किया गया है। इंग्लैंड के कोच ने कहा कि टेस्ट क्रिकेट में वापसी के लिए हमने इस हफ्ते की शुरुआत में मोइन से संपर्क किया था।

पहलवानों के गृहमंत्री से मिलने के बाद बड़ा बदलाव

रेसलर्स की ड्यूटी जॉइन, बृजभूषण पर दिल्ली पुलिस की सख्ती ; 9 जून का खापों का कार्यक्रम रद्द

पानीपत। रेसलर्य और पूर्व अध्यक्ष बृजभूषण विवाद में नई संसद भवन के सामने 28 मई को हंगामे और पहलवानों की सामने आने के बाद गृह मंत्रालय एक्टिव हुआ। 4 जून को गृहमंत्री अमित शाह के घर वज्रंग विनेश और साक्षी मलिक ने उनसे मुलाकात की जो 2 घंटे चली। इस मुलाकात में कोई तीसरा पक्ष मौजूद नहीं था। बृजभूषण सिंह की गिरफ्तारी की मांग को लेकर 23 अप्रैल से बड़ा प्रदर्शन कर रहे पहलवान अचानक साइंटेंट हो गए। इसका बड़ा कारण अमित शाह से मुलाकात माना जा रहा है। इस बड़ा कारण यह भी है कि इसके तुरंत बाद पहलवानों ने अपनी ड्यूटी जॉइन कर ली। हालांकि बजरंग, विनेश और साक्षी ने साफ किया है कि वह अपनी जिम्मेदारी निभाने के लिए नौकरी पर लौटे हैं, लेकिन इंसाफ के लिए उनको लड़ाई जारी रहेगी। इस पूरे विवाद को वजह से भाजपा के अंदर भी बेचैनी है। एक बड़ा धड़ा बृजभूषण सिंह के खिलाफ कार्रवाई के पक्ष में है।



राज्यसभा पहुंचे थे। सोमबीर सांगवान भी निर्दलीय विधायक हैं। उन्होंने गत विधानसभा चुनाव में भाजपा नेता और पहलवान बनिता फोगाट को हराया था। **सौरभ (मुजफ्फरनगर) की खप पंचायत पर दर्ज अंतर - हरिद्वार में नरेश टिकैत ने पहलवानों से 5 दिन मांगे थे। उन्होंने भरोसा दिलाया था कि इस अवधि में खप पंचायत एवं किसान संगठन कुछन कुछन करेंगे। सौरभ (मुजफ्फरनगर) में हरियाणा, उत्तर प्रदेश और दिल्ली के खप प्रतिनिधियों की बैठक हुई।** माना जा रहा था कि बैठक में कोई बड़ा निर्णय होगा, लेकिन राकेश टिकैत ने कहा, पंचायत ने फैसला ले लिया है और इसकी जानकारी कुरुक्षेत्र में होने वाली खप पंचायत में दी जाएगी। खास बात है कि यही जो पंचायत थी, जब पहली बार यह आवाज सुनाई पड़ी कि पहलवानों का आंदोलन हाईजैक हो रहा है। खप प्रतिनिधियों के बीच मजहबूत जैसा कुछ दिखे। कुरुक्षेत्र की पंचायत में कुछ खास नहीं हुआ। वहां भी सरकार को 9 जून तक का समय दे दिया। अगर इस अवधि में बृजभूषण सिंह को गिरफ्तार नहीं किया गया तो किसान संगठन एवं खप पंचायत, दोबारा से पहलवानों को लेकर जंतर मंतर पर पहुंच जाएंगी। जिस वक्त कुरुक्षेत्र की खप पंचायत चल रही थी, उसी समय खबर आई कि बृजभूषण सिंह की अयोध्या में होने वाली रैली स्थगित कर दी गई है। ये संयोग नहीं था, बल्कि पहलवानों के आंदोलन में केंद्र सरकार की एंटी का इफेक्ट था।

हरियाणा और के.इन नेताओं ने निभाई मध्यस्था की भूमिका - मुजफ्फरनगर के सांसद और केंद्रीय राज्य मंत्री डॉक्टर संजोव बालियान ने पहलवानों से बात की। उनकी मुलाकात केंद्र में एक शीर्ष नेता से कराने का भरोसा दिया। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, बागपत के सांसद सत्यपाल सिंह भी इस विवाद में मध्यस्थ की भूमिका में नजर आए। केंद्र सरकार किसी भी तरह से पहलवानों के मामले को शांत कराने की ठान चुकी थी, इसलिए पहलवानों के साथ बातचीत का दौराफा संवाद शुरू हुआ। एक तरफ हरियाणा और दूसरी ओर यूपी के नेता, इसके लिए आगे आए। हरियाणा से जुड़े एक खप प्रतिनिधि के मुताबिक, जंतर मंतर से लगते करल हाउस में पहलवानों और केंद्र सरकार के मध्यस्थों की बैठक हुई। यह बैठक मई के अंतिम सप्ताह में हुई थी। यहीं से पहलवानों के साथ अमित शाह की मुलाकात का रास्ता खुला। शाह की बैठक के लिए हरियाणा से राज्यसभा सांसद कार्तिकेय शर्मा, चरखी दादरी के विधायक सोमबीर सांगवान और भाजपा शासित एक बड़े प्रदेश के राज्यपाल प्रयासरत रहे। खास बात यह है कि हरियाणा से कार्तिकेय शर्मा बतौर निर्दलीय प्रत्याशी,

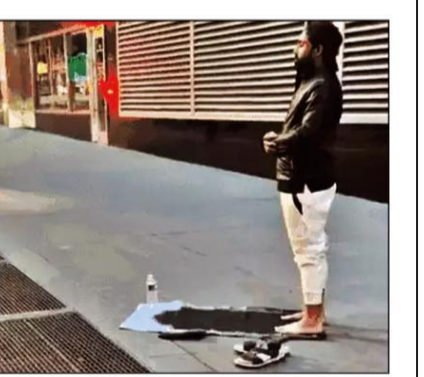
आयोजित महापंचायत में 5 राज्यों की खापों ने भाग लिया था। यहां पर पहलवान भी पहुंचे थे। इस पंचायत के दौरान खप प्रतिनिधियों के पास गृह मंत्रालय से कॉल आनी शुरू हुई। जिस कॉल में इस मुद्दे पर बातचीत के जरिए हल निकालने जैसी बात कही गई थी। जिस पर खाप प्रतिनिधियों ने कहा था कि वे इस बारे में पहलवानों से बात करें। उनकी संतुष्टि होनी जरूरी है। उम्मीद जताई जा रही है कि इसी दिन से ही गृहमंत्रालय से खिलाड़ियों को बातचीत के टेबल पर लाने के प्रयास शुरू कर दिए थे।

केंद्र गिरफ्तारी पर राजी नहीं - मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, केंद्र पहलवानों की 5 मांगों को मानने को तैयार है। इनमें महिला कुशती कैम्प लखनऊ से पटियाला, आरोपी कोच को हटाने, संसद कराने, पहलवानों पर दर्ज के केस वापस लेने और महिला कुशती की कमान किसी महिला को सौंपना शामिल है। केंद्र पहलवानों से बातचीत के लिए 4 मंत्रियों की कमेटी बना रहा है। केंद्रीय खेल मंत्री अनुराग ठाकुर, एक महिला मंत्री के अलावा 2 और मंत्री होंगे। मगर, बृजभूषण की गिरफ्तारी और फेडरेशन से पूरी तरह बेदखल करने की शर्त पर सरकार राजी नहीं है। सरकार का कहना है कि पहलवान चाहें किसी भी एजेंसी से जांच करा लें, लेकिन वे सीधे बृजभूषण को गिरफ्तार करने का आदेश नहीं दे सकते। हालांकि की सुनवाई फास्ट ट्रैक कोर्ट में चलाने को लेकर भी सरकार की शर्त है कि पहलवान धरना छोड़ खेल में लौटें।

असमजस का दौर जारी - अब तक पुछा ढंग से ये नहीं पता है कि पिछले कुछ घंटों में पर्दे के पीछे ऐसा क्या कुछ हुआ जिसकी वजह से पहलवानों की अमित शाह से मुलाकात हुई और इस मुलाकात का सुरक्षा कोन रहा। इस समय सबसे बड़ा सवाल ये है कि पहलवानों के अपनी नौकरी पर वापस लौटने के बाद भी क्या वे विरोध प्रदर्शन जारी रखें। सामल ये भी है कि अगर पहलवान अपनी नौकरी पर जाना जारी रखते हैं तो इस आंदोलन का नेतृत्व कौन करेगा। खापों को अपनी बड़ी मजबूती बता रहे पहलवानों के लिए यह भी झटके वाली खबर है कि खापों ने अब सब कुछ खिलाड़ियों पर ही छोड़ दिया है।

मोहम्मद रिजवान ने अमेरिका में सड़क पर नमाज पढ़ी: 2021 टी-20 वर्ल्ड कप में भारत-पाक मैच के दौरान ग्राउंड पर नमाज अदा की थी

नई दिल्ली। पाकिस्तान क्रिकेट टीम के विकेटकीपर बल्लेबाज मोहम्मद रिजवान ने अमेरिका में सड़क किनारे नमाज पढ़ी। इसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। रिजवान कप्तान बाबर आजम के साथ हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के बिजनेस ऑफ एंटरटेनमेंट, मीडिया और स्पोर्ट्स से जुड़े एक एग्जीक्यूटिव प्रोग्राम में भाग लेने अमेरिका गए हुए हैं। यह प्रोग्राम नैसायुसेट्स में 31 मई से 3 जून तक हुआ। रिजवान ने क्लासमेट को टी वीडियो



खेले गए थे। भारतीय पारी के दौरान ड्रिक्स के दौरान रिजवान ने ग्राउंड पर ही नमाज अदा की थी। इस मैच में भारत 10 विकेट से हार गया था। पहली बार भारत को पाकिस्तान से वर्ल्ड कप के किसी फॉर्मेट में हार का सामना करना पड़ा था।

टी-20 वर्ल्ड कप में भारत-पाक मैच के दौरान रिजवान ने ग्राउंड पर पढ़ी थी नमाज

रिजवान और बाबर ने क्लासमेट के साथ फोटो भी शेयर की थी। रिजवान ने क्लासमेट को कुचुप भी भेंट की। इसकी फोटो उन्होंने शेयर की।

सड़क पर नमाज पढ़ना: भारत में आम, मुस्लिम देशों में गैर कानूनी

सड़क पर नमाज पढ़ना भारत में आम है, लेकिन इस्लामिक देशों में खले में नमाज पढ़ना गैर कानूनी है। सऊदी अरब में गाड़ी रोककर नमाज पढ़ने को कानून का उल्लंघन माना जाता है। इसी तरह दुबई शहर में सड़क पर नमाज पढ़ने पर जुर्माना लगाया जाता है।

मैच से पहले नौद की गोली खाकर गलती की: सितसिपास

पेरिस। रौला-गैरो में क्वार्टर फाइनल में कार्लोस अल्काराज से मिली हार के बाद स्टेफानोस सितसिपास ने कहा कि मैच से पहले उन्होंने नौद की गोली खाकर गलती की।

ग्रीक खिलाड़ी को पहले दो सेटों में 20 वर्षीय खिलाड़ी ने पूरी तरह से मात दी और हालांकि वह 2-5 से पिछड़ने के बाद वापस आये और पांच मैच प्वाइंट बचाए, लेकिन वह दुनिया के नंबर 1 खिलाड़ी को 6-2, 6-1, 7-6(5) से जीतने से नहीं रोक सके। सितसिपास ने मैच के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा, मैं भविष्य में मेलाटोनिन की गोतियां लेने और मैचों से पहले झपकी लेने से बचने की कोशिश कर रहा हूँ क्योंकि यह स्पष्ट रूप से काम नहीं कर रहा है। पिछले कुछ दिनों से शोड्यूल थोड़ा मुश्किल रहा है। मेरे पास कुछ देर रात के सत्र थे। बहुत देर नहीं हुई, लेकिन मेरे लिए इतनी देर हो गई कि मेरी नौद का कार्यक्रम एक तरह से बर्बाद हो



गया। उन्होंने कहा, नौद एक बहुत ही महत्वपूर्ण चीज है, और इस तरह के बड़े स्लैम खेलने और प्रतिस्पर्धा करने पर रिकवरी सबसे महत्वपूर्ण चीज है। सितसिपास ने खुलासा किया कि उन्होंने 2019 में पेरिस मास्टर्स क्वार्टर फाइनल में

सेटों में किया था। इसलिए मुझे लगता है कि मेलाटोनिन वास्तव में 1 और 2 को पसंद करता है। नतीजे का मतलब है कि अल्काराज और नोवाक जोकोविच शुरुआत को सेमीफाइनल में आमने-सामने होंगे और सितसिपास ने कहा कि वह सप्ताह के बाकी दिनों में अल्काराज का समर्थन करेंगे। सितसिपास ने कहा, मैं युवा खिलाड़ियों का समर्थन करता हूँ। उन्होंने शानदार खेला। मेरा मतलब है, मुझे नौद पता कि वह असाधारण खेले, लेकिन उन्होंने शानदार खेला। मेलाटोनिन के नकारात्मक प्रभाव के बावजूद सितसिपास ने कहा कि वह अल्काराज से श्रेय नहीं छीनना चाहते। उन्होंने कहा, मैं कार्लोस से कुछ भी नहीं लेना चाहता। वह अच्छा खेलते हैं। वह जीतने और सब कुछ पाने के हकदार हैं। चलो इसके बारे में बात न करें। मैं वास्तव में इसके बारे में चिंतन हूँ, कि इसका मुझ पर इतना प्रभाव पड़ा।

एआईएफएफ में एक दूसरे के बीच कोई संवाद नहीं: बाईचुंग मूटिया

नई दिल्ली। भारत के पूर्व कप्तान बाईचुंग भूटिया हाल ही में अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) द्वारा एक कोर कमेटी के गठन से बहुत प्रभावित नहीं दिखते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि शीर्ष निकाय के वर्तमान सदस्यों में कोई विश्वास या समन्वय नहीं है जिन्हें इस बारे में कोई जानकारी नहीं है कि कौन क्या कर रहा है। एआईएफएफ ने हाल ही में एक कोर कमेटी का गठन किया है जो अपने महासचिव शाजी प्रभाकरन के साथ मिलकर खेल के कुछ क्षेत्रों का प्रबंधन करेगी। ये क्षेत्र हैं: खरीद और निविदा, बजट और वित्तीय, अवसरचना, कार्यालय नवीनीकरण और नई परियोजना विकास, नए कर्मचारियों की भर्ती या पुराने कर्मचारियों की रिहाई और एनएफसी और क्लब फुटबॉल संगठनात्मक निर्णय। भारतीय फुटबॉल के पोस्टर बॉय बाईचुंग (46) ने खुलकर बातचीत करते हुए देश में खेल से जुड़े मुद्दों पर अपने विचार साझा किए, खासकर खेल की संचालन संस्था में गड़बड़ी पर। बाईचुंग ने कहा, यह एआईएफएफ में सभी के लिए मुफ्त है। अध्यक्ष (कल्याण चौबे) क्या कर रहे हैं, महासचिव क्या कर रहे हैं... एक दूसरे के बीच कोई संवाद नहीं है। जिस तरह से एआईएफएफ चलाया जा रहा है, मैं कहूँगा कि यह पूरी तरह से गड़बड़ है। आपके पास अध्यक्ष कल्याण चौबे हैं जो कई राज्य संघों को दरकिनार कर रहे हैं और उन्हें विश्वास में लिए बिना दूरतमंत आयोजित कर रहे हैं। हमने देखा कि मणिपुर में ऐसा हुआ, जहां राज्य संघ ने एआईएफएफ कार्यकारी समिति को लिखा कि दूरतमंत आयोजित होने पर उन्हें नजरअंदाज कर दिया गया था। बाईचुंग ने कहा, इसी तरह, उन्होंने राज्य संघ को शामिल किए बिना सिक्किम में एक दूरतमंत भी आयोजित किया। उन्होंने एक निजी दूरतमंत आयोजित किया, जिसमें कल्याण चौबे मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद थे। क्लबों को राज्य लीग में मान्यता नहीं मिली थी। इसलिए, मेरे लिए, फेडरेशन एक बड़ी गड़बड़ी की स्थिति में है। मई के पहले सप्ताह में ओंध प्रदेश फुटबॉल एसोसिएशन के अध्यक्ष गोपालकृष्ण कोसाराजू ने प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) को पत्र

लिखकर एआईएफएफ में कथित अनियमितताओं को विस्तृत जांच के लिए खेल विभाग को निर्देश देने की मांग की थी। जबकि खेल विभाग ने इस मामले को बंद कर दिया है, कोसाराजू ने अब दिल्ली उच्च न्यायालय में एक रिट याचिका दायर कर इस फैसले को चुनौती दी है, इसे गलत और आकस्मिक करार दिया है। यह पुष्टि जाने पर कि क्या एआईएफएफ के खिलाफ पीएमओ को कोसाराजू का पत्र कोर कमेटी के गठन के कारणों में से एक हो सकता है, बाईचुंग ने कहा: मुझे लगता है कि उन्होंने (कोसाराजू) एक बहुत ही वैध पत्र लिखा है। वह 2027 एएफसी एशिया कप पुरुषों की फुटबॉल चैंपियनशिप के लिए बोली लगाने से भारत की वापसी के बारे में बहुत स्पष्ट थे। कोई अध्यक्ष या महासचिव इस तरह का निर्णय कैसे ले सकता है एशिया कप भारत में किसी भी फुटबॉल खिलाड़ी के लिए सबसे बड़ा दूरतमंत है। विश्व कप सबसे बड़ा है, और दूसरा एशिया कप है। यहां तक कि ओलंपिक भी उतना बड़ा नहीं है क्योंकि इसमें पेशेवर फुटबॉल खिलाड़ी शामिल नहीं होते हैं। पहले के प्रबंधन ने बोली लगाई थी, लेकिन यह नया प्रबंधन आया और इसे वापस ले लिया और इसे सऊदी अरब के लिए छोड़ दिया। उल्लेखनीय है कि, पीएमओ को लिखे अपने पत्र में, कोसाराजू ने कहा था कि बोली से भारत की वापसी से संदेह पैदा होता है कि

अध्यक्ष और महासचिव ने एएफसी एशिया कप की मेजबानी में उन्हें लाभ पहुंचाने के लिए सऊदी अरब फुटबॉल महासंघ के साथ सांठगांठ की। बाईचुंग ने आगे कहा, भारत के बोली लगाने से हटने के तुरंत बाद, सऊदी अरब ने रियाद में संतोष ट्रॉफी के नॉकआउट की मेजबानी की, जो व्यर्थ रहा है। सितसिपास ने खुलासा किया कि उन्होंने 2019 में पेरिस मास्टर्स क्वार्टर फाइनल में

नोवाक जोकोविच से 1-6, 2-6 से हार के दौरान भी ऐसी ही गलती की थी। 24-वर्षीय सितसिपास ने कहा, मैंने एक साल पहले बर्सा में नोवाक से खेलने से पहले गलती की थी, और मेरे पास ठीक वैसा ही स्कोर था जैसा मैंने उन पहले दो

उन्होंने कहा, मैं कार्लोस से कुछ भी नहीं लेना चाहता। वह अच्छा खेलते हैं। वह जीतने और सब कुछ पाने के हकदार हैं। चलो इसके बारे में बात न करें। मैं वास्तव में इसके बारे में चिंतन हूँ, कि इसका मुझ पर इतना प्रभाव पड़ा।

भारतीय रसोई में खाने का जायका बढ़ाने वाले कढ़ी पते कितने गुणकारी हैं यह बात आज कल के आधुनिक युग में लोगो को पता नहीं है। बाल काले रखने से लेकर मोटापा कम करना तथा पेट के रोगो से निजात पाने तक कढ़ी पते का उपयोग किया जा सकता है। कढ़ी पता आयुर्वेद की एक ऐसी दवा है, जिसके उपयोग से व्यक्ति

रोग मुक्त हो जाता है।
 ■ काले मजबूत बालो के लिए नारियल के तेल में कढ़ी पते को उबाल कर ठंडा होने पर इस्तेमाल करें।
 ■ उल्टी और अपच में कढ़ी पते को नींबू के रस में चीनी के साथ लेना फायदेमंद होता है।
 ■ कढ़ी पते के नियमित इस्तेमाल से आँखों की रोशनी अच्छी

रहती है।
 ■ अगर आपके बाल अचानक से सफेद हो रहे हैं या फिर झड़ रहे हैं तो आप कढ़ी पते का सेवन करें या फिर उसका पाउडर बनाकर नियमित रूप से ले।
 ■ अगर आपको किडनी की तकलीफ है, तो कढ़ी पते से मिल सकती है आपको राहत।
 ■ बवासीर की

तकलीफ काम करने के लिए कढ़ी पित्तियों को शहद के साथ लेने से आराम मिलेगा।
 ■ अगर आप वजन कम करने की सोच रहे हैं तो रोज खाली पेट कुछ कढ़ी पते चबाएँ और खुद को फिट बनायें।
 ■ दस्त और पेशिश से निजात पाने के लिए कढ़ी पित्तियों को शहद के साथ लेने से आराम मिलेगा।

कुंदर खाओगे तो लाल हो जाओगे

कुंदर में पर्याप्त मात्र में आयरन, विटामिन और मिनरल होते हैं जो खून को बढ़ाने और उसे साफ करनेका काम भी करते हैं। इसमें पाए जाने वाले एटीऑक्सीडेंट तत्व शरीर को रोगों से लड़ने की क्षमता प्रदान करते हैं। यह प्राकृतिक शुगर का स्रोत होता है। इसमें सोडियम पोटेशियम, फॉस्फोरस, बलोनरीन, आयोडीन, आयरन और अन्य महत्वपूर्ण विटामिन पाए जाते हैं।



डांस थैरेपी नाचें और स्वस्थ रहें

नृत्य का अब मनोरंजन के प्राचीन माध्यम से चिकित्सा के अत्याधुनिक औजार तौर पर इस्तेमाल किया जाने लगा है। डांस थैरेपी की शुरुआत बेशक कुछ दशकों पुरानी हो चुकी है, लेकिन इधर के वर्षों में दुनिया भर में इसका इस्तेमाल तेजी से बढ़ा है और शारीरिक तथा मानसिक रोग निवारण में इसकी खुराक अचूक रही है।

जिम के साथ डांस वलास

देश में डांस थैरेपी की छोटे बड़े दर्जनों संस्थान संचालित हैं, जिसमें पंजीकरण कराने वालों में 23 से 45 वर्ष के युवावर्ग की हिस्सेदारी सबसे अधिक है। व्यायाम में डांस थैरेपी का दखल एरोबिक एक्सरसाइज के साथ बढ़ा, जिसमें केवल वेस्टर्न ध्वनि पर शरीर की अतिरिक्त कैलोरी बर्न करने को ही डांस थैरेपी का हिस्सा माना जाता था, लेकिन संगठित जिम संचालन की तरह ही अब डांस थैरेपी का क्षेत्र भी व्यापक हो गया है।

कुछ प्रचलित डांस विधियां

रूंबा मांसपेशियों का बेहतर सामंजस्य और मस्तिष्क की एकाग्रता के लिए रूंबा डांस कारगर माना गया है। साधारण व्यायाम से डांस थैरेपी की शुरुआत करने के बाद रूंबा की नियमित 20 से 30 मिनट की ट्रेनिंग फुर्तिला बनाती है, जिसे बैन बोन और कॉलर बोन के दक के लिए भी कारगर माना गया है।

स्वास्थ्य संस्थानों में भी बढ़ा दखल

जाने माने स्वास्थ्य संस्थानों के पुनर्निवास केन्द्र में डांस मुवमेंट थैरेपी डीपमटी का प्रयोग शुरू कर दिया गया है। इंडियन स्पानल इंजरी सेंटर में वैकल्पिक चिकित्सा विधि के तहत मरीजों की डांस वलास लगाई जाती है। फिजियोथैरेपिस्ट के सान्निध्य में मरीजों को शुरु में मामूली स्टेप सिखाए जाते हैं, जिसके बाद मांसपेशियों में खिंचाव व दोबारा मुवमेंट शुरू करने के लिए तीन से चार सप्ताह की वलास लगाई जाती है। पार्किंसन व सीएचडी बीमारियों के लिए डांस थैरेपी का चिकित्सीय प्रयोग शुरू किया जा चुका है।

जीवा: बोन डेन्सिटी को मजबूत करने के लिए जीवा की अहम भूमिका है। कार्डियोवस्कुलर समस्या को भी जीवा के जरिए ही दूर किया जाता है। देखा गया है कि श्वसन तंत्र संबंधी परेशानियां भी जीवा के नियमित अभ्यास से ठीक हो जाती हैं।

सांबा: कूल्हे की समस्याओं के निजात के लिए सांबा को किसी एक पार्टनर के साथ किया जाता है। पेलविस और पैरों की मांसपेशियों की दिक्कतों के लिए भी सांबा का प्रयोग बेहतर माना गया है।

पारको डेबल: पारको सिंगापुर का सबसे प्रसिद्ध डांस स्टेप है, जिसे रशियन संगीत के साथ किया जाता है। पारको के लिए वजन का नियंत्रित होना जरूरी है। कैलोरी बर्न करने और शरीर की टोनिंग के लिए पारको से बेहतर और कोई डांस स्टेप नहीं हो सकता।

सालसा: तनाव मुक्ति के लिए सालसा को सबसे सटीक माना गया है। डांस विशेषज्ञ की मानें तो 70 फीसदी युवा सालसा को तनाव दूर करने व आत्मविश्वास करने के लिए करते हैं, जिसके सफल परिणाम भी देखे गए हैं।

नोट इसके अलावा, वाल्डज, फॉक्स ट्रॉट, क्लिक, टैगो, वाइनरस और बैल्बो जैसे पश्चिमी नृत्य स्वरूप रहने की कुजी माने जाने लगे हैं।

कढ़ी पते के फायदे अनेक

रहती है।
 ■ अगर आपके बाल अचानक से सफेद हो रहे हैं या फिर झड़ रहे हैं तो आप कढ़ी पते का सेवन करें या फिर उसका पाउडर बनाकर नियमित रूप से ले।
 ■ अगर आपको किडनी की तकलीफ है, तो कढ़ी पते से मिल सकती है आपको राहत।
 ■ बवासीर की

तकलीफ काम करने के लिए कढ़ी पित्तियों को शहद के साथ लेने से आराम मिलेगा।
 ■ अगर आप वजन कम करने की सोच रहे हैं तो रोज खाली पेट कुछ कढ़ी पते चबाएँ और खुद को फिट बनायें।
 ■ दस्त और पेशिश से निजात पाने के लिए कढ़ी पित्तियों को शहद के साथ लेने से आराम मिलेगा।

कॉरपोरेट दुनिया हो या स्कूल कॉलेज की, पाटी या फिर रैप पर चलने की बात हो, पहनावे में हाई हील के जूते या सैंडल पहनना आम बात है। इन्हें पहन कर लगता है कि उनका आत्मविश्वास बढ़ गया है। चाल तो बदलेगी ही, लेकिन उन्हें पहन कर लटक-मटक के साथ चलने के लिए उन्हें क्या-क्या दांव पर लगाना पड़ता है, इसका अंदाजा पहले नहीं हो पाता। बाद में जब पैरों से लेकर रीढ़ की हड्डी तक में दर्द की शिकायत होने लगती है तो पता चलता है कि यह फैशन बड़ा ही दुखदायी है। चाल व शरीर का संतुलन बिगड़ जाता है।

आजकल की किशोरियों में यह खतरा अधिक माना जाता है क्योंकि वे छोटी आयु से ही ऊंची एड़ी के जूते पहनने लगती हैं। बड़े होने पर उन्हें कूल्हों का दर्द से लेकर कमर दर्द का जोखिम अधिक रहता है क्योंकि किशोरावस्था में उनकी मेरुदंड पर अधिक प्रभाव पड़ता है। इससे मोच की समस्या आम तौर पर हो जाती है क्योंकि एड़ी उठा कर चलना कोई आसान काम नहीं है। परिणामस्वरूप स्प्रेन ऑफ द फुट यानी पैर में मोच। यह एक आम समस्या है जो अक्सर हाई हील के कारण ही होती है। यह समस्या 20 से लेकर 35 वर्ष तक की युवतियों को ज्यादा होती है क्योंकि आजकल ज्यादातर युवतियां फैशन परस्त हैं और अपने आप को मॉडर्न दिखाने के लिए हाई हील पहनना उनका शौक बनता जा रहा है।

शुरुआत में तो इसका प्रभाव सिर्फ पैरों में सूजन के रूप में देखने को ही मिलता है, लेकिन साल दो साल बाद लगातार हील पहनने की वजह से पांव में लगातार दर्द, नसों में खिंचाव, पीठ दर्द और घुटनों में दर्द के रूप में दिक्कत सामने आती है। शुरुआत में बार-बार पांव में मोच आती है और गंभीर रूप से दर्द होता रहता है। इलाज के रूप में जो भी पहनते हैं, उसमें मैट्रोसॉल बार लगानी पड़ती है।

कदम-कदम पर परेशानी
 हाल के अनुसंधान से पता चलता है कि लंबे समय तक 'क्लिपर हील्स' पहनने वाली एक-तिहाई महिलाओं की पैरों की अंगुलियों के फूलने (हैमरटोज) से लेकर टांग की नसों में गोखरू (बनिवोन) जैसी दर्दनाक स्थायी बीमारियां होने लगती हैं। ऊंची एड़ी के जूतों से पूरे पैर में परेशानी शुरू हो जाती है। जब पैर का बड़ा अंगुठा ठीक से घूम नहीं सकता तो उसकी भरपाई करने के लिए घुटने को घुमाना पड़ता है। परिणामस्वरूप घुटने पर दबाव आने से स्थाई नुकसान हो सकता है। कुछ महिलाएं इस परेशानी से बचने के लिए अपनी चाल को बदल लेती हैं, लेकिन इससे कमर के निचले हिस्से में दर्द होने लगता है।

कौन करेगा पैरोकारी
 ऊंची एड़ी के जूतों की पैरवी में कुछ नहीं कहा जा सकता। औसत महिलाएं ऊंची एड़ी के जूते नहीं पहनती, यह उनके लिए बेशक अच्छी बात है। जब आपकी कमर का निचला हिस्सा आगे की ओर झुकता है तो इसका संतुलन बनाए रखने के लिए आपको मेरुदंड की स्थिति में बदलाव करना पड़ता है। इससे पीठ की नसों पर दबाव पड़ता है और इसकी वजह से स्थिति और बदतर हो जाती है। इसकी वजह से साइटिका नामक बीमारी हो सकती है जिसमें नसें खिंच जाती हैं और पैर के नीचे की ओर दर्द रहता है और वह सुन्न हो जाता है।



पांव की शोप का सत्यानाश

हील किसी भी रूप में पहनी जाए तो वह पैर के अगले हिस्से को चौड़ा कर देती है। हाई हील पहनना किसी भी स्त्री के लिए कितना खतरनाक हो सकता है, यह इस बात पर भी निर्भर करता है कि वो कितना चलती है और कितने समय तक खड़ी रहती है।

अस्पताल ले जाती हैं हाई हील

हाई हील पहनने की वजह से पैरों में सूजन भी रहने लगती है और सबसे ज्यादा असर तो रीढ़ की हड्डी पर पड़ता है। हील पहनने से उस पर प्रेशर पड़ता है जिस कारण हड्डी के एक हिस्से में लगातार दर्द रहने लगता है। एक सर्वे के अनुसार देश की बीस लाख औरतें किसी न किसी रूप में हाई हील के कारण दुर्घटनाग्रस्त अस्पताल पहुंचती हैं। चिकित्सकों के मुताबिक लंबे समय तक ऊंची एड़ी के जूते या सैंडल पहनना खतरों से खाली नहीं है। लंबे समय तक ऊंची एड़ी के जूते पहनने से होने वाले नुकसान को लेकर विशेषज्ञों की चिंता बढ़ रही है।



हाई हील से सेहत का कचूर

दिक्कत है, दर्द है, मगर फैशन है

दस में से एक महिला सप्ताह में कम-से-कम तीन दिन ऊंची एड़ी के जूते पहनती है और हाल के सर्वे से पता चला है कि उनमें से एक-तिहाई महिलाएं ऊंची एड़ी के जूतों की वजह से गिर जाती हैं। ऊंची एड़ी के जूते पहनने से आपकी एड़ी ऊंची हो जाती है और ऐसे जूते पहनते ही आपके शरीर का झुकाव आगे की ओर हो जाता है।



समस्या होने पर क्या करें

- हाई हील के बजाए फ्लॉपिपर के रूप में प्लेन चामल पहनें, जिसमें एक समान बोज़ पैर पर पड़े।
- अगर दर्द बढ़ने लगे तो डॉक्टर की सलाह लें।
- पैरो, घुटनों, रीढ़ की हड्डी में दर्द होने पर सिकाई करें। चाहे तो गर्म पानी में नमक डालकर सेक सकते हैं।
- डॉक्टर का सलाह से एक्सरसाइज भी की जा सकती है।
- ज्यादा दर्द रहने पर सलाह से ही दर्द निवारक दवाएं लें।

ऊंची एड़ी के जूतों से होने वाले जोखिम को कम करने के लिए थोड़ी-सी मोटी एड़ी वाले जूते पहनें क्योंकि इससे भार अधिक समानता से फैलेगा। अंदर नरम इंसोल्स पहनने से घुटनों पर पड़ने वाले प्रभाव में कमी आती है। ध्यान रखें आपके जूते की फिटिंग सही हो ताकि वह आगे की ओर न फिसलें। ऐसा होने से उंगलियों पर अधिक दबाव पड़ता है। नियमित रूप से ऊंची एड़ी के जूते पहनना स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छा नहीं होता। औपचारिक अवसरों पर थोड़ी देर के लिए उनका उपयोग करना ठीक हो सकता है। यदि आप कुछ घंटे के लिए ऊंची एड़ी के जूते पहनें तो कोई नुकसान नहीं होगा।

कुछ चर्चित केस

- विक्टोरिया बेकहम को भला कौन नहीं जानता। ऊंची एड़ी के जूते पहनना उनका ट्रेडमार्क है, लेकिन ऊंची एड़ी के जूते के प्रति उनके इस प्रेम ने उन्हें अस्पताल पहुंचा दिया था। छह घंटे की रिटलेटो पहनने की वजह उनके पैर में गोखरू हो गया और उनका चलना-फिरना मुश्किल हो गया। लेकिन उनका हाई हील प्रेम इतना जबरदस्त है कि वे इसे छोड़ना नहीं चाहती, बेशक इसकी वजह से उनके पैरों में दर्द रहता है। उनकी पहचान ही यही है।
- रैम्य पर चलते हुए एक मॉडल लड़खड़ा कर गिर गईं। हाई हिल की वजह से उसके पैर में सूजन और नस खिंचाव की समस्या हो गई है।
- कई लड़कियां ऑफिस जाने के लिए हाई हील को प्राथमिकता देती थीं। उन्हें क्या पता था कि हाई हील का यह शौक उन्हें रीढ़ की हड्डी की बीमारी दे देगा।

शैक्षणिक संस्था ने 10,500 बच्चों पर किया अध्ययन

बच्चों के दिमाग को कुंद बना रहे स्मार्टफोन-टैबलेट

अगर आपके बच्चों को स्मार्टफोन और टैबलेट की लत लग गई है तो सावधान रहिए। यह उनके दिमाग को कुंद बना सकते हैं। बच्चों में टैबलेट और स्मार्ट फोन की बढ़ती आदत से उनकी तकनीकी कुशलता को नुकसान पहुंच रहा है। इसका खुलासा एक शैक्षणिक संस्था की रिपोर्ट में हुआ है।

आईटी साक्षरता में आ रही गिरावट

ऑस्ट्रेलिया की शैक्षणिक संस्था ने अपनी रिपोर्ट में पाया कि साल 2011 से कुछ बच्चों में आईटी साक्षरता के मामले में महत्वपूर्ण गिरावट आई है। रिपोर्ट के मुताबिक बच्चों ने स्मार्टफोन और टैबलेट पर अलग तरह की कुशलता सीखी है जो कि कार्यस्थलों पर जरूरत पड़ने वाली तकनीकी कुशलता से अलग है। रिपोर्ट में कहा गया है कि ऑस्ट्रेलिया के स्कूलों में तकनीकी पढ़ाई में आए बदलाव कुछ हद तक इन

गिरावटों की वजह हो सकते हैं। इसके अलावा रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि उपकरणों में होने वाले फेरबदल भी इन बदलावों की वजह हो सकते हैं। ऑस्ट्रेलिया के राष्ट्रीय मूल्यांकन कार्यक्रम की यह रिपोर्ट बच्चों के दो समूहों पर आधारित है। एक समूह ऐसे बच्चों का था जो अभी-अभी प्राथमिक शिक्षा पूरा किया था और दूसरा समूह ऐसे बच्चों का था जो सैंक्रेडी स्कूल के चौथे साल में था। इस अध्ययन में 10,500 बच्चों ने हिस्सा लिया। रिपोर्ट में 2011 के डिजिटल साक्षरता से 2014 के आखिर में किए गए सर्वे की तुलना की गई है। रिपोर्ट के मुताबिक इन वर्षों के दौरान तकनीकी साक्षरता के मामले में बच्चों के दोनों समूहों में महत्वपूर्ण गिरावट देखी गई है।



हेल्दी रहना है तो सलाद में मिलाएं ये न्यूट्रिशस

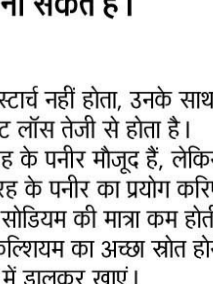
सलाद को खाने का सबसे ज्यादा न्यूट्रिशन वाला हिस्सा कहा जाता है, लेकिन कम ही लोग सलाद का और भी ज्यादा फायदा लेने के बारे में सोचते हैं। तो आइए आज हम उन न्यूट्रिशस के बारे में आपको बता रहे हैं जो आपके सलाद को और भी हेल्दी बना सकते हैं।

नट्स और सीड्स : नट्स और सीड्स में फाइबर और प्रोटीन भरपूर मात्रा में पाया जाता है। इसमें मोनो और पॉलीसैचुरेटेड फैट्स भी ज्यादा मात्रा में होते हैं, जो दिल के लिए बहुत फायदेमंद हैं। इन्हें सलाद में शामिल करने से कॉलेस्ट्रॉल का लेवल कम किया जा सकता है।

लैटयूस : लैटयूस सबसे अच्छा वेट लॉस फूड है। इसमें शुगर और सोडियम की मात्रा कम जबकि विटमिन-ए, के और सी भारी मात्रा में पाए जाते हैं। इसमें आयरन, कैल्शियम और प्रोटीन भी होते हैं। इसमें कैलरी कटेट काफी कम और फैट नाममात्र का होता है।

अनार : अनार का रोजाना इस्तेमाल दिल के लिए फायदेमंद होता है। अनार पोटेशियम, कैल्शियम, विटमिन-सी और विटमिन-ए का अच्छा स्रोत है। इसमें भरपूर मात्रा में एंटी-ऑक्सिडेंट्स भी पाए जाते हैं। प्रिस्टेट कैसर और ब्रेस्ट कैसर के खतरे की भी संभावना को दूर रखता है।

ऑलिव ऑयल : सलाद में ऑलिव ऑयल और विनेगर डालने से शरीर में शुगर का लेवल बैलेंस रहता है। रोज दो चम्मच यानी 23 ग्राम ऑलिव ऑयल के इस्तेमाल से दिल की बीमारियों का खतरा कम होता है। सलाद में ऑलिव ऑयल और सिरका डालकर खाने से नमक का सेवन कम हो जाता है।



रेसिपी

मिर्ची वड़ा



सामग्री
 मिर्ची में भरने के लिए 5 छोटे/ 250 ग्राम उबले आलू, नमक, पिंसी लाल मिर्च, गरम मसाला, चाट मसाला और नमक स्वादानुसार, 1 बड़ा चम्मच हरा धनिया कटा हुआ,
सामग्री - मिर्ची वड़ा तलने के लिए, 8/ 250 ग्राम मोटी मिर्च, 3/4 घाला बेसन, 1 बड़ा चम्मच हरा धनिया कटा हुआ, नमक, चाट मसाला और लाल मिर्च स्वादानुसार तेल, तलने के लिए

विधि

उबले आलू को छीलकर मसल लें। नमक, लाल मिर्च पाउडर, गरम मसाला, चाट मसाला और कटे हरा धनिया को मसले आलू में डालें और सभी सामग्री को आपस में अच्छी तरह मिलाएं। मिर्ची वड़ा की भरवाय अब तैयार है।
मिर्ची वड़ा तलने की विधि : मिर्च को धोकर पोछ लें। बीच से चीरा लगाकर मिर्च के अंदर से बीज निकाल दें। ध्यान रखें कि मिर्च दो टुकड़ों में कटने ना पाए। मिर्च का डडल लगा रहने दे, इससे मिर्च को पकड़ने में भी आसानी रहती है और यह परोसते समय सुंदर भी लगती है। चीरा लगी मिर्च को खोलें और इसके अंदर आलू का मिश्रण से भरें। इसी प्रकार सभी मिर्च में आलू का मिश्रण भर दें। एक कटोरे में बेसन, कटा हरा धनिया, नमक, लाल मिर्च पाउडर, और चाट मसाला लेकर थोड़ा-थोड़ा पानी डालते हुए बेसन का घोल तैयार करिए। यह घोल ना तो अधिक पतला हो और ना ही बहुत गाढ़ा। कड़ाही में तेल गरम करें, जब तेल गरम हो जाए तो आलू भरी मिर्च को बेसन के घोल में डुबोकर तेल में डालें। मध्यम-तेज आंच पर सुनहरा होने तक तलें। मिर्ची वड़ा को तलने में तकरीबन 7-8 मिनट का समय लगता है। तले हुए मिर्ची वड़ों को तेल निकालने के लिए किचन पेपर पर रखें। इसी तरह बाकी बची मिर्चों को भी बेसन में डुबोकर तलें। गरमागरम चटपटे और स्वादिष्ट मिर्ची वड़ों को टोमैटो केचप या धनिया की हरी चटनी के साथ परोसें।
टिप्पणी: मिर्ची वड़ा बनाने के लिए हमें बड़ी और मोटी हरी मिर्च चाहिए। चित्र में हैलपेनो (जलपेनो) मिर्च का प्रयोग किया है लेकिन उपलब्धता के अनुरां कोई दूसरी मोटी हरी मिर्च का प्रयोग भी किया जा सकता है।

मठरी



सामग्री
 25 ग्राम बेसन, 20 ग्राम मैदा, सूजी 15 ग्राम नमक स्वादानुसार, घुटकी भर अजवायन, दरदरी पीसी हुई 2-3 काली मिर्च, 15 ग्राम पी मोचन के लिए, गुंधने के लिए पानी और तलने के लिए तेल

विधि

बेसन और मैदे को मिला कर छान लें। इसमें अजवायन और काली मिर्च और नमक मिलाएं। मिश्रण को एकसार कर लें। इसमें मोचन डाल कर फिर से मिला लें। पानी के साथ सख्त गुंधें। इसके चार हिस्से कर लें और बेल लें। कांटे की मदद से छेद लें। धीमी आंच पर सुनहरी होने तक तलें। आचार के साथ परोसें।